वैश्विक संवाद

14.3

अनेक भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

पत्रिका

International Sociological Association

समाजशास्त्र पर बातचीत जेफ्री प्लीयर्स के साथ — ब्रेनो ब्रिंगेल

जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी की 100वीं वर्षगांठ — योशिमीची सातो, चिकाको मोरी, मासाको इशी–कुंट्ज, नाओकी सूडो

नये अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घोषणापत्र की ओर — ADELANTE – वैश्विक प्रक्रियाओं का संवाद, प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल, इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट ऑफ़ द साउथ, नाइजीरिया सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्पों के अभिसरण, रीकॉमन्स यूरोप

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य — लिडिया बेकर, क्रिस्टीन हेट्जकी

खुला आंदोलन — जॉन फेफर, हमजा हमोचेन, मार्टा रोमेरो–डेलगाडो, एंडी एरिक कैस्टिलो पैटन, गोमर बेटानकोर नुएज

खुला अनुभाग

> निर्भरता सिद्धांतों का पुनर्निर्माण

GD

अंक 14 / क्रमांक 3 / दिसम्बर 2024

https://globaldialogue.isa-sociology.org/

> सम्पादकीय

ग्लोबल डायलॉग का यह अंक मेलबर्न में XX ISA वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सोशियोलॉजी में निर्वाचित ISA के वर्तमान अध्यक्ष जेफ्री प्लीयर्स के साक्षात्कार से शुरू होता है। हमारे नियमित ''समाजशास्त्र पर बातचीत'' खंड में, प्लीयर्स सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन में अपने कुछ योगदान, वैश्विक समाजशास्त्र पर अपने विचार और समकालीन दुनिया और समाजशास्त्र की भूमिका के बारे में अपने दृष्टिकोण साझा करते हैं।

पहला विषयगत खंड जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी के 100 साल पूरे होने का जश्न मनाता है। इसके अध्यक्ष योशिमीची सातो और इसके निदेशक मंडल के कई सदस्य जापानी समाजशास्त्र के विभिन्न चरणों और जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी के संस्थागतकरण का पता लगाते हैं। वैश्विक संबंधों, जापानी समाजशास्त्र में हाल के रुझानों और अंतर्राष्ट्रीयकरण पर विशेष जोर दिया गया है।

दूसरा विषयगत खंड समकालीन राजनीतिक घोषणापत्रों के लिए समर्पित है। घोषणापत्र वे सामूहिक उपकरण हैं जिनका व्यापक रूप से उपयोग विचारों या कार्यक्रमों को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। उन्हें वर्तमान के मापदंड के रूप में समझा जा सकता है, जो अक्सर ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण मोड़ों के निदान, सामाजिक–राजनीतिक वास्तविकता की व्याख्या और विकल्पों की खोज को जोड़ते हैं। गहन सभ्यतागत अस्वस्थता और वैकल्पिक परियोजनाओं के संकट के समय में, यह खंड पाँच अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घोषणापत्रों को एक साथ लाता है जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रस्ताव और क्षितिज प्रदान करना चाहते हैं। कुछ अधिक वैश्विक हैं, जबकि अन्य अधिक क्षेत्रीय हैं, जो अफ्रीकी, लैटिन अमेरिकी और यूरोपीय मामलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सभी लोकप्रिय लामबंदी प्रक्रियाओं और प्रासंगिक अल्पकालिक और मध्यम अवधि के एजेंडे को पुनर्गठित करने के लिए संभावित मार्ग सुझाते हैं।

लिडिआ बेकर और क्रिस्टीन हेट्स्की द्वारा लिखित सैद्धांतिक लेख एक उत्तेजक निदान से शुरू होता है: हाल के दशकों में, सामाजिक सिद्धांत की विभिन्न शाखाओं (जैसे उत्तर–औपनिवेशिक और लिंग अध्ययन) ने बड़े पैमाने पर अंतर की श्रेणियों का पता लगाया है, लेकिन समानताओं की पहचान की उपेक्षा की है। बहुलता और नई ज्ञानमीमांसा पर हाल की बहसों के अनुरूप, लेखक समानता की एक संबंधपरक अवधारणा को आगे बढ़ाने के लिए अंतर्संबंध, अभिसरण, समानता और एक साथ होने पर विचार करते हुए एक शोध एजेंडा तैयार करने का प्रयास करते हैं।

''ओपन मूवमेंट्स'' खंड दो अत्यंत सामयिक मुद्दों को संबोधित करता है: एक ओर, दो सत्तावादी सरकारों (बांग्लादेश और वेनेजुएला में) के खिलाफ हाल ही में हुए विरोध प्रदर्शन और उनके संबंधित परिणाम, दूसरी ओर, फिलिस्तीन में चल रहे नरसंहार और वैश्विक जलवायु न्याय के मध्य संबंध। इस खंड में पिछले दो दशकों में स्पेन में सामाजिक आंदोलनों के परिवर्तनों का मूल्यांकन भी शामिल है। अंत में, ''ओपन मूवमेंट्स'' निर्भरता सिद्धांतों का बौद्धिक रूप से पुनर्निर्माण करने, उनकी जड़ों पर फिर से विचार करने और उनके योगदान को अद्यतन करने के महत्व पर चर्चा करता है।

हमें उम्मीद है कि आपको इस साल के तीनों अंक पसंद आए होंगे। 2025 में ग्लोबल डायलॉग अपनी पंद्रहवीं वर्षगांठ मनाएगा। यह सार्वजनिक और वैश्विक समाजशास्त्र की स्थिति का जायजा लेने और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में आधारित पहलों के मध्य संबंधों को मजबूत करने का एक अनूठा अवसर होगा। ■

ब्रेनो ब्रिंगल, *ग्लोबल डायलॉग* के संपादक

> वैश्विक संवाद **जी.डी. वेबसाइट** पर अनेक भाषाओं में देखा जा सकता है।

> प्रस्तुतियाँ <**globaldialogue@isa-sociology.org**> पर भेजी जा सकती हैं।

ISA International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रेनो ब्रिंगेल

सह–सम्पादक : विटोरिया गोंजालेज, कैरोलिना वेस्टेना

सहयोगी सम्पादक : क्रिस्टोफर इवांस

प्रबंधन संपादक : लोलाबुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे, ब्रगिट औलेनबैकर, क्लाउस डोरे

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(लेबनान)* साड़ी हनाफी, *(ट्यूनिशिया)* फातिमा रधौनी, सफौने ट्रैबेल्सी।

अर्जेन्टीना : मैगडालेना लेमस, जुआन परसिआ, दांते मार्चिसिओ।

बांग्लादेश: हबीबुल खोंड़कर, खैरुल चौधरी, बिजॉय कृष्णा बनिक, शेख मोहम्मद कैस, अब्दुर रशीद, मोहम्मद जहीरुल इस्लाम, रसेल हुसैन, मोहम्मद शाहिदुल इस्लाम, हेलाल उद्दीन, मसुदूर रहमान, यास्मीन सुल्ताना, रूमा परवीनू, राशेद हुसैन, एकरामुल कबीर राणा, फरहीन एक्टर भुइयां, खदीजा खातून, आरिफुर रहमान, मो. शाहीन अख्तर, सुरैया अख्तर, आलमगीर कबीर, तस्लीमा नसरीन।

ब्राजील : फेबरिसियो मासिएल, आंद्रेजा गैली, जोसे गुइराडो नेटो, जेसिका मज़िजनी मेंडिस, रिकार्डो नोब्रेगा।

फ्राँस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, मनीष यादव।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, एलहम शुशत्राजिदे, अली राघेब।

पोलैंड: अलेक्सांद्रा बिएरनका, अन्ना टर्नर, जोआना बेडनारेक, सेबेस्टियन सोस्नोव्स्की।

रोमानिया : रालुका पोपेस्कु, राइसा–गैब्रिएला जम्फिरेस्कु, बियांका ऐलेना मिहिला।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, डारिया खोलोडोवा।

ताईवान : वान–जू ली, यूं–हुआन चाउ, जी हाओ केर्क, चिएन–यिंग–चिएन, यी–शुहो हुआंग, मार्क यी–वेई लाई, यूं–जो लिन, ताओ–युंग लु, नी–ली।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

*'समाजशास्त्र पर बातचीत' अनुभाग में, ब्रेनो ब्रिंगल ने **ज्यॉफ्री प्लेयर्स** से वैश्विक समाजशास्त्र, समकालीन विश्व और समाजशास्त्र की भूमिका के बारे में बात की।*

*विषयगत खंड **"जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी की 100वीं वर्षगांठ"** जापानी समाजशास्त्र के संस्थागतकरण की शताब्दी का जश्न मनाता है। (फोटोः गिलर्मो गेविला, पिक्साबे पर)*

*विषयगत खंड **'नए अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घोषणापत्र की ओर'** पांच घोषणापत्रों को एक साथ लाता है जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रस्ताव और क्षितिज प्रस्तुत करना चाहते हैं।*

मुख पृष्ठ के लिए श्रेय : पिक्साबे

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

संपादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

बहुल संकटों के समय में वैश्विक समाजशास्त्र : जेफ्री प्लीयर्स के साथ एक साक्षात्कार
ब्रेनो ब्रिंगेल, ब्राजील/स्पेन द्वारा 5

> जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी की 100वीं वर्षगांठ

जापानी समाजशास्त्र और जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी : एक संक्षिप्त इतिहास
योशिमीची सातो, जापान द्वारा 8

जापानी समाजशास्त्र और इसके वैश्विक संबंध
चिकाको मोरी, जापान द्वारा 10

जापानी समाजशास्त्रीय अनुसंधान के वैश्विक प्रसार के लिए चुनौतियाँ
मासाको इशी–कुंट्ज़, जापान द्वारा 12

जापानी समाजशास्त्र में हालिया रुझान
नाओकी सूडो, जापान द्वारा 14

> नये अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घोषणापत्र की ओर

वैश्विक संकट और कट्टरपंथी विकल्पों के संबंध में घोषणापत्र
ADELANTE – **वैश्विक प्रक्रियाओं का संवाद द्वारा** 16

अंतर्राष्ट्रीयता या विलुप्ति
प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल द्वारा 18

बोगोटा घोषणा : पृथ्वी के साथ समझौते की ओर
इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट ऑफ़ द साउथ द्वारा 20

नाइजीरिया में सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्पों के लिए घोषणापत्र
नाइजीरिया सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्पों के अभिसरण द्वारा 25

यूरोप में एक नए लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीयवाद के लिए घोषणापत्र
रीकॉमन्स यूरोप द्वारा 30

> सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

भिन्नता से परे : बहुविविध दुनिया में समानता
लिडिया बेकर और क्रिस्टीन हेट्जकी, जर्मनी द्वारा 32

> खुला आंदोलन

वेनेजुएला और बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शन : तानाशाह कब हार मानेंगे?
जॉन फेफर, यूएसए द्वारा 35

वैश्विक जलवायु न्याय और फिलिस्तीनी मुक्ति
हमजा हमोचेन, नीदरलैंड्स द्वारा 38

स्पेन में सामाजिक आंदोलन : परिवर्तनों के दो दशक
मार्टा रोमेरो–डेलगाडो, एंडी एरिक कैस्टिलो पैटन, और गोमर बेटानकोर नुएज, स्पेन द्वारा 40

> खुला अनुभाग

निर्भरता सिद्धांतों का पुनर्निर्माण
आंद्रे मैग्नेली, फेलिप मैया, और पाउलो हेनरिक मार्टिस, ब्राजील द्वारा 42

“पूंजीवाद हमेशा से ही न चुकाई जाने वाली लागतों की व्यवस्था रही है। लागतों को व्यवस्थित रूप से बाह्यीकृत किया जाता है और कहीं और स्थानांतरित किया जाता है।”

हमजा हमोचेन

> बहुल संकटों के समय में वैश्विक समाजशास्त्र

आईएसए अध्यक्ष जेफ्री प्लीयर्स के साथ एक साक्षात्कार

जेफ्री प्लीयर्स बेल्जियम के कैथोलिक विश्वविद्यालय लौवेन में FNRS अनुसंधान निदेशक हैं। वे 2006 से अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ (ISA) में सक्रिय रूप से सम्बद्ध रहे हैं। उन्होंने 2014 से 2018 तक सामाजिक वर्गों और सामाजिक आंदोलनों (आरसी 47) पर आईएसए की अनुसंधान समिति की अध्यक्षता की और 2018 से 2023 तक आईएसए उपाध्यक्ष, शोध के रूप में कार्य किया। जुलाई 2023 को उन्हें 2023–27 के लिए ISA अध्यक्ष चुना गया। यहाँ **ब्रेनो ब्रिंगेल**, ब्राजील के रियो डी जेनेरो राज्य विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर, *ग्लोबल डायलॉग* के संपादक और प्रो. प्लेयर्स के नियमित सहयोगी, द्वारा उनका साक्षात्कार लिया गया है ।

श्रेय : अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ।

ब्रेनो ब्रिंगेल (बीबी): सामाजिक आंदोलन के विद्वान वैकल्पिक सक्रियता (अल्टर–एक्टिविज्म) और वैश्विक आंदोलनों से संबंधित आपके योगदान से परिचित हैं। यद्यपि आपके कार्य का एक बहुत ही प्रासंगिक भाग किसी विशेषीकृत अध्ययन क्षेत्र की सीमाओं से परे जाता है। वह है सामान्य समाजशास्त्र एवं सामाजिक आंदोलनों के मध्य संबधों जुड़ावों के बारे में पुनर्विचार करना। अपने अनुभवजन्य योगदानों के आधार पर, क्या आप हमारे पाठकों को इस परिप्रेक्ष्य के बारे में अधिक बता सकते हैं?

जेफ्री प्लेयर्स (जीपी) : समाज और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए सामाजिक आंदोलन एक आकर्षक विषय है। वे समाज के उत्पाद और निर्माता दोनों हैं। वे मूल्यों और साथ रहने के तरीकों में उभरते बदलावों को दर्शाते हैं, उदाहरण के लिए, नए संचार साधनों के अपने अभिनव उपयोग या वैयक्तिकरण की प्रक्रिया के साथ। वे समाज को बदलने का भी प्रयास करते हैं। वे हमें इसकी समस्याओं के प्रति सचेत करते हैं और समाज, दुनिया और जीवन को साथ देखने के हमारे नजरिए को बदलते हैं। यह प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी आंदोलनों के लिए सच है जिन्होंने प्रभाव प्राप्त किया है और कई देशों में अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को प्रसारित करने में सफल रहे हैं। जहाँ तक सामाजिक परिवर्तन की बात है, यह कभी भी उतना तेज या रैखिक नहीं होता जितना सामाजिक कार्यकर्ता– और कई समाजशास्त्री– चाहते हैं। मेरी नवीनतम पुस्तक, *चेंज इस नेवर लीनियरः सोशल मूवमेंट्स इन चौलेंजिंग टाइम्स* (स्पेनिश में CLASCO, अगस्त 2024) जो चिली में 2019 में होने वाले सामाजिक विद्रोह, महामारी के दौरान आंदोलन और एकजुटता और ब्राज़ील के प्रगतिशील एवं पारम्परिक धार्मिक आंदोलनों के विश्लेषणों पर आधारित है, का यह मुख्य तर्क है। समकालीन सामाजिक आंदोलनों और उनकी भूमिकाओं को समझने के लिए संकट और सामाजिक परिवर्तन के बीच तथा सामाजिक आंदोलन की कार्यवाही, राजनीतिक परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन के बीच एक सरल, रैखिक संबंध के भ्रम को त्यागना आवश्यक है। आंदोलन के उभरने के तुरंत बाद समाज में आमूलचूल परिवर्तन की घोषणा करने वालों का उत्साह और उन लोगों का निराशावाद जो विस्फोटों को अल्पसंख्यक लोगों के सामूहिक भ्रम तक सीमित कर देते हैं, दोनों को ही स्पष्ट किया जाना चाहिए। सामाजिक परिवर्तन एक जटिल मार्ग है जो हजारों नागरिकों के साथ क्रोध, सपने और एकजुटता को साझा करने के उत्साह और कुछ चुनावी प्रक्रियाओं की निराशाओं से होकर गुजरता है जो शायद ही कभी सामाजिक आंदोलनों द्वारा संचालित सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की गहराई को दर्शाते हैं।

> >

बी.बी. : आप अक्सर सैद्धांतिक रूप से वैश्विक समाजशास्त्र की चर्चा ही नहीं करते बल्कि इसका अभ्यास और निर्माण भी करते हैं। वैकल्पिक वैश्वीकरण आंदोलन पर आपके प्रारंभिक शोध से लेकर सबसे हालिया काम तक, आपके प्रक्षेपवक्र में वैश्विक परिप्रेक्ष्य कैसे दिखाई देता है?

जीपी : मैं वैश्विक शहरों से दूर एक गाँव में पला–बढ़ा हूँ। मेरे माता–पिता को माध्यमिक विद्यालय पूरा करने का मौका नहीं मिला, और हम कम यात्रा करते थे। हालाँकि, वह गाँव बेल्जियम, नीदरलैंड और जर्मनी के बीच की सीमा पर एक अंतर–सांस्कृतिक मेल्टिंग पॉट है। स्थानीय जड़ें और स्थानीय बोली अन्य संस्कृतियों, भाषाओं, परंपराओं और इतिहास के प्रति खुलेपन के साथ मिलती है।

जब मैं पेरिस एलेन टूरेन द्वारा स्थापित और मिशेल विविओर्का द्वारा संचालित केंद्र में गया तो मेरा नया जीवन शुरू हुआ। यहाँ एक प्रेरक अंतरराष्ट्रीय वातावरण था, जिसमें सभी महाद्वीपों और लैटिन अमेरिका से कई शोधकर्ता थे। मैंने अपनी एमए और डॉक्टरेट की थीसिस वैश्विक न्याय आंदोलन, या 'वैकल्पिक वैश्वीकरण' को समर्पित की। मैंने पोर्टो एलेग्रे, मुंबई, बामको और नैरोबी में पहले सात विश्व सामाजिक फोरम में भाग लिया। उन्होंने दुनिया भर से 180,000 कार्यकर्ताओं को एकत्रित किया। जब से मैंने लैटिन अमेरिका और उसके सामाजिक आंदोलनों की खोज की है, वहां के मेरे सहयोगियों और दोस्तों के साथ संवाद मौलिक बना हुआ है। मैंने इस आंदोलन के कुछ हिस्सों द्वारा क्षैतिज और अधिक लोकतांत्रिक रूप से संगठित करने के प्रयासों से बहुत कुछ सीखा। मैंने मैक्सिको का दौरा किया और जपाटिस्ता स्वदेशी आंदोलन से बहुत कुछ सीखा जो निजी और पेशेवर स्तर पर और आईएसए में मेरी भूमिका के लिए मेरी मुख्य प्रेरणा है । पीएचडी करने के पश्चात मैंने बैंगलोर, भारत में कुछ शोध किया और न्यू यॉर्क विश्विद्यालय से पोस्ट–डॉक्टरेट की। मैंने यूरोप में यात्राएं और शोध भी जारी रखा, विशेष रूप से पर्यावरणवादी आंदोलनों और 2011 के बाद के सामाजिक आंदोलनों का अध्ययन किया।

बी.बी. : ऐसा लगता है कि 'दूसरी दुनिया संभव है' की कल्पना की जगह एक अन्य कल्पना ने ले ली है, 'दुनिया का दूसरा अंत संभव है'। दुनिया भर में एक नया डायस्टोपियन 'कोई विकल्प नहीं है' उभर रहा है। हम बहुत बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जैसे सभ्यतागत बहुसंकट, लोकतंत्र का ह्रास, अधिनायकवाद का सामान्यीकरण, सैन्यवाद और युद्ध की संस्कृति का गहरा होना, जलवायु आपातकाल और ग्रहीय सीमाओं पर काबू पाना। आप इस परिदृश्य का आकलन कैसे करते हैं?

जीपी : समाजशास्त्रियों की हर पीढ़ी मानती है कि वे इतिहास के एक महत्वपूर्ण क्षण में रह रहे हैं, एक अभूतपूर्व संकट जो मानवता के भविष्य को निर्धारित करेगा। हम कोई अपवाद नहीं हैं। हम अपने समय को परस्पर जुड़े संकटों की उलझन के रूप में अनुभव करते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं, एक 'बहुसंकट', जिसे 'सभ्यता संकट' के रूप में भी वर्णित किया गेया, जैसा कि लैटिन अमेरिकी विद्वान और आपके द्वारा संपादित हाल की पुस्तक से पता चलता है। आधुनिकता को संकटों के एक क्रम के रूप में अनुभव किया गया है। हालाँकि, इस बार, यह केवल मानवता का भविष्य खतरें में नहीं है, बल्कि हमारा ग्रह भी है। 'एक सीमित ग्रह पर एक साथ कैसे रहें' इस सदी का मुख्य मुद्दा है। समाजशास्त्र को इसे हल करने में मदद करनी चाहिए, यही वजह है कि हमारे शोध उपाध्यक्ष, एलिसन लोकोंटो ने 2025 में रबात में होने वाले फोरम के लिए 'मानव युग में न्याय को जानना' विषय चुना है, और मैंने दक्षिण कोरिया के ग्वांगजू में 2028 के विश्व कांग्रेस के लिए 'एक सीमित ग्रह पर वैश्विक समाजशास्त्र' का प्रस्ताव रखा है।

जलवायु परिवर्तन और प्रकृति का विनाश तेजी से बढ़ा है, लेकिन यह हमारे समय में शुरू नहीं हुआ। वह विश्व को देखने और समाज एवं जीवन को नियोजित करने के तरीकों, जिन्होंने मानवता के एक बड़े भाग के जीवन स्तर को अप्रत्याशित गति से और अद्वितीय स्तर पर सुधारा है, में निहित हैं। हालाँकि, आधुनिकता की इस सफलता ने प्रकृति को नष्ट कर दिया है। बढ़ती जलवायु आपात स्थिति के बावजूद, हम इसे तीव्र गति से नष्ट करते रहते हैं। हम वापिस न लौट सकने वाले बिंदु और देहरियों, जिससे आने वाली सदियों तक प्राकृतिक चक्रों का संतुलन बिगड़ रहा है, को पार करते हुए एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी का सामना कर रहे हैं। और फिर भी, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, हम ऐसे जीना जारी रखते हैं जैसे कि ऐसा मामला नहीं था। तत्काल आवश्यकता वाले ऐसे बदलाव के लिए बहुत कम चालक हैं।

वस्तुतः, कई क्षेत्रों में, अधिनायकवाद, नस्लवाद, युद्ध और दुनिया के ध्रुवीकृत दृष्टिकोण से प्रेरित प्रतिक्रियावादी कार्यकर्त्ताओं के उभार के साथ और यहां तक कि पारिस्थितिकी और डरपोक उपायों के खिलाफ भी, हम विपरीत दिशा में जाते प्रतीत हो रहे हैं। अधिनायकवाद का उभार भी सामाजिक विज्ञानों को खतरे में डालता है। मैं अकादमिक स्वतंत्रता के खिलाफ खतरों के बारे में गहराई से चिंतित हूं। हर सप्ताह, हमें ऐसे समाजशास्त्रियों के बारे में सूचना मिलती है जिन्हें उनके शोध, राष्ट्रवादी नेता की आलोचना या गाजा में युद्ध को उसके ऐतिहासिक और भू–राजनीतिक संदर्भ में स्थापित करने के कारण धमकी दी गई, निलंबित किया गया या दबाया गया। स्वयं को बेहतर ढंग से संगठित करना, अपने सहयोगियों का समर्थन करना और सरकारों से अनुरोध करना जरूरी है कि वे अकादमिक स्वतंत्रता की रक्षा करें (और कई मामलों में हमला करना बंद करें) और समाजशास्त्रियों और वैज्ञानिकों को निशाना बनाना बंद करें।

अकादमिक स्वतंत्रता के लिए खतरा अकादमिक जगत के कुछ लोगों से भी आता है। हम मांग करते हैं कि सामाजिक विज्ञान में सक्रिय हर विश्वविद्यालय, संस्था और संस्थान उन सहकर्मियों के साथ भेदभाव करना बंद करें जो विशिष्ट विषयों पर या कुछ आबादी के साथ शोध करते हैं या जो युद्ध, हिंसा और दमन के प्रति अपना विरोध व्यक्त करते हैं।

बी.बी. : यह एक निराशाजनक परिदृश्य है।

जीपी : हां, लेकिन यह तस्वीर का केवल एक हिस्सा है। साथ ही, दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में, हम आशाजनक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक नवाचारों को देख रहे हैं : 'जलवायु पीढ़ी' की लामबंदी और ठोस कार्रवाई, और, लंबे समय के पैमाने पर, एक वैश्विक चेतना का उदय और दुनिया, खुद, और प्रकृति– जिसका हम एक हिस्सा हैं, के साथ एक अलग रिश्ता।

हम जटिल समय में रह रहे हैं, एक ऐसी दुनिया में जो कई स्तरों पर आपस में अधिक निकटता से जुड़ी हुई है, खास तौर पर डिजिटल दुनिया, वैश्विक आर्थिक और वित्तीय प्रणाली और कुछ हजार सुपर–अमीरों के प्रभाव के माध्यम से, जो धन के बढ़ते हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हैं। बढ़ती हुई परस्पर निर्भरता प्रदूषण, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और प्रकृति के विनाश के विश्वव्यापी प्रभाव से भी उत्पन्न होती है।

>>

बी.बी. : इन चुनौतियों, उभरते स्याह परिदृश्य और इस बहुसंकटों के समक्ष आप समाजशास्त्र की भूमिका को कैसे देखते हैं ?

जीपी : पिछले दशकों में दुनिया के बदलावों और नए आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के उदय ने समाजशास्त्र को गहराई से हिला दिया है। इस विषय की स्थापना औद्योगिक आधुनिकता के केंद्र में की गई थी जब प्रकृति और आर्थिक विकास असीम लग रहे थे, राष्ट्र–राज्यों को समेकित किया गया था, और श्वेत पश्चिमी पुरुषों को विश्व इतिहास का नेतृत्व करने वाला माना जाता था। वे निश्चित रूप से समाजशास्त्र का नेतृत्व कर रहे थे और दुनिया के बारे में उनके सोचने का तरीका हमारी कई अवधारणाओं और सिद्धांतों में निहित है।

क्या इसका मतलब यह है कि समाजशास्त्र संकट में है? 1970 के दशक से समाजशास्त्र के संकट को अंतहीन रूप से दोहराया गया है। विभिन्न देशों से समाजशास्त्रियों को पढ़ते और मिलते हुए, मुझे इसका विपरीत अहसास हुआ है: मेरा मानना है कि हम समाजशास्त्र के लिए असाधारण समय में रह रहे हैं। शताब्दी के प्रारम्भ से, हमारे विषय में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं जिन्होंने इसे पुनर्जीवित किया है। मुख्य परवर्तन आलोचनत्मक दृष्टिकोण, जो विषय की सीमा या उसके बाहर से उभरे हैं, अधिकतर उनके विरुद्ध आलोचना के रवैये से, के प्रति विषय के अधिक खुलेपन के कारण आये हैं। पिछले दशकों में, समाजशास्त्र इन आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के प्रति अधिक खुला हो गया है; इसने विभिन्न विचारों, अध्ययनों, भौगोलिक क्षेत्रों और सिद्धांतों के साथ संवाद के लिए अधिक स्थान खोला है, जिसके परिणामस्वरूप आलोचनात्मक लेकिन उपयोगी संवाद और दुनिया और समाजशास्त्र के बारे में सोचने के नए तरीके सामने आए हैं। नारीवादी और अंतर्संबंधी दृष्टिकोणों, पोस्ट और विऔपनिवेषिक अध्ययनों और दक्षिणी परिपेक्ष्यों एवं ज्ञानमीमांसाओं को धन्यवाद कि नए संवाद खुले हैं और नई आवाजों को सुना जा रहा है। इन संवादों का एक परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा है। हमने अपने विषय के इतिहास, इसके सिद्धांतों और इसके कुछ मुख्य पूर्वाग्रहों पर पुनः विचार किया है।

अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हालाँकि, हमें इक्कीसवीं सदी की पहली तिमाही में जो हासिल हुआ है, उसका लाभ उठाना चाहिए। जब मैं छात्र था, तो समाजशास्त्र का इतिहास कुछ पश्चिमी विद्वानों के योगदान में समाहित था। आज वैश्विक दक्षिण के योगदानों को संदर्भित किये बिना अन्तर्सम्बन्धी परिपेक्ष्य को या वर्तमान समकालीन सिद्धांतों को पढ़ाना संभव नहीं है। अन्य शोधकर्त्ताओं के योगदानों और दृष्टिकोणों को स्वीकार करने से हमारे विषय पर पुनर्विचार करने, अलग–अलग सवाल पूछने और सबसे बढ़कर, हमारी दुनिया, इसकी चुनौतियों और विकल्पों की बेहतर समझ रखने के लिए अलग–अलग दरवाजे खुलते हैं जो इसे अधिक निष्पक्ष और अधिक टिकाऊ बना सकते हैं। आज, डब्लू.इ.बी. डु बोइस को एक सत्र समर्पित किए बिना, लिंग को एकीकृत किये बिना असमानताओं पर चर्चा असंभव है। जैसा कि मैंने *ग्लोबल डायलॉग (13.3)* के एक पिछले अंक में उल्लेख किया था, यह पिछले और वर्तमान पश्चिमी समाजशास्त्रियों द्वारा आवश्यक योगदान को मान्यता देता है: "वैश्विक समाजशास्त्र न तो पश्चिमी विश्वविद्यालयों और सिद्धांतों में निहित रह सकता है जो खुद को सार्वभौमिक के रूप में प्रस्तुत करते हैं और न ही इस पश्चिमी समाजशास्त्र की आलोचना तक सीमित रह सकता है।"

बी.बी. : आज हमें किन प्रमुख मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है ? क्या हम ऐसा करने की अच्छी स्थिति में हैं?

जीपी : एक ओर अधिनायकवाद और प्रतिक्रियावादी तत्वों का उदय, तथा दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी पतन, हमें अपनी दुनिया (और अपने अनुशासन) के बारे में अलग ढंग से सोचने और अपने समय की चुनौतियों से निपटने के लिए व्यावहारिक तरीकों में कुशलतापूर्वक योगदान करने की आवश्यकता है। यह कार्य बहुत बड़ा है। यद्यपि, इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए हमारे पास नए संसाधन भी हैं।

डिजिटल दुनिया और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय नई चुनौतियाँ लेकर आया है। यह हमें विशाल मात्रा में डेटा और अधिक शक्तिशाली विश्लेषणात्मक उपकरणों तक पहुँच प्रदान करता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण संसाधन दुनिया के सभी क्षेत्रों के शोधकर्ताओं द्वारा ज्ञान, विश्लेषण और योगदान का बेहतर एकीकरण है। कई मायनों में, समाजशास्त्र सदी की शुरुआत की तुलना में अधिक खुला, रचनात्मक और ठोस है। हम दुनिया को समझने और अपने समय की चुनौतियों का सामना करने में योगदान देने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं। इक्कीसवीं सदी का पहला भाग समाजशास्त्री होने के लिए एक रोमांचक समय है।

बी.बी. : ग्लोबल डायलॉग इन रुकावटों को दूर करने में किस प्रकार योगदान दे सकता है ?

जीपी : ग्लोबल डायलॉग एक अनूठा मंच है क्योंकि यह हर महाद्वीप को प्रभावित करने वाले जटिल मुद्दों को स्थानीय वास्तविकताओं और कठोर विश्लेषण के गहन ज्ञान के आधार पर छोटे लेखों में समझाने की अनुमति देता है। लेकिन यह शोधकर्ताओं, छात्रों और नागरिकों के लिए सुलभ है। यह वह वैश्विक और सार्वजनिक समाजशास्त्र है जिसे हमने माइकल बुरावॉय द्वारा पत्रिका की स्थापना के बाद से बढ़ावा दिया है।

ग्लोबल डायलॉग का हर अंक हमें दिखाता है कि "वैश्विक" कोई ऐसा पैमाना नहीं है जो स्थानीय वास्तविकताओं से ऊपर हो (यह "पद्धतिगत वैश्विकता" होगी)। इसके विपरीत, वैश्विक समाजशास्त्र दुनिया के सभी क्षेत्रों के समाजशास्त्रियों के योगदान पर आधारित है। ■

> जापानी समाजशास्त्र और जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी : एक संक्षिप्त इतिहास

योशिमीची सातो, क्योटो यूनिवर्सिटी ऑफ एडवांस्ड साइंस, जापान और जापानी समाजशास्त्रीय सोसायटी के अध्यक्ष द्वारा

श्रेय : जापान समाजशास्त्र सोसायटी।

मैं अपने दृष्टिकोण से जापानी समाजशास्त्र और जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी (जेएसएस) के इतिहास का संक्षेप में वर्णन करूंगा, क्योंकि सौ से अधिक वर्षों के उनके इतिहास के सभी विवरणों को कवर करना मेरी क्षमता से परे है।

> जापानी समाज में सुधार लाने के उद्देश्य से संस्थाएँ

जेएसएस की स्थापना 1924 में हुई थी, लेकिन जापानी समाजशास्त्रियों ने उससे पहले ही समाजशास्त्रीय शोध करना शुरू कर दिया था। जिस तरह ऑगस्टे कॉम्टे ने फ्रांसीसी क्रांति के बाद फ्रांसीसी समाज के पुनर्निर्माण की कल्पना की थी, उसी तरह जापानी समाजशास्त्रियों ने कल्पना की थी कि मीजी बहाली के बाद जापानी समाज कैसा होगा और उसे किस तरह से संरचित किया जाना चाहिए। वे हर्बर्ट स्पेंसर के विचारों पर बहुत अधिक निर्भर थे, लेकिन जैसा कि अकीमोटो ने सुझाया उन्होंने अपनी राजनीतिक पोजीशन के आधार पर इसकी दो अलग–अलग तरीकों से व्याख्या की – रूढ़िवाद और उदारवाद।

जापानी समाजशास्त्र ने जापानी समाज की सामाजिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने और उन्हें हल करने का प्रयास किया है। उदाहरण के रूप में, युद्ध–पूर्व जापानी समाज में प्रमुख सामाजिक मुद्दे श्रम मुद्दे, गरीबी और राष्ट्रवाद थे; और जापानी समाजशास्त्रियों ने जापानी समाज को बेहतर बनाने की उम्मीद में उनका विस्तार से अध्ययन किया। हालाँकि युद्ध–पूर्व जापानी समाजशास्त्र यूरोपीय समाजशास्त्र से काफी प्रभावित था, लेकिन यासुमा ताकाडा, जापानी समाजशास्त्र के इतिहास में एक दिग्गज, ने समाजशास्त्र के निर्माण खंड के रूप में सामाजिक बंधनों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक मूल सिद्धांत स्थापित किया। उनका इरादा समाजशास्त्र को सामाजिक विज्ञान में एक स्वतंत्र क्षेत्र बनाना था। उनके सिद्धांत की मौलिकता को समकालीन जापानी समाजशास्त्रियों ने बहुत महत्व दिया और उनका काम युद्ध–पूर्व जापानी समाजशास्त्र में एक मील का पत्थर बन गया।

> द्वितीय विश्व युद्ध के बाद: आधुनिकीकरण और मार्क्सवादी सिद्धांत

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, जापानी समाजशास्त्रियों को यासुमा ताकाडा, तीज़ो टोडा और ईटारो सुजुकी जैसे महान युद्ध–पूर्व समाजशास्त्रियों से सैद्धांतिक विरासत मिली। इस बीच, टॉमिनागा की पुस्तक सोशियोलॉजी ऑफ़ पोस्टवार जापान के अनुसार, उन्होंने परिवार के समाजशास्त्र, ग्रामीण समाजशास्त्र, शहरी समाजशास्त्र और औद्योगिक समाजशास्त्र जैसे विशेष क्षेत्रों में समाजशास्त्रीय जांच की । इससे जापानी समाजशास्त्र का विखंडन हुआ। इस स्थिति के जवाब में, दो सैद्धांतिक धाराएँ उभरीं: आधुनिकीकरण सिद्धांत और मार्क्सवादी सिद्धांत।

आधुनिकीकरण सिद्धांत टैल्कॉट पार्सन्स और उनके सहयोगियों द्वारा प्रस्तावित संरचनात्मक प्रकार्यात्मकता से प्रभावित था। यह

>>

समाज के विभिन्न वर्गों पर आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के प्रभावों पर केंद्रित था। मार्क्सवादी सिद्धांत ने भी आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया, लेकिन इसका विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण आधुनिकीकरण सिद्धांत से अलग था: यह मुख्य रूप से वर्ग संरचना के प्रभावों पर केंद्रित था। यह उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों के बीच विरोधाभास के मार्क्स के सिद्धांत से आया था।

आधुनिकीकरण सिद्धांत उस समय लोकप्रिय हुआ जब जापानी समाज मजबूत आर्थिक विकास (1955–1973) का आनंद ले रहा था; इसने उस समय जापानी समाज की वास्तविकता को दर्शाया और आशावादी रूप से इसके उज्ज्वल भविष्य की भविष्यवाणी की। हालाँकि, इसने कई कारणों से अपनी लोकप्रियता खो दी: यह आर्थिक बुलबुले के फटने के बाद जापान में सामाजिक और आर्थिक ठहराव की व्याख्या नहीं कर सका; दुनिया के सभी देशों ने इसके द्वारा भविष्यवाणी की गई प्रक्षेपवक्र का अनुसरण नहीं किया। मार्क्सवादी सिद्धांत ने कई जापानी समाजशास्त्रियों को भी आकर्षित किया। उन्होंने समाज में विभिन्न समूहों के बीच संघर्षों के कारण होने वाली सामाजिक समस्याओं का अवलोकन किया, जैसे कि पूंजीपतियों/नियोक्ताओं और श्रमिकों/कर्मचारियों के मध्य और प्रदूषण के मामले में बड़ी फर्मों और स्थानीय निवासियों के मध्य। हालाँकि, इसका प्रभाव विभिन्न कारणों से कमजोर भी हुआ, जैसे कि न्यू लेफ्ट का उदय और सोवियत संघ और पूर्वी ब्लॉक का पतन।

> नई दिशाएं, अमेरिकी प्रभाव और एसएसएम सर्वेक्षण

आधुनिकीकरण और मार्क्सवादी सिद्धांतों के कमज़ोर होने के बाद, तथाकथित बहु–प्रतिमान युग की शुरुआत हुई। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सिद्धांतों का उदय हुआ: जैसे प्रघटनात्मक समाजशास्त्र और सूचना समाज, वैश्वीकरण और कल्याणकारी राज्यों पर केंद्रित समाजशास्त्र।

इस बात पर ज़ोर दिया जाना चाहिए कि युद्ध के बाद के जापानी समाजशास्त्र पर अमेरिकी समाजशास्त्र का बहुत प्रभाव था। हालाँकि यूरोपीय समाजशास्त्र भी प्रभावशाली रहा था, लेकिन अमेरिकी शैली के अनुभवजन्य अध्ययन – गुणात्मक और मात्रात्मक – ने कई जापानी समाजशास्त्रियों को आकर्षित किया। प्रमुख मात्रात्मक अध्ययनों में से एक 'सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक गतिशीलता का राष्ट्रीय सर्वेक्षण' है, जिसे आमतौर पर एसएसएम सर्वेक्षण के रूप में जाना जाता है। पहला एसएसएम सर्वेक्षण 1955 में जेएसएस द्वारा आईएसए अंतर्राष्ट्रीय परियोजना के सहयोग से आयोजित किया गया था। तब से, यह हर दशक में आयोजित किया गया है, अगला 2025 में आयोजित किया जाएगा। एसएसएम सर्वेक्षण के सभी डेटासेट टोक्यो विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संस्थान से सामाजिक विज्ञान जापान डेटा संग्रह में अनुरोध पर उपलब्ध हैं।

> राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रक्षेप पथ

जेएसएस जापानी समाजशास्त्र के इस विकास के साथ–साथ विकसित हुआ है। 1924 में अपनी स्थापना के बाद से इसने अपना आधिकारिक जर्नल प्रकाशित किया है। जर्नल का नाम कई बार बदला है; इसका वर्तमान नाम *जापानीज सोशियोलॉजिकल रिव्यु* है, जिसका पहला खंड 1950 में प्रकाशित हुआ था। *जापानीज सोशियोलॉजिकल रिव्यु* के सभी लेख ऑनलाइन उपलब्ध हैं। जर्नल के प्रकाशन के अलावा, सोसायटी ने 1925 से वार्षिक बैठकें आयोजित की हैं। 97वीं वार्षिक बैठक नवंबर 2024 में क्योटो सांग्यो विश्वविद्यालय में अपनी शताब्दी मनाने के लिए आयोजित की जाएगी। बैठक के दौरान एक विशेष अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जाएगी जिसमें आमंत्रित वक्ता के रूप में आईएसए के अध्यक्ष जेफ्री प्लीयर्स होंगे।

यह भी उल्लेख किया जाना चाहिए कि जेएसएस अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सक्रिय रहा है। इसका प्रमाण, जैसा कि ऊपर कहा गया है, यह है कि पहला एसएसएम सर्वेक्षण 1955 में आईएसए परियोजना के सहयोग से किया गया था। जेएसएस ने अपने आधिकारिक अंग्रेजी जर्नल, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जापानीज सोशियोलॉजी* का पहला अंक 1992 में प्रकाशित किया और इसे सालाना प्रकाशित करना जारी रखा है (2022 में नाम बदलकर *जापानीज जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी* कर दिया गया)। कई जापानी समाजशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रियों के साथ सहयोग किया है और आईएसए में सक्रिय रहे हैं; जेएसएस की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों को दर्शाने वाली सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि 2014 में योकोहामा में XVIII आईएसए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ़ सोशियोलॉजी का आयोजन थी। आईएसए और दुनिया भर के राष्ट्रीय संघों के समर्थन की बदौलत कांग्रेस एक बड़ी सफलता थी । उस कांग्रेस के बाद के दशक से, जेएसएस आईएसए और राष्ट्रीय संघों के सहयोग और साझेदारी के साथ अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों के एक नए चरण में प्रवेश कर गया है। ■

सभी पत्राचार योशिमीची सातो को <sato.yoshimichi@kuas.ac.jp> पर प्रेषित करें।

> जापानी समाजशास्त्र और इसके वैश्विक संबंध

चिकाको मोरी, दोशीशा विश्वविद्यालय, जापान द्वारा

श्रेय : जापान समाजशास्त्र सोसायटी।

वैश्विक समाजशास्त्रीय चर्चाओं में जापानी समाजशास्त्र का योगदान बहुआयामी है, जिससे उन्हें एक संक्षिप्त लेख में व्यापक रूप से आंकना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। योगदान अलग–अलग पैमाने, समय और स्थानों पर कई रूप लेते हैं – उदाहरण के लिए, चीन में चिजुको यूनो का काम अत्यधिक प्रभावशाली रहा है – और उनका मूल्यांकन कैसे किया जाए, इस पर कोई स्पष्ट सहमति नहीं है। वास्तव में, मूल्यांकनकर्ता के दृष्टिकोण के अनुसार मूल्यांकन बहुत परिवर्तित होते हैं। इसलिए, इस लेख का उद्देश्य सभी योगदानों का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी (JSS) और उसके सदस्यों द्वारा दुनिया भर में समाजशास्त्रीय चर्चाओं से जुड़ने और उनमें योगदान देने के लिए किए गए प्रयासों को उजागर करना है, जिसे जेफ्री प्लीयर्स ''नवीकृत वैश्विक संवाद'' कहते हैं।

> "पश्चिमी मध्यमार्गिता" से "अंतर्राष्ट्रीयकरण" के प्रयासों तक

जापानी समाजशास्त्र, जिसका इतिहास 1880 के दशक तक जाता है, के विकास का प्रारम्भ यूरोसेंट्रिज्म की इसकी विशेषता से होता है, जैसा कि शिगेटो सोनोडा बताते हैं। उस समय अधिकांश समाजशास्त्रीय जांच पश्चिमी समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की स्वीकृति, परिचय और पाचन पर केंद्रित थी। फिर भी 1924 में स्थापित जेएसएस के भीतर, वैश्विक समाजशास्त्र के साथ अधिक संबंधों के लिए आवाजें जल्दी उठाई गईं। जैसा कि सेयामा उल्लेख करते हैं, जेएसएस पहले आठ राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संगठनों में से एक था और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ (आईएसए) द्वारा स्थापना के एक साल बाद 1950 में अपील जारी करने पर उसमें शामिल हो गया। जेएसएस का प्रतिनिधित्व करते हुए, कुनियो ओडाका ने पहली आईएसए कांग्रेस में भाग लिया और उनके द्वारा प्रस्तुत सामूहिक राष्ट्रीय सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक गतिशीलता (एसएसएम) कार्यों का बाद में लिप्सेट और बेंडिक्स ने 1959 में उल्लेख किया ।

जेएसएस के कई सदस्य आईएसए के साथ जुड़े रहे, जिनमें योशिमीची सातो भी शामिल हैं, जो इसकी कार्यकारी समिति (2010–14) में शामिल हुए। हसेगावा के विवरण से पता चलता है कि ये प्रयास जुलाई 2014 में योकोहामा में XVIII आईएसए कांग्रेस के सफल आयोजन में परिणत हुए, जिसमें 6,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि प्रमुख जेएसएस कर्त्ताओं द्वारा अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीयकरण का यह मार्ग जापानी सरकार के राष्ट्र–राज्य अंतर्राष्ट्रीयकरण मॉडल से स्पष्ट रूप से अलग है, जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में सुधार करना है। जैसा कि शूजिरो याज़ावा ने 2011 में *ग्लोबल डायलॉग* में माइकल बुरावॉय द्वारा साक्षात्कार के दौरान उल्लेख किया था, समाजशास्त्र

> >

के वास्तविक अंतर्राष्ट्रीयकरण में राष्ट्र–राज्य ढांचे से परे एक वैश्विक या ग्रहीय समाज के भीतर स्थित वैश्विक समाजशास्त्र का निर्माण करना शामिल है।

> पूर्वी एशियाई समाजशास्त्र पर ध्यान केंद्रित करें

क्षेत्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। जैसा कि सोनोडा ने बताया, 1980 के दशक से कई संघों – जिसमें सिनो–जापानी समाजशास्त्रीय संघ भी शामिल है – की स्थापना की गई है, जिसमें जापानी समाजशास्त्री एशिया प्रशांत समाजशास्त्रीय संघ (1996 में स्थापित) और एशियाई सामाजिक अनुसंधान संघ (2010 में स्थापित) जैसे व्यापक एशियाई समाजशास्त्रीय नेटवर्क में तेजी से भाग ले रहे हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभागों के भीतर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शोध कार्यक्रमों ने अन्य एशियाई समाजशास्त्रियों के साथ सहयोग को मजबूत करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। उल्लेखनीय उदाहरणों में क्योटो विश्वविद्यालय में एमिको ओचियाई और तोहोकू विश्वविद्यालय में योशिमीची सातो के नेतृत्व वाले कार्यक्रम शामिल हैं।

इन पहलों का संस्थागतकरण भी आकार ले रहा है। 2003 में शुरू हुए पूर्वी एशियाई समाजशास्त्रियों के सम्मेलन के परिणामस्वरूप अक्टूबर 2017 में पूर्वी एशियाई समाजशास्त्रीय संघ की स्थापना हुई – इसका पहला सम्मेलन मार्च 2019 में टोक्यो के चुओ विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया था। इन पूर्वी एशियाई समाजशास्त्रीय आदान–प्रदानों ने कई प्रकाशनों को जन्म दिया है, जैसे कि *ए क्वेस्ट फॉर ईस्ट एशियन सोशियोलॉजीज़* (2014) और *हैंडबुक ऑफ़ पोस्ट–वेस्टर्न सोशियोलॉजीः फ्रॉम ईस्ट एशिया टू यूरोप* (2023)। इन पहलों का उद्देश्य एक वैश्विक समाजशास्त्र में योगदान देना है जो ''एक गैर–आधिपत्यवादी विश्व समाजशास्त्र'' के अनुरूप है ।

> जेएसएस के लिए नई पहल और चुनौतियां

जेएसएस ने वैश्विक स्तर पर चर्चाओं को जोड़ने के लिए कई पहल शुरू की हैंः 1992 में *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ जापानीज सोशियोलॉजी* की शुरुआत; दक्षिण कोरिया (2007 से), चीन (2011 से), और ताइवान (2015 से) के साथ विनिमय समझौतों पर आधारित संयुक्त पैनल; साथ ही 2023 में अंग्रेजी में जापानी समाजशास्त्र को प्रस्तुत करने के लिए आधिकारिक ब्लॉग की स्थापना। एक अन्य उल्लेखनीय पहल ट्रैवल अवार्ड (पूर्व में 2008 में सृजित ट्रैवल ग्रांट) है, जो दुनिया भर के उन युवा शोधकर्ताओं को पुरस्कृत करता है जो एक विशिष्ट विषय पर जेएसएस वार्षिक बैठक में अपना शोध प्रस्तुत करना चाहते हैंः 2022 संस्करण में ''कोविड–19 और समाज'' और 2023 के संस्करण में ''संकट के सन्दर्भ में ट्रांस राष्ट्रवाद''।

टोक्यो, जापान। श्रेय : विलियन जस्टेन डी वास्कोनसेलोस, पेक्सेल्स पर।

2024 के संस्करण के लिए, 9 और 10 नवंबर को जेएसएस की वार्षिक बैठक में जेफ्री प्लीयर्स की भागीदारी का लाभ उठाते हुए, यात्रा पुरस्कार की थीम ''वैश्विक समाजशास्त्र को केंद्र से हटाना'' है । इसने यात्रा पुरस्कार के लिए रिकॉर्ड संख्या में उम्मीदवारों को आकर्षित किया है। जबकि पूर्वी एशियाई देशों के साथ संवाद में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, वैश्विक दक्षिण और इसकी ज्ञानमीमांसाओं–जैसे कि उपनिवेशवाद–विरोधी या अधीनस्थ दृष्टिकोण – के साथ आदान–प्रदान अपेक्षाकृत अविकसित है। जेएसएस और उसके सदस्यों के लिए, वार्षिक बैठक का 2024 संस्करण वैश्विक संवाद में पूरी तरह से शामिल होने और हमारे समय के अनुरूप वैश्विक समाजशास्त्र में योगदान करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है। ■

सभी पत्राचार चिकाको मोरी को <cmori@mail.doshisha.ac.jp> पर प्रेषित करें।

> जापानी समाजशास्त्रीय अनुसंधान के वैश्विक प्रसार के लिए चुनौतियाँ

मासाको इशी–कुंट्ज़, ओचनोमिज़ू विश्वविद्यालय, जापान द्वारा

श्रेय : जापान समाजशास्त्र सोसायटी।

अमेरिका में अपने शुरुआती करियर के दौरान, अमेरिकी समाजशास्त्रीय संघ की वार्षिक बैठकों या विभिन्न पेशेवर संगठनों द्वारा आयोजित अन्य सम्मेलनों में भाग लेने के दौरान जापानी विद्वानों और स्नातक छात्रों से मिलना मेरे लिए दुर्लभ था। हालाँकि, शायद इस सदी के पहले वर्षों से, यह परिदृश्य लगातार बदल रहा है, और मैं अमेरिका में कई पेशेवर बैठकों में जापान के अधिक समाजशास्त्रियों से मिलने लगा।

> समेकन और भाषाई बाधा को तोड़ना

2014 में योकोहामा में आयोजित XVIII ISA विश्व समाजशास्त्र कांग्रेस के बाद से यह प्रवृत्ति और अधिक स्पष्ट हो गई है। अर्थात् जापान में रहने वाले समाजशास्त्रियों को वैश्विक सम्मेलनों में अपने शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करने के साथ–साथ दुनिया भर में अंग्रेजी भाषा की पत्रिकाओं में अपने शोध पत्र प्रकाशित करने में अधिक रुचि दिखाई दी। आईएसए के कुछ आँकड़ों पर एक नज़र डालने से भी इस बदलाव का खुलासा होता है। आईएसए (2024) के अनुसार, 2010 में, जब पहली बार कांग्रेस के आँकड़े ISA वेबसाइट पर उपलब्ध कराए गए थे, स्वीडन में आयोजित कांग्रेस में जापान से 205 प्रतिभागियों ने भाग लिया था और यह आँकड़ा उपस्थित लोगों की सातवीं सबसे बड़ी संख्या का प्रतिनिधित्व करता था। 2014 में योकोहामा कांग्रेस में यह आँकड़ा दोगुना से भी अधिक बढ़कर 429 हो गया। उसके बाद यद्यपि जापान के प्रतिभगियों की संख्या टोरंटो (2018) में 115 और मेलबोर्न (2023) में 277 तक गिर गई थी, जापान से समाजशास्त्री टोरंटो में पांचवे और मेलबोर्न में चतुर्थ स्थान पर थे।

यह न केवल जापान के समाजशास्त्रियों के लिए बल्कि विभिन्न देशों के उनके समकक्षों के लिए भी एक स्वागत योग्य बदलाव है। 1980 के दशक के मध्य में जब मैं अमेरिका में अपने डॉक्टरेट शोध प्रबंध पर काम कर रहा था, तो जापान के बारे में अंग्रेजी में लिखी गई समाजशास्त्रीय पुस्तकें और लेख खोजना काफी मुश्किल था। इसलिए, मैं अक्सर जापानी में लिखी गई पुस्तकों और अन्य दस्तावेजों को पढ़ने का सहारा लेता था। हालाँकि जापानी में लिखी गई पुस्तकों और लेखों को पढ़ पाना बहुत अच्छा था, लेकिन साथ

>>

टोक्यो, जापान। फोटो : ऑस्कर एम., पेक्सेल्स पर।

ही मुझे लगा कि शोध के निष्कर्षों को कई और समाजशास्त्रियों तक पहुँचाया जाना चाहिए और उन्हें अन्य कई समाजशास्त्रियों द्वारा पढ़ा जाना चाहिए, न कि केवल जापानी समझने वालों द्वारा। अब जबकि जापान के समाजशास्त्री अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में बहुत अधिक सक्रिय रूप से शामिल हो रहे हैं और अंग्रेजी भाषा की पत्रिकाओं में अपने शोध प्रकाशित कर रहे हैं, मुझे लगता है कि जापानी समाजशास्त्रीय कार्य को विश्व स्तर पर मान्यता मिलने का एक बड़ा मौका है।

हाल के वर्षों में जापानी समाजशास्त्रीय शोध के बारे में अधिक जानकारी मिलने के बावजूद, जापानी समाजशास्त्रियों को अपने शोध निष्कर्षों को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने से रोकने वाली कुछ बाधाएँ अभी भी हैं। एक जापानी विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र पढ़ाने के अपने अनुभवों और अपनी चिंताओं के आधार पर, मैं चर्चा करूँगा कि ये बाधाएँ क्या हैं, कठिनाइयों को दूर करने के लिए कुछ सुझाव दूँगा, और बताऊँगा कि जापान समाजशास्त्रीय सोसायटी (JSS) इन चुनौतियों का सामना करने के लिए क्या कर रही है।

> अनुसंधान को वैश्वीकृत करने में तीन बाधाएं और सुझाव

सबसे पहले और शायद सबसे महत्वपूर्ण, जापान के कई समाजशास्त्रियों को लग सकता है कि अंग्रेजी का उपयोग करने वाले अंतर्राष्ट्रीय शोधकर्ताओं के साथ संवाद करने में अभी भी एक बाधा है। यह जापान में अंग्रेजी भाषा शिक्षण से संबंधित समस्याओं के कारण हो सकता है, जहाँ अंग्रेजी में संचार क्षमता को प्रभावी ढंग से नहीं सिखाया जाता है, जैसा कि इकेगाशिरा, मात्सुमोतो और मोरीता ने उजागर किया है। साथ ही, कई जापानी समाजशास्त्री मूल अंग्रेजी बोलने वालों की तरह बोलने का बहुत प्रयास करते हैं। कई जापानी समाजशास्त्रियों के लिए जो अपने शोध निष्कर्षों को दुनिया तक पहुँचाना चाहते हैं, यह एहसास कि उन्हें मूल अंग्रेजी बोलने वालों की तरह बोलने की ज़रूरत नहीं है, उनकी घबराहट को कम कर सकता है और उनके तनाव के स्तर को कम कर सकता है। जेएसएस के अंतर्गत हमने अंतर्राष्ट्रीय शोध गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए समिति गठित की है जो अंग्रेजी में शोध सारांश लिखने हेतु कार्यशालाओं के साथ साथ अंग्रेजी में शोध पत्र प्रस्तुत करने के किये व्याख्यान की पेशकश करती है। जैसे जैसे स्नातक छात्र इन कार्यशालाओं और व्याख्यानों में भाग लेते हैं, उनके सारांश में से कई आईएसए विश्व कांग्रेस में स्वीकृत हो रहे हैं।

दूसरा, जापानी समाजशास्त्र में कई स्नातक छात्रों और शिक्षाविदों में अपने शोध निष्कर्षों को प्रस्तुत करने और लिखने के दौरान 'परफेक्ट' होने की प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए, सम्मेलनों में अपने शोधपत्र प्रस्तुत करते समय, मैंने देखा है कि कई जापानी समाजशास्त्री प्रस्तुति की स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और कई बार उनका अभ्यास करते हैं। जहाँ अभ्यास करना सही है, पांडुलिपियों पर भारी निर्भरता प्रभावी और सुचारू प्रस्तुतिकरण देना मुश्किल बना देती है। इसके अलावा, जापान के कई प्रस्तुतकर्ता प्रश्नोत्तर सत्रों के बारे में घबरा सकते हैं, जिसके लिए पांडुलिपि तैयार करना संभव नहीं है। मैं आमतौर पर जापान के छात्रों और शोधकर्ताओं को जो सलाह देता हूं वह यह है कि गलतियाँ करने से न डरें और यह बताएं कि टिप्पणियों और प्रश्नों का कौन सा हिस्सा उनके लिए समझना मुश्किल है। जेएसएस में, छात्रों और नए शोधकर्ताओं के लिए उनके प्रस्तुति कौशल को बेहतर बनाने के लिए सेमिनार आयोजित करना आवश्यक हो सकता है।

अंत में, भाषा संबंधी कठिनाइयों पर काबू पाने के अलावा, विदेशी सम्मेलनों में भाग लेने वालों के लिए यात्रा और आवास के लिए धन सुरक्षित करना आवश्यक है। जेएसएस अपने सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रतिस्पर्धी यात्रा अनुदान प्रदान करता है। इसके अलावा, जापानी सरकार, निजी संगठन और विश्वविद्यालय छात्रों को विदेशी सम्मेलनों में भाग लेने के लिए कई प्रकार की छात्रवृत्ति प्रदान करते हैं। अमेरिका में कुछ पेशेवर संगठन अंतरराष्ट्रीय सहभागियों के लिए यात्रा सहायता भी प्रदान करते हैं। मैं जेएसएस जैसे जापानी पेशेवर संगठनों को इन अनुदानों, फैलोशिप और छात्रवृत्तियों का डेटाबेस बनाने की अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ।

संक्षेप में, जापानी छात्रों और शिक्षाविदों के शोध के वैश्विक प्रसार को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत और मनोवैज्ञानिक दोनों तरह के समर्थन की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने वाले जापानी समाजशास्त्रियों की संख्या में वृद्धि और अंग्रेजी भाषा की पत्रिकाओं में उनकी दृश्यता में वृद्धि, दोनों ही जापानी समाजशास्त्र को वैश्विक मंच पर आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। ■

सभी पत्राचार मासाको इशी–कुंट्ज़ को <ishii.kuntz.masako@ocha.ac.jp> पर प्रेषित करें।

> जापानी समाजशास्त्र में हालिया रुझान

नाओकी सूडो, हितोत्सुबाशी विश्वविद्यालय, जापान द्वारा

श्रेय : जापान समाजशास्त्र सोसायटी।

जापानी समाजशास्त्र में हाल के रुझान दो विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं। प्रथम, जापानी समाजशास्त्रियों की मुख्य रुचि समाजशास्त्रीय तरीकों की ओर स्थानांतरित हो गई है। यह ध्यान देने योग्य है कि जापानी समाजशास्त्रियों की पद्धतिगत रुचि केवल मात्रात्मक पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गुणात्मक पद्धति भी शामिल हैं। द्वितीय, इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में जापानी समाजशास्त्रियों की रुचि बीसवीं सदी की तुलना में अधिक विविध रही है। इस प्रकार, जापानी समाजशास्त्रियों की मुख्य रुचि नवीनतम विषयों की ओर स्थानांतरित हो गई है। इनकी जापान में समाजशास्त्र के क्षेत्र में पारंपरिक विषयों के साथ जोड़े जा रहे नए विषयों के रूप में व्याख्या की जा सकती है। नतीजतन, पिछले कुछ दशकों में समाजशास्त्रीय सिद्धांतों में जापानी समाजशास्त्रियों की रुचि कमजोर हो गई है।

> समाजशास्त्रीय सिद्धांतों से समाजशास्त्रीय विधियों तक

जापानी समाजशास्त्र में सिद्धांत से पद्धति की ओर बदलाव की पुष्टि करने के लिए, हम दो जापानी समाजशास्त्रियों द्वारा लिखे गए दो अध्ययनों का हवाला दे सकते हैं। एक है केनिची तोमिनागा की पुस्तक जिसका शीर्षक है, *सोशियोलॉजी इन पोस्टवार जापान: अ कंटेम्पररी हिस्ट्री (2004)*, और दूसरा हिरोकी ताकिकावा का लेख है जिसका शीर्षक है, ''टॉपिक डायनामिक्स ऑफ़ पोस्ट–वॉर जापानीज सोशियोलॉजी : टॉपिक एनालिसिस ऑफ़ जापानीज सोशियोलॉजिकल रिव्यु कार्पस बाय स्ट्रक्चरल टॉपिक मॉडल'' (2019)। हालाँकि तोमिनागा और ताकिकावा के ये कृत्य जापानी समाजशास्त्र में सबसे हालिया रुझानों का विश्लेषण नहीं करते हैं, लेकिन यह निश्चित रूप से माना जाता है कि उनके द्वारा प्रस्तुत प्रारूप को नवीनतम परिदृश्य पर लागू किया जा सकता है।

उन लेखकों का तर्क है कि 1960 और 1970 के दशक के दौरान जापानी समाजशास्त्रियों के हितों पर दो विरोधी समाजशास्त्रीय विचारधाराओं (संरचनात्मक कार्यात्मकता और मार्क्सवाद) का प्रभुत्व था। हालाँकि, जापानी समाजशास्त्रियों की अगली पीढ़ी द्वारा इन दोनों समाजशास्त्रीय विचारों की अति आलोचना की गई, और उनका प्रभाव खत्म हो गया। संरचनात्मक कार्यात्मकता और मार्क्सवाद के बजाय, नए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों (जैसे, इस विषय पर मिशेल फूको के अध्ययन, पियरे बौर्डियू का सांस्कृतिक पूंजी सिद्धांत, निकलास लुहमैन का सामाजिक प्रणाली सिद्धांत, जुर्गन हेबरमास का संचार सिद्धांत और एंथनी गिडेंस का संरचना सिद्धांत) ने जापानी समाजशास्त्रियों की रुचि को आकर्षित किया है। इसके अलावा, सदी की शुरुआत के बाद से समाजशास्त्रीय सिद्धांतों में जापानी समाजशास्त्रियों की रुचि तेजी से कमजोर हुई है ।

>>

ताकिकावा के अनुसार, जापानी समाजशास्त्री समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के बजाय सामाजिक शोध डेटा का विश्लेषण करने के साधन के रूप में समाजशास्त्रीय पद्धति में रुचि रखते हैं। वास्तव में, कुछ जापानी समाजशास्त्रियों ने उन्नत मात्रात्मक पद्धति का प्रयोग करके सामाजिक घटनाओं का गहन विश्लेषण किया है। इसके साथ ही, अन्य जापानी समाजशास्त्रियों ने गुणात्मक तरीकों, जैसे कि कथात्मक दृष्टिकोणों का उपयोग करके सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया है। जैसा कि ताकिकावा बताते हैं, इस सदी के पहले दो दशकों में जापानी समाजशास्त्रियों द्वारा मात्रात्मक और गुणात्मक तरीकों को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया । इससे पता चलता है कि इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में जापानी समाजशास्त्र के भीतर मात्रात्मक और गुणात्मक पद्धति के बीच संबंध प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि पूरक रहे हैं।

आम तौर पर, एक विषय में उन्नत मात्रात्मक तरीकों के प्रसार को विज्ञान के रूप में विषय के सामान्यीकरण के संकेत के रूप में व्याख्या किया जा सकता है। हालाँकि, इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में जापानी समाजशास्त्र में उन्नत मात्रात्मक तरीकों के प्रसार ने गुणात्मक तरीकों के साथ सकारात्मक रूप से सह–अस्तित्व की ओर रुख किया, जिन्हें मात्रात्मक तरीकों की तुलना में वैज्ञानिक रूप से सामान्यीकृत करना अधिक कठिन हो सकता है। इससे पता चलता है कि मात्रात्मक पद्धति के लिए जापानी समाजशास्त्रियों की प्राथमिकता विज्ञान के रूप में क्षेत्र के सामान्यीकरण के लिए प्राथमिकता को नहीं दर्शाती है। इसलिए, हमें अन्य कारणों का पता लगाना चाहिए कि जापानी समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्रीय सिद्धांतों से समाजशास्त्रीय पद्धति की ओर अपनी रुचि क्यों स्थानांतरित की ।

> इक्कीसवीं सदी के दौरान जापानी समाजशास्त्र में विविध विषय

हिरोकी ताकिकावा संकेत देते हैं कि इक्कीसवीं सदी के दौरान जापानी समाजशास्त्रियों द्वारा लक्षित शोध विषय बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दौरान लक्षित विषयों की तुलना में अधिक विविधतापूर्ण रहे हैं। विशेष रूप से, जापानी समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र में पारंपरिक विषयों (सामाजिक वर्ग, परिवार, श्रम, संगठन, शहरी अध्ययन, आदि) में नए शोध विषय (जैसे पर्यावरण ीय समस्याएं, लिंग/लैंगिकता और आत्म–पहचान) जोड़े हैं। यह माना जाता है कि उन्हें इन विषयों को संबोधित करने के लिए नए उन्नत मात्रात्मक और गुणात्मक पद्धति का उपयोग करना चाहिए, जो जटिल तरीकों से अत्यधिक परस्पर जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त, जापानी समाजशास्त्रियों के लिए, ऐसे तरीकों से अन्य विषयों (अन्य के अलावा, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, कानून और सामाजिक डेटा विज्ञान) में सामाजिक वैज्ञानिकों के साथ संचार उपकरण के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद की जाती है, जो उनके हितों को साझा करते हैं। यह संभावना है कि विविध शोध विषय और विभिन्न विषयों में सामाजिक वैज्ञानिकों के साथ सहयोग की मांग वे कारण थे जिनके कारण जापानी समाजशास्त्रियों ने पद्धति में अपनी रुचि पर जोर देना शुरू किया ।

इसके अलावा, इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में जापानी समाज ने तेजी से सामाजिक परिवर्तन का अनुभव किया। जापानी समाजशास्त्रियों के लिए, ऐसे परिवर्तनों ने व्यावहारिक और तत्काल समाधान को मुश्किल बना दिया है। सबसे पहले, इस अवधि के दौरान जापानी आबादी काफी बूढ़ी हो गई। नतीजतन, जापान अब दुनिया की सबसे बूढ़ी आबादी में से एक है। इसने जापान की सामाजिक कल्याण व्यवस्था की स्थिरता को सवालों के घेरे में ला दिया है। दूसरे, 1990 के दशक के उत्तरार्ध से जापान ने दीर्घकालिक आर्थिक ठहराव का अनुभव किया है। नतीजतन, पूरे श्रम बल में गैर–नियमित कर्मचारियों (अंशकालिक और अस्थायी श्रमिकों) की हिस्सेदारी बढ़ी है। इसके अलावा, जैसा कि जापानी समाज को श्रम बल की कमी के कारण होने वाले मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता है, अप्रवासियों की संख्या और श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी की दर बढ़ रही है। इन परिवर्तनों ने सामाजिक असमानताओं को बढ़ाया है और अपने साथ नई सामाजिक समस्याएं लाये हैं जिन्हें जापान में पारंपरिक समाजशास्त्रीय सिद्धांतों द्वारा समझाया नहीं गया है ।

इस प्रकार, इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में, जापानी समाजशास्त्रियों को ऐसे नए विषयों पर विचार करना पड़ा जिन्हें पारंपरिक समाजशास्त्रीय सिद्धांतों द्वारा समझाया नहीं जा सकता था और परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी रुचि सिद्धांत से पद्धति की ओर स्थानांतरित कर ली। ऐसा नहीं है कि समाजशास्त्रीय सिद्धांत अब जापानी समाजशास्त्रियों के लिए मददगार नहीं हैं; बल्कि, ऐसे नए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की आवश्यकता होगी जो नए विषयों को पर्याप्त रूप से समझा सकें और उभरते कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इन नए मुद्दों को समझाने के लिए सिद्धांतों की स्थापना किए बिना, जापानी समाजशास्त्री उन्हें हल करने के लिए प्रभावी साधन निर्धारित करने में सक्षम नहीं होंगे।

> समापन टिप्पणी

वैश्विक स्तर पर समाजशास्त्र के रुझानों से आंशिक रूप से मेल खाते हैं। जबकि इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में तेजी से बूढ़ी होती आबादी और दीर्घकालिक आर्थिक ठहराव अन्य देशों की तुलना में जापानी समाज में उल्लेखनीय हो सकता है, मेरा मानना है कि समाजशास्त्रीय सिद्धांत से समाजशास्त्रीय तरीकों और विविध शोध विषयों की ओर शोध रुचि का स्थानांतरण दुनिया भर में साझा की जाने वाली सामान्य विशेषताएं हैं। इसलिए, ऐसे रुझानों के कारण होने वाली समस्याएं न केवल जापानी समाजशास्त्र में बल्कि वैश्विक समाजशास्त्र में भी देखी जाती हैं। इससे पता चलता है कि जापानी समाजशास्त्रियों को इक्कीसवीं सदी में जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उन्हें दूर करने के लिए दुनिया भर के समाजशास्त्रियों के साथ सहयोग करना चाहिए। ■

सभी पत्राचार नाओकी सुडो को <naoki.sudo@r.hit-u.ac.jp> पर प्रेषित करें।

> वैश्विक संकट और कट्टरपंथी विकल्पों के संबंध में घोषणापत्र

ADELANTE – वैश्विक प्रक्रियाओं का संवाद द्वारा

श्रेय : एडेलैंटे, 2024

> हम जिन संकटों का सामना कर रहे हैं

- दुनिया कई संकटों की खाई में गिरती जा रही है। गहरी दरारें मानवता और मनुष्य को बाकी प्रकृति से अलग करती हैं। वर्तमान में प्रचलित दमनकारी व्यवस्था में बुनियादी तौर पर खामियां हैं और इसने इन संकटों को जन्म दिया है और उन्हें बनाए रखा है। इस व्यवस्था की जड़ें वर्ग, उपनिवेशवाद, नस्लवाद, पितृसत्ता, पूंजीवाद, राज्य वर्चस्व, जातिवाद और हमारे मानव–केंद्रित फोकस की संरचनाओं और संबंधों में हैं। संकटों में प्रकट होने वाले लक्षणों के अलावा, इन जड़ों को भी चुनौती देने और बदलने की जरूरत है।

- सत्तावादी, साम्राज्यवादी या फासीवादी शासन के सांस्कृतिक आधिपत्य द्वारा लोगों और बाकी प्रकृति दोनों पर वर्चस्व की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। इसने पूरे समाज को बेकार बना दिया है, और जानने/होने/कार्य करने/जीने के विभिन्न तरीकों को विस्थापित और नष्ट कर दिया है।

- आज की सैन्य–औद्योगिक परिसर और पूंजीवाद द्वारा समर्थित प्रभुत्वशाली व्यवस्था, राष्ट्र–राज्यों, जातीय समूहों और धार्मिक विश्वासों के बीच युद्धों और संघर्षों को जन्म देती है या बढ़ाती है, जिसके सबसे बुरे परिणाम निर्दोष लोगों और पर्यावरण को भुगतने पड़ते हैं।

- जैव विविधता की हानि, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और ग्रह के विषाक्तीकरण सहित पारिस्थितिकीय संकटों ने पृथ्वी को छठी व्यापक विलुप्ति के कगार पर ला खड़ा किया है : प्रथम बार मानवीय गतिविधियों के कारण होने वाला परिणाम, तथा जिसके

>>

कारण अरबों लोगों के जीवन और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

- अंतहीन आर्थिक वृद्धि पर आधारित 'विकास' दृष्टिकोण आतंरिक रूप से अधारणीय है, 'विकसित', 'उभरता हुआ' और 'अविकसित' जैसे झूठे भेद पैदा करता है, और उपभोग के अस्वास्थ्यकर और अधारणीय पैटर्न को प्रोत्साहित करता है।

- जिस प्रणाली ने बहुल संकट उत्पन्न किए हैं, वह भी हमें 'समाधानों' की झड़ी दे रही है जो अंतर्निहित कारणों का नहीं, बल्कि केवल लक्षणों का उपचार करते हैं, जैसे कार्बन ट्रेडिंग, हरित विकास, नेट–जीरो, जियोइंजीनियरिंग और अन्य तकनीकी समाधान और बाजार दृष्टिकोण।

- इन संकटों के विभिन्न पहलू आपस में जुड़े हुए हैं। इसलिए हमें ऐसे समाधानों की ज़रूरत है जो समग्र, अंतर–अनुभागीय और एकीकृत हों, और वास्तविक, व्यवस्थित विकल्पों की ओर इशारा करें।

> लोगों की प्रतिक्रियाएँ : प्रतिरोध और विकल्प

- इन संकटों के जवाब में जमीनी स्तर पर कार्रवाई और आंदोलनों का एक बड़ा आधार उभर रहा है। आंदोलन उन परिवर्तनकारी प्रक्रियाओं को स्पष्ट और प्रदर्शित करते हैं जो हमें एक ऐसी दुनिया की ओर ले जाती हैं जो बहुलवादी, लोकतांत्रिक, उपनिवेशवाद–मुक्त, न्यायपूर्ण, न्यायोचित/समानतावादी मुक्त, नारीवादी, पारिस्थितिकी के प्रति समझदार, शांतिपूर्ण, उत्तर–पूंजीवादी/उत्तर–विकासवादी, जैव–सांस्कृतिक, समृद्ध, एकजुटता का अभ्यास करने वाली और कट्टरपंथी प्रेम आधारित है। प्रत्येक आंदोलन की ऐसे मूल्यों और शब्दों की अपनी व्याख्या और समझ हो सकती है जो बहुलवाद और विविधता पैदा कर सकती है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए। चाहे ऐसा तब हो जब हम साझा किए गए मौलिक मूल्यों और नैतिक मान्यताओं के आधार पर खुद को एक साथ ला रहे हों।

- स्वदेशी लोग, जमीनी स्तर के समुदाय, विभिन्न प्रकार के समूह और व्यक्ति टिकाऊ, समतापूर्ण जीवन जीने के मार्ग पर चल रहे हैं, जिसमें कृषि पारिस्थितिकी, साझा को पुनः प्राप्त करना, सामुदायिक स्वास्थ्य, वैकल्पिक शिक्षा और शिक्षण, लिंग और यौन न्याय, कट्टरपंथी लोकतंत्र और स्वायत्तता, स्थानीय अर्थव्यवस्थाएँ जो देखभाल और साझा करने के संबंधों को प्राथमिकता देती हैं, श्रमिक–स्वामित्व या नियंत्रित उत्पादन, प्रकृति के साथ गैर–द्विआधारी संबंध को बनाए रखना या पुनर्जीवित करना और पारिस्थितिकी तंत्र–आधारित समुदायों द्वारा इसका संरक्षण, संस्कृतियों, भाषाओं, ज्ञान प्रणालियों और जीवन जीने के तरीकों की विविधता को बनाए रखना या पुनर्जीवित करना, और ऐसे अन्य विकल्प शामिल हैं। इनमें से कई उन विश्वदृष्टिकोणों में शामिल हैं जो जीवन का सम्मान करते हैं, कुछ प्राचीन और स्वदेशी परंपराओं की निरंतरता हैं, और कुछ आधुनिक औद्योगिक समाजों के भीतर प्रति–प्रवृत्तियों के रूप में उभर रहे हैं। हालाँकि, ये पहल अभी भी व्यापक परिवर्तनों के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण द्रव्यमान प्राप्त करने के लिए बहुत छोटी या खंडित हैं।

> परिवर्तन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता

गहन परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए, हम प्रतिबद्ध हैं :

- परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियों को साझा करें और समझें तथा पहले से ही लागू परिवर्तन की प्रेरक कहानियों को बढ़ावा दें।
- न्यायपूर्ण सामाजिक और पारिस्थितिक परिवर्तन के लिए निरस्त्रीकरण और शांति हेतु साझा संघर्ष में योगदान दें।
- विविधता और मतभेदों को सराहने और उनका सम्मान करने के साथ ही अपनी साझा स्थिति, नैतिकता और मूल्यों का अन्वेषण करें और उन्हें और गहन बनाएं।
- राजनीतिक निर्णय लेने की जिम्मेदारी लें, विशेष रूप से जमीनी स्तर पर लोगों की शक्ति का निर्माण कर के। हम यह पुष्टि करने के लिए कार्य करते हैं कि यह शक्ति हावी होने (किसी के ऊपर शक्ति) के लिए नहीं है, बल्कि सकारात्मक रूप से बदलाव लाने (शक्ति के लिए/साथ) के लिए है।
- प्रतिरोध के आंदोलनों और रचनात्मक विकल्पों को जोड़ें ताकि हम अपनी वांछित दुनिया बना सकें।
- स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक, जमीनी स्तर पर प्रत्यक्ष कार्रवाई को बढ़ावा देना, राष्ट्र–राज्यों से ऊपर उठकर हर जगह मनुष्यों और गैर–मनुष्यों के बीच एकजुटता और देखभाल का निर्माण करना।
- जीवन के व्यापक दायरे तक अपने सम्मान और देखभाल को बढ़ाना।
- लोकतांत्रिक नियंत्रण के तहत व्यापक समतावादी पुनरोत्पादक प्रौद्योगिकियों और मिलनसार उपकरणों को बढ़ावा देना।
- विभिन्न भाषाओं के शब्दों की एक सामान्य (परन्तु बहुलवादी, सांस्कृतिक रूप से विविध) शब्दावली और समझ का निर्माण करना।
- इस बात का अन्वेषण करें कि प्रभुत्व की प्रणालियाँ किस हद तक संगठित होने और संबंध बनाने के हमारे अभ्यस्त तरीकों में अंतर्निहित हैं, तथा व्यक्तिगत और सामूहिक उपचार के कार्य के लिए प्रतिबद्ध हों जो हमें अस्तित्व के अधिक गहराई से जुड़े तरीकों की ओर ले जाने में सहायता करता है।

जबकि ऐसे शक्तिशाली जन आंदोलन हैं; जो इन संकटों के पीछे की ताकतों की पहचान कर उनका विरोध कर रहे हैं, साथ ही साथ ऐसे कट्टरपंथी विकल्पों का अभ्यास और प्रचार कर रहे हैं जो न्यायसंगत और टिकाऊ हैं, हमारे पास सुसंगत, संयुक्त प्रतिक्रिया का अभाव है। इसलिए हम अपने समुदायों, संगठनों और आंदोलनों में संचार, संबंध निर्माण और सहयोग पर एक साथ काम करने वाली ताकतों के ऐसे संकेन्द्रण को सक्षम करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करते हैं। हम इसे लोकतांत्रिक, गैर–पदानुक्रमिक लामबंदी की भावना से करते हैं, जो उन दुनिया की ओर प्रगतिशील परिवर्तन की तलाश में विचारधाराओं, रणनीतियों, मार्गों और दृष्टिकोणों की विविधता के लिए खुले हैं जिन्हें हम चाहते हैं और जिनकी हमें आवश्यकता है। ■

'नवंबर 2020 से, ग्लोबल टेपेस्ट्री ऑफ अल्टरनेटिव्स (GTA) ने विभिन्न वैश्विक प्रक्रियाओं के बीच संवाद शुरू किया है जो न्याय की दिशा में प्रणालीगत, मौलिक परिवर्तनों की मांग कर रहे हैं। इनमें GTA के अलावा, ये शामिल हैं: ग्लोबल डायलॉग प्रोसेस; ग्लोबल ग्रीन न्यू डील; ग्लोबल वर्किंग ग्रुप बियॉन्ड डेवलपमेंट; ग्रासरूट्स टू ग्लोबल; मल्टीकनवर्जेंस; प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल और टूवर्ड्स ए न्यू वर्ल्ड सोशल फ़ोरम। इस प्लेटफ़ॉर्म को 2021 में ADELANTE नाम दिया गया और इसकी अपनी वेबसाइट है जिसमें अपडेट और संसाधन हैं : https://adelante.global/.

> अंतर्राष्ट्रीयता या विलुप्ति

प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल द्वारा

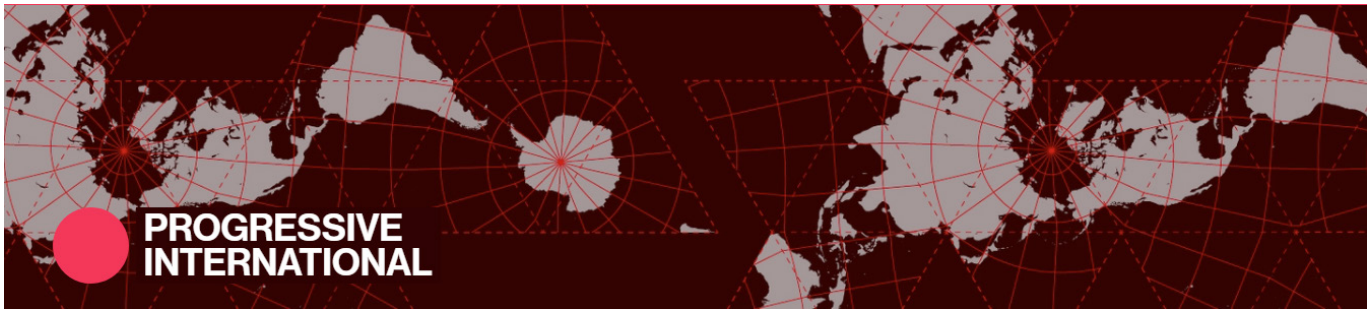

श्रेय : प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल, 2024

सितंबर 2020 में आयोजित प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल के उद्घाटन शिखर सम्मेलन में परिषद ने निम्नलिखित घोषणा को अपनाया।

I. अंतर्राष्ट्रीयता या विलुप्ति

हमारी सदी के संकटों से सभी महाद्वीपों के सभी देशों में सभी जीवन के विलुप्त होने का खतरा है। अंतर्राष्ट्रीयता कोई विलासिता नहीं है। यह जीवित रहने की एक रणनीति है।

II. प्रगति की परिभाषा

हमारा मिशन प्रगतिशील ताकतों का एक वैश्विक मोर्चा बनाना है। हम प्रगतिशील को एक ऐसी दुनिया की आकांक्षा के रूप में परिभाषित करते हैं जो लोकतांत्रिक, उपनिवेशवाद से मुक्त, न्यायपूर्ण, समतावादी, मुक्त, नारीवादी, पारिस्थितिक, शांतिपूर्ण, पूंजीवाद–उत्तर, समृद्ध, बहुलवादी और कट्टरपंथी प्रेम से बंधी हो।

III. विश्व के लोगों, संगठित हो जाओ

हम मजदूर, किसान और दुनिया के लोग हैं जो सत्तावादी कुलीनतंत्र की प्रतिक्रियावादी ताकतों के खिलाफ उठ खड़े हुए हैं। हमारा उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संगठन है : सीमाओं के पार ताकतों को एकजुट करना ताकि वे पृथ्वी को पुनः प्राप्त कर सकें।

IV. हम बुनियादी ढांचे का निर्माण करते हैं

हमारा जनादेश अंतर्राष्ट्रीयता के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है। प्रगति की ताकतें विखंडित बनी हुई हैं, जबकि दुनिया भर में धन और शक्ति समेकित हो रही है। हम लड़ने और जीतने की ताकत के साथ एक वैश्विक मोर्चे का मचान बनाते हैं।

V. एकता, अनुरूपता नहीं

हम साझा संघर्ष के ज़रिए एकता चाहते हैं। मौजूदा संकट सभी प्रगतिशील ताकतों के रणनीतिक गठबंधन की मांग करता है। लेकिन समन्वय के लिए समर्पण की ज़रूरत नहीं होती। हमारा लक्ष्य एक व्यापक गठबंधन बनाना है, साथ ही इसके अंदर रचनात्मक संघर्ष के लिए जगह बनाना है।

VI. पारस्परिक शक्ति द्वारा साझेदारी

हमारा मानना है कि आपसी शक्ति के बिना साझेदारी सिर्फ़ वर्चस्व का दूसरा नाम है। हमारे काम में, हमारा लक्ष्य अपने गठबंधन में शक्ति की असमानताओं को फिर से पैदा करने के बजाय संतुलन को फिर से बनाना है।

VII. पूंजीवाद वायरस है

हम हर जगह पूंजीवाद को खत्म करने की आकांक्षा रखते हैं। हमारा मानना है कि शोषण, बेदखली और पर्यावरण विनाश पूंजीवाद के आनुवंशिक कोड में लिखे गए हैं। हम इस व्यवस्था को बचाने के प्रयासों का समर्थन नहीं करते हैं, न ही पृथ्वी के सभी कोनों में इसके विस्तार को सक्षम बनाते हैं।

VIII. अंतर्राष्ट्रीयता का अर्थ है साम्राज्यवाद–विरोध

हमारा अंतर्राष्ट्रीयवाद साम्राज्यवाद के सभी रूपों के खिलाफ़ है: युद्ध और प्रतिबंधों से लेकर निजीकरण और 'संरचनात्मक समायोजन' तक। हमारा मानना है कि ये सिर्फ़ कुछ देशों द्वारा दूसरों पर वर्चस्व जमाने के साधन नहीं हैं। ये दुनिया के लोगों को एक–दूसरे के खिलाफ़ खड़ा करने के लिए विभाजन के साधन भी हैं।

IX. भाषा शक्ति है

हम कई भाषाएँ बोलते हैं। भाषाई बाधाएँ वर्ग वर्चस्व, श्वेत वर्चस्व और स्वदेशी लोगों के विस्थापन को मजबूत करती हैं। हमारा लक्ष्य भाषाई बाधाओं को पार करके प्रतिरोध की अपनी आम भाषा खोजना है।

X. अग्रिम मोर्चे पर स्वतंत्रता

हमारा अंतर्राष्ट्रीयवाद अन्तर्विभाजक है: हम मानते हैं कि साम्राज्यवादी विस्तार के दौरान नस्लीय पूंजीवाद द्वारा स्थापित उत्पीड़न की परतें

> >

मांग करती हैं कि हम मुक्ति के लिए अग्रिम पंक्ति के संघर्षों को वैश्विक अर्थव्यवस्था के आधार पर केन्द्रित करेंरू भोजन के लिए, भूमि के लिए, सम्मान के लिए, और मुक्ति के लिए।

XI. मुक्ति का अंतर्राष्ट्रीयवाद

हम नस्लवाद, जातिवाद और सामाजिक वर्चस्व के सभी रूपों से लड़ते हैं। हम मानते हैं कि श्वेत वर्चस्व विश्व व्यवस्था का एक संगठित सिद्धांत है। दमनकारी पदानुक्रमों के प्रति हमारा विरोध हमारी अंतर्राष्ट्रीयता की नींव है।

XII. उपनिवेशवाद का उन्मूलन कोई रूपक नहीं है

हमारा उद्देश्य पृथ्वी को उपनिवेश मुक्त करना है। हम उपनिवेश मुक्त करने के प्रतीकात्मक कार्यों से संतुष्ट नहीं हैं । हमारी मांग है कि पिछले अपराधों के लिए पूर्ण क्षतिपूर्ति की जाए और दुनिया के सभी वंचित लोगों को भूमि, संसाधन और संप्रभुता की तत्काल बहाली की जाए।

XIII. नारीवादी राजनीति, नारीवादी व्यवहार

हमारा मानना है कि लैंगिक उत्पीड़न की व्यवस्था में कोई भी स्वतंत्र नहीं है। हमारा उद्देश्य पितृसत्ता को तोड़ना है और साथ ही उस लैंगिकता की द्विआधारी संरचना को तोड़ना है जिस पर यह निर्भर करता है। हम अपनी राजनीति को देखभाल, सहयोग और सामुदायिक जवाबदेही की ओर निर्देशित करते हैं।

XIV. ब्यूनस विविरेस

हम प्रगति को वृद्धि से नहीं मापते। विस्तार की अनिवार्यता ही पारिस्थितिकी विनाश का इंजन है। हम भूख और अभाव से मुक्त, अच्छे जीवन जीने के तरीके खोजते हैं, और हम अपनी सफलता को अपने सामूहिक सह–अस्तित्व की गुणवत्ता से परिभाषित करते हैं।

XV. न्याय नहीं, शांति नहीं

हमारा लक्ष्य स्थायी शांति है। लेकिन शांति केवल सामाजिक न्याय की सुरक्षा में ही टिक सकती है। हम युद्ध मशीन को खत्म करने और इसे सहयोग और सह–अस्तित्व पर आधारित लोगों की कूटनीति से बदलने के लिए काम करते हैं।

XVI. क्रांति, शासन परिवर्तन नहीं

हम समाज को बदलने और राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए लोकप्रिय आंदोलनों का समर्थन करते हैं। लेकिन हम पूंजी के हितों की रक्षा करने और साम्राज्य की प्रगति में सहायता करने के लिए शासन को उखाड़ फेंकने के प्रयासों के खिलाफ खड़े हैं।

XVII. चुनाव जीतना ही पर्याप्त नहीं है

हमारा मिशन वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय शक्ति का निर्माण करना है। चुनाव राजनीति को बदलने और लोकप्रिय मांगों को सरकारी नीति में बदलने का एक अवसर हैं। लेकिन हम जानते हैं कि चुनाव जीतना हमारे मिशन को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

XVIII. बहुलवाद से शक्ति

हमारा गठबंधन सामूहिक मुक्ति के साझा दृष्टिकोण से बंधा हुआ है। हम इस दृष्टिकोण को आयात नहीं करते हैं या किसी एक कार्यक्रम को बाकी पर थोपते नहीं हैं। इसके बजाय, हम अपनी ज़रूरतों, ज्ञान और नीतिगत प्राथमिकताओं को एक साथ जोड़कर एक साझा कार्यक्रम बनाते हैं जो बहुलवाद से शक्ति प्राप्त करता है।

XIX. रिश्ते ही बुनियाद हैं

हमारा अंतर्राष्ट्रीयवाद अंतरंग है। नई प्रौद्योगिकियों ने समुदाय और कनेक्शन का वादा किया, लेकिन इसके बजाय कलह और मोहभंग बोया। हमारा मानना है कि हम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक हम एक–दूसरे को समान शर्तों पर नहीं जानते और भरोसा नहीं करते।

XX. संवाद पर्याप्त नहीं है

हमारा उद्देश्य सामूहिक कार्रवाई है। हम केवल एक सामाजिक नेटवर्क स्थापित करने से संतुष्ट नहीं हैं। हमारी गतिविधियाँ हमें वैश्विक गतिशीलता के लिए तैयार करती हैं, जो हमारे संकटों के पैमाने को उनके खिलाफ़ हमारे द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों के पैमाने से मिलाती हैं।

XXI. लाभ के लिए नहीं, लाभ से नहीं

हम अपनी गतिविधियों को केवल दान और सदस्यों के योगदान के माध्यम से वित्तपोषित करते हैं। हम लाभ कमाने वाली संस्थाओं और जीवाश्म ईंधन कंपनियों, दवा कंपनियों, बड़ी तकनीकी कंपनियों, बड़े बैंकों, निजी इक्विटी फर्मों, हेज फंड, कृषि व्यवसाय और हथियार उद्योग के प्रतिनिधियों से धन स्वीकार नहीं करते हैं।

XXII. हम कोई एनजीओ नहीं हैं

हमारा उद्देश्य एकजुटता है, दान नहीं। हमारा मानना है कि वास्तविक परिवर्तन लोगों के आंदोलनों से आता है, परोपकार के दान से नहीं। हम केवल उन आंदोलनों और समुदायों के प्रति जवाबदेह हैं जिनसे वे विकसित होते हैं।

XXIII. सभी मोर्चों पर लड़ाई

हमारा गठबंधन दुनिया में संघर्ष की विविधता को दर्शाता है। हम यूनियनों, पार्टियों, आंदोलनों, प्रकाशनों, शोध केंद्रों, पडोसी संघों और व्यक्तिगत कार्यकर्ताओं का उनके अकेले संघर्ष में स्वागत करते हैं। साथ मिलकर, यह गठबंधन अपने भागों के योग से भी बड़ा है, और दुनिया को फिर से बनाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है।

XXIV. प्रत्येक से, और प्रत्येक को

सदस्यता का हमारा मॉडल सरल हैः प्रत्येक से, क्षमता के अनुसार; और प्रत्येक को, आवश्यकता के अनुसार। हम सदस्यों से अपेक्षा करते हैं कि वे हमारे साझा मोर्चे के निर्माण में हर संभव तरीके से भाग लें। और हम सदस्यों को उनके संघर्ष की मांग के अनुसार हर संभव तरीके से समर्थन देने का प्रयास करते हैं।

XXV. एकजुटता एक नारा नहीं है

हमारा मानना है कि एकजुटता एक क्रिया है। हमारे सहयोगियों के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति आम बात है। हमारा काम उनके संघर्ष को अपना संघर्ष मानना, अपने समुदायों को उस संघर्ष में भाग लेने के लिए संगठित करना और लोगों और ग्रह की आम रक्षा में सीमाओं के पार सेना में शामिल होना है। ■

'सितंबर 2020 में आयोजित प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल के उद्घाटन शिखर सम्मेलन के बाद घोषणा को अपनाया गया। आंदोलन और इसकी पहलों के बारे में अधिक जानकारी https://progressive.international पर पाई जा सकती है।

> बोगोटा घोषणा :
पृथ्वी के साथ समझौते की ओर

इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट ऑफ़ द साउथ द्वारा

श्रेय : पैक्टो इकोसोशल ई इंटरकल्चरल डेल सुर, 2023 ।

कोविड–19 महामारी प्रारम्भ के बाद, ''न्यू नार्मल'' अव्यवस्था और अस्थिरता के लक्षणों के साथ थोपा गया है। यह नयी वैश्विक यथास्थिति कई परस्पर जुड़े संकटों (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य और भू–राजनीतिक) के बिगड़ने को दर्शाती है, जो सभ्यतागत आयाम रखते हुए एक दूसरे को मजबूत करते हैं। बड़ी चिंता के साथ, हम दुनिया भर में सस्थाओं और लोकतान्त्रिक आचरण को कमजोर होते देखते हैं, वहीं समानांतर रूप से धुर दक्षिणवादी विचारधाराओं और अधिनायकवाद के मजबूत होने और अनेक स्तरों पर गहन रूप से पूंजीवाद, औपनिवेशवाद, और पितृसत्ता तथा नस्लवाद के प्रकोपन से जुडी युद्ध की संस्कृति का जारी रहना भी देखते हैं।

> युद्ध की नई संस्कृति के विरुद्ध

वर्तमान ऐतिहासिक क्षण में, हमें वर्तमान में लड़े जा रहे युद्ध के विभिन्न स्तरों में अंतर करना होगा।

इनमें से पहला युद्ध जीवन और प्रकृति के विरुद्ध है। सैन्यीकरण और बढ़ती हिंसा से क्षेत्र तबाह हो रहे हैं, जो महिलाओं और प्रकृति के रक्षकों के शरीर पर विशेष रूप से तीव्रता से व्यक्त होता है, खासकर जब वे स्वदेशी या मूल लोगों, या नस्लीय और जातीय रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों, विशेष रूप से अफ्रीकी–वंशजों से संबंधित होते हैं। वैश्विक और भू–राजनीतिक दृष्टि से, इन युद्ध ों में से एक, रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण ने अंतर–साम्राज्यीय

> >

प्रतिद्वंद्विता के संदर्भ में परमाणु खतरे को पुनर्जीवित करने के साथ ही ऊर्जा, मानवीय और खाद्य संकटों को उत्तेजित किया है।

इसी तरह, पितृसत्तात्मक, नस्लवादी, ट्रांसफोबिक और ज़ेनोफोबिक धुर दक्षिणपंथी विचारधाराओं की वैश्विक वृद्धि के साथ राजनैतिक व्यस्थाओं पर धन और विश्व व्यापर संघ के नियमों के द्वारा बढ़ते नियंत्रण ने पूंजी की पूर्ण प्रधानता थोपी है, विशेष रूप से वित्तीय, हाइड्रोकार्बन, कृषि व्यवसाय, हथियार, मोटर वाहन, कॉर्पोरेट मीडिया और दवा क्षेत्र में। ऐसा विशेषकर लोगों के अधिकारों और स्वयं जीवन पर किया गया है। वही उत्पादक क्षेत्रों जो सबसे स्पष्ट रूप से पूंजी द्वारा इस नियंत्रण को दर्शाते हैं, उन पर नवउदार पूंजीवाद की विशेषता वाले जीवन के खिलाफ युद्ध की सबसे बड़ी जिम्मेदारी भी है। अतः, एक न्यायोचित पारिस्थितिक–सामाजिक रूपांतरण में सांस्थानिक, अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, और प्रादेशिक राजनैतिक क्षेत्रों से लेकर स्व–प्रबंधन और क्षेत्रीय तथा स्थानीय स्वायत्ता के रूपों के निर्माण से लोकतंत्र के अपने सभी पक्षों की रक्षा आवश्यक रूप से सम्मिलित है।

दूसरा, यह युद्ध कॉर्पोरेट 'हरित रूपांतरण' से जुड़े शोषणवाद के दोनों पारम्परिक और नए स्वरूपों के प्रकोपन में योगदान दे रहा है। जो अब नया है वह इस तथ्य में है कि वैश्विक उत्तर का तथाकथित 'साफ़' ऊर्जा के प्रति ऊर्जा संक्रमण वैश्विक दक्षिण पर उच्च– तकनीक की बैटरियों के निर्माण के लिए कोबाल्ट और लिथुनियम के साथ साथ संक्रमण के लिए अन्य सामरिक खनिजों के निष्कर्षण के लिए बढ़ते दबाब के द्वारा प्रदर्शित होता है। यह दबाब पवन चक्की की ब्लेड के निर्माण में आवश्यक बालसा लकड़ी की मांग या फिर वृहद स्तरीय सौर फार्म और हाइड्रोजन मेगाप्रोजेक्ट्स के लिए नई अवसंरचना के लिए आवश्यक भूमि के लिए प्रतिस्पर्धा में दिखाई देता है।

हाल के वर्षों में, भिन्न भिन्न ग्रीन डील प्रस्ताव बढे हैं; वे विविधतापूर्ण और विषम दोनों ही हैं। हालांकि, सामान्य तौर पर, वे कार्बन उत्सर्जन को कम करने और कथित रूप से "न्यायोचित" और "टिकाऊ" आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक उत्तर में राजनीतिक–विचार–विमर्श संगम का एक ढांचा बन गए हैं। जलवायु न्याय को अक्सर इन ग्रीन समझौतों के केंद्र में देखा जाता है जहाँ वे उन समुदायों को क्षतिपूर्ति हेतु धनराशि आवंटित करते हैं जो ऐतिहासिक रूप से नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों से पीड़ित रहे हैं। लेकिन अक्सर, जलवायु न्याय एक घरेलू दृष्टि तक ही सीमित रह पाता है। नवीकरणीय ऊर्जा की तरफ बदलाव की अपनी उत्सुकता में, वैश्विक उत्तर शायद ही कभी वैश्विक दक्षिण पर इस बदलाव के पढ़ने वाले कई प्रभावों पर विचार करता है।

इस प्रकार, ब्रेनो ब्रिंजल और मरिस्टेला स्वाम्पा जिसे "वि–कार्बनीकरण मतैक्य" कहते हैं, उभरता है: एक प्रक्रिया जो, यद्यपि ऊर्जा के स्त्रोतों में परिवर्तन (जीवाश्म ईंधन से 'अक्षय' ऊर्जा) का समर्थन करती है, मौजूदा असमानताओं को गहरा करती है और प्रकृति का वस्तुकरण जारी रखती है। यह एक ऐसा मतैक्य है जो समाज के चयापचयी प्रोफाइल – माल के उत्पादन, उपभोग, संचरण के पैटर्न और अपशिष्ट उत्पादन–को बिना परिवर्तित किये वि–कार्बनीकरण को प्राप्त करने का लक्ष्य रखता है– लेकिन इसमें अनिश्चित आर्थिक वृद्धि की विचारधारा के ढांचे के अंतर्गत यह प्राकृतिक वस्तुओं के दोहन की तीव्रता सम्मिलित है।

इस परिदृश्य को देखते हुए, हम साउथ–साउथ मैनिफेस्टो फॉर एन एकोसोशल एनर्जी ट्रांजीशन में हाल ही में प्रस्तुत अपने दावों को दोहराते हैं । हम भी लैटिन अमेरिका और पूरे विश्व में परिवर्तन की अत्यंत आवश्यकता की पुष्टि करते हैं, जैसा कि प्रतिरोध करने वाले लोगों की आवाज़ों द्वारा और हमारे क्षेत्र के विभिन्न अक्षांशों में होने वाले हाल ही के विद्रोहों ने मांग की है। एक सतही परिवर्तन, जैसा कि आधिपत्यवादी कर्त्ताओं द्वारा प्रस्तावित किया गया है, पर्याप्त नहीं है। वर्तमान में, विशाल निगम भी 'न्यायसंगत परिवर्तन' के बारे में बात करना शुरू कर रहे हैं और यह तथ्य छुपा कर कि यह संचय, बेदखली और शोषण के सामान तर्क तो पुनरुत्पादित करता है, 'डी–कोर्बोनाइजेशन सर्वसम्मति'' को अपने आप में एक अंत के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें 'हरित पूंजीवाद' की नई प्रगति को उजागर करने और उसका दृढ़तापूर्वक विरोध करने की आवश्यकता है, तथा स्वयं को एक ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध करना होगा जो जीवन के ढांचे के साथ संतुलन और पारस्परिकता में अस्तित्व के अन्य तरीकों को मान्यता प्रदान करे और उनके लिए मार्ग प्रशस्त करे।

कार्बन उत्सर्जन को कम करना अत्यावश्यक है, लेकिन पूंजी के वर्तमान सामाजिक चयापचय पर सवाल उठाना भी आवश्यक है। आधिपत्यवादी 'संक्रमण' कार्यक्रम कॉर्पोरेट, तकनीकी, नव–उपनिवेशवादी और यहां तक कि असंवहनीय अवधारणाओं पर आधारित हैं, जो संरचनात्मक परिवर्तनों की वकालत नहीं करते हैं, ग्रह की प्राकृतिक और पारिस्थितिक सीमाओं को शामिल करना तो दूर की बात है। इकोसोशल पैक्ट में हम इन दृष्टिकोणों पर सवाल उठाते हैं और सामाजिक–पारिस्थितिक परिवर्तन को वैश्विक न्याय के तर्क में निहित करने की आवश्यकता को पहचानते हैं, जो पारिस्थितिक संक्रमण के लिए आधिपत्यपूर्ण प्रस्तावों के लिए महत्वपूर्ण और वैकल्पिक दोनों है।

> हमारे सिद्धांत और एजेंडा

कोविड–19 महामारी के बाद हमारी पहली व्यक्तिगत बैठक के दौरान, बोगोटा में, हम निम्नलिखित सिद्धांतों से पहचाने जाते हैं: समानता, न्याय और सामाजिक पुनर्वितरण के सिद्धांत; देखभाल, अन्योन्याश्रितता और जीवन की धारणीयता के सिद्धांत; क्षतिपूर्ति और पारस्परिकता का सिद्धांत; और प्रजातंत्र, आत्मनिर्णय, बहुराष्ट्रीयता, अंतरसांस्कृतिकता, और अंतरजातीय नीति का सिद्धांत।

हम अपने उद्देश्यों की पुनः पुष्टि करते हैं तथा कार्रवाई के लिए निम्नलिखित विषयों और एजेंडों में निरंतरता का प्रस्ताव करते हैं :

1. हम **समाज के संगठन में देखभाल प्रतिमान को केंद्रीयता देने के लिए** प्रतिबद्ध हैं.

हम देखभाल के सभी रूपों का उल्लेख करते हैं: अंतर्वैयक्तिक देखभाल, खुद की देखभाल, और इस पृथ्वी पर हमारे साथ अन्योन्याश्रितता में रह रहे गैर–मानव प्राणियों की देखभाल। संबंधपरक और पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बहाल करने के लिए देखभाल बुनियादी है। अपने जीवन के कुछ विशेष क्षणों में या विभिन्न चरणों में हम सब को देखभाल की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा पहलू है जिसे स्वायत्त व्यक्तिगत विषय के पितृसत्तात्मक/नवउदारवादी आख्यान द्वारा व्यवस्थित रूप से अनदेखा किया गया है। कल्याण के एक प्रमुख पहलू के रूप में, देखभाल को समाज के सभी सदस्यों द्वारा, चाहे उनका लिंग कुछ भी हो, सक्रिय रूप से ग्रहण और साझा किया जाना चाहिए। इसके कथित स्त्रियोचित कार्य के रूप में स्थापित करने की धारणा को समाप्त किया जाना चाहिए। इस प्रकार, पितृसत्ता की गतिशीलता के भीतर, महिलाओं (विशेष रूप से गरीब, नस्लीय महिलाओं; स्वदेशी महिलाओं; और जो हाशिए पर हैं) ने प्रजनन के क्षेत्र में काम के अधिभार के साथ देखभाल के लिए लगभग पूरी जिम्मेदारी संभाली है जो जीवन की स्थितियों को प्रभावित करती है। देखभाल को जीवन और खुशी के

>>

लिए आवश्यक कार्यों के एक कुलक के रूप में पहचाना और महत्व दिया जाना चाहिए, जैसा कि महामारी के दौरान फिर से स्पष्ट हो गया। यह स्वचालित रूप से पारिश्रमिक और बाजार या राज्य के क्षेत्र में शामिल होने में तब्दील नहीं होता है, क्योंकि यह तथ्य कि पूंजी संचय के दायरे से बाहर देखभाल के कई रूप मौजूद हैं, पूंजीवादी तर्क से परे समाजों के निर्माण के लिए एक बीज है। सामूहिक रूप से या समुदाय में देखभाल और जीवन प्रजनन के कुछ पहलुओं को मानना कॉमन्स के निर्माण का आधार है, जैसा कि लैटिन अमेरिका में कई अनुभवों से पता चलता है। इसका मतलब यह नहीं है कि राज्यों को ऐसी देखभाल नीतियाँ नहीं बनानी चाहिए जो इन सामुदायिक स्थानों को मजबूत करें, अधिक विशिष्ट देखभाल की जिम्मेदारी लें या सामाजिक कल्याण के केंद्रीय पहलू के रूप में देखभाल को बढ़ावा दें।

2. हम वैश्विक दक्षिण से न्यायोचित पारिस्थितिक–सामाजिक संक्रमण के ढांचे में **पारिस्थितिक ऋण और अनंत (बाह्य) ऋणों** को सम्बोधित करना करना आवश्यक मानते हैं।

इन ऋणों के लिए क्षतिपूर्ति और उन्मूलन को शामिल किए बिना कोई भी जलवायु न्याय या सामाजिक–पारिस्थितिक परिवर्तन संभव नहीं है। कोविड–19 महामारी ने ऋण समस्या और वास्तविक, न कि केवल अस्थायी या बहुत ही अल्पकालिक राहत, समाधानों की तत्काल आवश्यकता को उजागर किया। हम समझते हैं कि समग्र, सत्तामीमांसीय न्याय और क्षतिपूर्ति के संदर्भ में सभी के लिए सम्मानजनक जीवन के क्षितिज की गारंटी समग्र रणनीतियों के माध्यम से पारिस्थितिक संक्रमणों की **वर्तमान भू–राजनीति पर सवाल उठाना और पुनर्विचार करना** आवश्यक है। भू–राजनीतिक अंतराल को कम करने से काफी दूर, आधिपत्यपूर्ण संक्रमण प्रस्ताव वैश्विक दक्षिण के साथ औपनिवेशिक और पारिस्थितिक ऋणों को गहरा करने का गंभीर जोखिम उठाते हैं। स्थायी समाधानों की दिशा में प्रगति करने के लिए, वैश्विक दक्षिण देशों के बाहरी ऋणों को रद्द करने, नागरिकों के नेतृत्व वाले ऑडिट और बाहरी ऋण से संबंधित हिंसा और भ्रष्टाचार की बार–बार निंदा करने की मांग करना आवश्यक है, हालांकि यह पर्याप्त नहीं है। संक्षेप में, हमारा प्रस्ताव उन योगदानों को व्यवस्थित करने का प्रयास करता है जो पारिस्थितिक ऋण क्षतिपूर्ति और विदेशी ऋणों के उन्मूलन के मुद्दे को पर्यावरणीय और भू–राजनीतिक न्याय के पैटर्न के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली के पुनर्गठन पर पुनर्विचार करने के अवसर के रूप में देखते हैं।

3. हमारे कार्यों की शुरुआत से ही, एक इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट के रूप में, हमने इस बात पर जोर दिया है कि सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय न्याय को एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में देखे बिना **कोई भी इकोसोशल संक्रमण, जिसका उद्देश्य एक गहन सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन है, संभव नहीं है।** अल्पावधि में, हालाँकि, कुछ संक्रमणकालीन प्रस्ताव आवश्यक हैं, जिसमें एक **सार्वभौमिक बुनियादी आय** की शुरूआत शामिल है जो नागरिकता के मुद्दे को केंद्र में रखती है और इसकी व्यवहार्यता और उचित कामकाज के लिए **प्रगतिशील कर प्रणालियों** पर आधारित है। यह नहीं भूलना चाहिए कि लैटिन अमेरिकी देशों में अप्रत्यक्ष या उपभोग करों पर आधारित एक प्रतिगामी कर प्रणाली है जो मुख्य रूप से सबसे कमजोर लोगों को प्रभावित करती है। बड़ी संपत्ति, विरासत, पर्यावरणीय क्षति और वित्तीय आय सभी कर स्रोत हैं जिन्हें राष्ट्रीय कर प्रणालियों में बहुत कम या बहुत न्यून उपस्थिति मिलती है। सबसे हालिया डेटा बताते हैं कि लैटिन अमेरिका में कर चोरी से लगभग 300 बिलियन डॉलर का राजस्व का नुकसान होता है (क्षेत्रीय सकल घरेलू उत्पाद का 6.1%), और यह कि 27% संपत्ति कर मुक्त देशों में है। इस बीच, कोविड–19 संकट ने **असमानताओं** को और बढ़ा दिया है। हमारे क्षेत्र में, सबसे अमीर 10% व्यक्तियों के पास 55% धन है। तार्किक रूप से, धन का संकेन्द्रण प्रदूषण से संबंधित है, क्योंकि दुनिया की सबसे अमीर 10% आबादी सभी ग्रीनहाउस गैसों का लगभग आधा उत्सर्जन करती है। सार्वभौमिक बुनियादी आय की शुरुआत पुनर्वितरण और गरीबी उन्मूलन के लिए एक आवश्यक रणनीति है, लेकिन इसे जीवन के विमुद्रीकरण, मुफ्त सार्वजनिक अवसंरचनाओं और आम लोगों के विस्तार की दिशा में एक अधिक व्यापक परिवर्तन का हिस्सा होना चाहिए।

4. हम जानते हैं कि कोई भी देश अकेले खुद को नहीं बचा सकता है। 'जलवायु राष्ट्रवाद' और 'राष्ट्रीय संप्रभुता' के प्रवचन अक्सर पारिस्थितिक संकट की गहरी समस्याओं को छिपाते हैं। आबादी पर वास्तविक प्रभाव डालने, सामाजिक ताकतों के संतुलन में बदलाव लाने और हमारे ऐतिहासिक समय की प्रमुख चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक नीतियों के लिए, **नागरिक समाज के एक महत्वपूर्ण हिस्से को शामिल करते हुए राजनीतिक संवाद और क्षेत्रीय सहयोग के नए रूप विकसित किए जाने चाहिए।** हम **बहुराष्ट्रीयता** और **संप्रभु क्षेत्रीय एकीकरण** का बचाव करते हैं, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्राथमिकता देते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था से चुनिंदा अपयुग्मन का लक्ष्य रखते हैं। विभिन्न लैटिन अमेरिकी संगठनों के प्रस्तावों का पालन करते हुए, हमारा मानना है कि हमें एक **क्षेत्रीय राजकोषीय समझौते** के निर्माण की ओर बढ़ना चाहिए जो सभी अधिकार क्षेत्रों में मौजूदा राजकोषीय प्रणाली को एक न्यायसंगत दिशा में मौलिक रूप से पुनर्गठित करता है, जिससे तत्काल आवश्यक सामाजिक और पर्यावरणीय सुधारों का द्वार खुलता है जो कई और हठी असमानताओं को कम कर सकते हैं। इसके बिना, न्यायसंगत और व्यापक पारिस्थितिक परिवर्तन का कोई संभव मार्ग नहीं है।

5. उत्पादन के तरीके के साथ–साथ अल्पावधि में आवश्यक संक्रमणकालीन नीतियों पर भी विचार किया जाना चाहिए। हमें लैटिन अमेरिका में **मौजूदा औद्योगिकीकरण प्रक्रियाओं** और इसके ग्लोबल नॉर्थ के देशों का कारखाना होने के परिणामों को समस्याग्रस्त बनाना चाहिए। उच्च विषाक्तता वाले सच्चे बलिदान क्षेत्रों की स्थापना मेक्सिको, ब्राजील, अर्जेंटीना और चिली जैसे देशों के विशिष्ट क्षेत्रों में औद्योगिक विकास द्वारा सुगम की जाती है, न कि केवल प्राथमिक निर्यात–उन्मुख निष्कर्षण मॉडल द्वारा। लैटिन अमेरिका में 'प्राकृतिक संसाधना' और श्रम के लिए चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच विवाद को देखते हुए इसे और अधिक देशों तक विस्तारित किए जाने का जोखिम अधिक है, जो कच्चे माल की मांग जारी रखेगा और वस्तुओं के शोषण को बढ़ाएगा।

6. यह विषय हमें यह भी विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि कौन से वैकल्पिक उत्पादन प्रस्ताव हमें अन्य प्रतिक्रियाओं की ओर बढ़ने की अनुमति देंगे जो **अंतर–प्रजाति नैतिकता** पर विचार करते हैं और गैर–मानव संवेदनशील प्राणियों के वर्चस्व और शोषण की विशेषता वाले शक्ति संबंधों पर सवाल उठाते हैं। यह वर्तमान मॉडल एक मानव–केंद्रित दृष्टिकोण द्वारा वैध है जो गैर–मानव जीवित प्राणियों को निम्न श्रेणी में रखता है और उन्हें मनुष्यों और पूंजीवादी व्यवस्था की सेवा में वस्तुओं, उत्पादों और निजी संपत्ति में बदल देता है। इसका एक उदाहरण पशुधन, मत्स्य–ग्रहण, दवा, पर्यटन और कपड़ा उद्योग हैं जो जानवरों का एक कार्यबल के रूप में शोषण करते हैं या फिर उनके जीवन की गुणवत्ता और गरिमा की उपेक्षा करते हुए उनके आर्थिक प्रदर्शन को प्राथमिकता देते हुए उन्हें उत्पादों में बदल देते हैं।

>>

7. **पारिस्थितिक–सामाजिक परिवर्तन को ऊर्जा के मुद्दे तक सीमित नहीं रखा जा सकता।** न केवल ऊर्जा व्यवस्था का एक सरंचनात्मक परिवर्तन करना अत्यावश्यक है लेकिन साथ ही उत्पादक तथा नगरीय मॉडल का और प्रकृति के साथ संबंधों का भी: विकेंद्रित करो, निजीकरण को खत्म करो, वस्तुओं को हटाओ, विकेंद्रीकृत करो, पितृसत्तात्मकता को खत्म करो, पदानुक्रम को खत्म करो, नस्लीयता को खत्म करो, मरम्मत करो और उपचार करो। इसे प्राप्त करने के लिए, हमें अपने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे को जीवाश्म ईंधन, प्रकृति के दोहन के जनादेश और विकासवादी और एल डोराडो–प्रेरित कल्पना से अलग करना होगा। हमें वर्तमान सामाजिक–पारिस्थितिक संकट को न केवल जलवायु परिवर्तन की गति के रूप में समझना चाहिए, बल्कि विविधता (प्रजातियों के विलुप्त होने) और एक असंवहनीय खाद्य व्यवस्था के संकट के रूप में भी समझना चाहिए।

8. **ऊर्जा एक अधिकार है और ऊर्जा लोकतंत्र जीवन नेटवर्क को बनाए रखने का एक क्षितिज है।** पारिस्थितिक सामाजिक न्याय का लक्ष्य ऊर्जा गरीबी को खत्म करना होना चाहिए और इसमें शक्ति संबंधों को खत्म करना शामिल है जो समाज के विशेषाधिकार प्राप्त समूह के लिए पहुंच को प्राथमिकता देते हैं। थोड़े समय में, जीवाश्म ईंधन फंसे हुए या अप्रचलित संपत्ति बन जाएंगे। एक न्यायसंगत ऊर्जा संक्रमण क्षितिज में, जीवाश्म ईंधन को भूमिगत छोड़ना और हाइड्रोकार्बन शोषण (इसके नए और पुराने रूपों में) की प्रक्रियाओं को 'कम करने' का निहितार्थ प्रकृति को संसाधनों के मात्र प्रदाता के अलावा किसी और चीज़ के रूप में फिर से परिभाषित करने के अर्थ का विच्छेद है।

9. **प्रभावी डीकार्बोनाइजेशन आवश्यक है, लेकिन इसे वस्तुकरण से दूर जाना चाहिए और वैश्विक दक्षिण में निष्कर्षण और बलिदान क्षेत्रों के नए रूपों को समेकित नहीं करना चाहिए।** हमें 'झूठे समाधानों' के प्रति चौकस रहना चाहिए, जैसा कि नवीकरणीय ऊर्जा (संक्रमण के लिए लिथियम और खनिज) और सभी उत्सर्जन क्षतिपूर्ति योजनाओं की सीमाओं और अस्पष्टताओं से पता चलता है। इसमें COP जैसे क्षेत्रों में निगमों और राज्यों द्वारा वैश्विक दक्षिण के लिए विवादास्पद ऊर्जा मॉडल को लागू करने के लिए आम सहमति शामिल है, जिसमें हरित हाइड्रोजन, स्मार्ट कृषि, कार्बन बाजार, भू–अभियांत्रिकी और अन्य प्रस्ताव शामिल हैं, जिनका उद्देश्य वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के मध्य वर्तमान ऊर्जा शक्ति संबंधों को बनाए रखना है।

10. हमारा मानना है कि **व्यापक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में एक न्यायसंगत पारिस्थितिक सामाजिक परिवर्तन भविष्य के लिए कोई वादा नहीं है और न ही हो सकता है।** ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समुदायों और क्षेत्रों में कई तरह के अनुभवों के माध्यम से और साथ ही दुनिया भर में आधिपत्यवादी मॉडल और झूठे समाधानों की निरंतरता के खिलाफ क्षेत्रीय प्रतिरोधों के माध्यम से भी, परिवर्तन पहले से ही हो रहे हैं । हमें सामुदायिक ऊर्जा, कृषि पारिस्थितिकी परियोजनाओं, शहरी उद्यानों, वितरित उत्पादन और वैकल्पिक अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ी पुनर्अस्तित्व की इन प्रक्रियाओं को तत्काल तैयार करने और उन्हें मजबूत करने की आवश्यकता है।

11. संक्रमण का एक केंद्रीय स्तंभ शहरों और कस्बों में पारिस्थितिक कृषि की हरित पट्टियों के निर्माण और संवर्धन के माध्यम से कृषि–खाद्य प्रणाली को बदलने के लिए **कृषि पारिस्थितिकी को बढ़ावा देना** है, जिससे रोजगार पैदा हो और स्वस्थ, सुरक्षित और सस्ते भोजन की गारंटी हो। इसके अलावा, यह उत्पादन और वितरण प्रणालियों के माध्यम से स्वायत्तता और खाद्य संप्रभुता को बढ़ावा देता है जिसका उद्देश्य छोटे किसानों और एकजुट उत्पादकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्थानीय कृषि–पारिस्थितिक बाजारों को सशक्त बनाना है जो उत्पादन, सहभागी प्रमाणन या गारंटी प्रणाली और उपभोग के लिए एक सहयोगी और सामुदायिक संस्कृति और नागरिक (सह–) जिम्मेदारी को बढ़ावा देते हैं।

12. हम रियल एस्टेट सट्टेबाजी द्वारा और उसके लिए नियोजित शहरों में रहते हैं (इस सिक्के का दूसरा पहलू आवास आपातकाल और हरे भरे स्थानों की कमी है) और यहाँ ऑटोमोबाइल की तानाशाही (अपर्याप्त और भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक परिवहन के साथ) का प्रभुत्व है। इस विशेषता ने शहरी जीवन को सुर्खियों में ला दिया है और महानगरों में हमारे रहने के तरीके में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित किया है। **हमें शहरी जीवन को ग्रामीण बनाना चाहिए, खासकर बड़े शहरों में जहां व्यावहारिक रूप से प्रकृति के साथ संबंध न के बराबर है।** दक्षिण के इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट के माध्यम से, हम शहरी क्षेत्रों में हमारे रहने, खुद को खिलाने, घूमने और एक–दूसरे से संबंध बनाने के तरीके को बदलने के लिए 'पारिस्थितिक न्याय के साथ एक शहर के अधिकार' का प्रस्ताव करते हैं। इसे प्राप्त करने के लिए, हम एक नए प्रकार के पारिस्थितिक और लोकतांत्रिक शहरीकरण की वकालत करते हैं जो निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रभावी सामाजिक–पर्यावरणीय परिवर्तन लाने में सक्षम हैः जल चयापचय (जल और जल प्रशासन तक समान पहुंच), शहरी प्रवाह की गतिशीलता (बेहतर अपशिष्ट और प्रदूषण प्रबंधन, शहरी कृषि को प्रोत्साहित करके और छोटे पैमाने के उत्पादकों के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से गतिशीलता और स्थानीय स्वस्थ खाद्य उत्पादन के टिकाऊ रूप), और शहरी बुनियादी ढांचे (सुलभ, पारिस्थितिक और सम्मानजनक आवास, और शहरीकरण दृष्टिकोण जो सामाजिक–स्थानिक अलगाव और गरीबी, असमानता और हिंसा के चक्र को संबोधित करते हैं)।

13. जहाँ जीवन के लिए परिवर्तन के लिए स्थानीय प्रतिबद्धता, स्वायत्तता को मजबूत करना, तथा राज्यों से कानूनी, सांस्कृतिक, क्षेत्रीय और बजटीय रूप से इनका सम्मान करने और गारंटी देने की मांग एक आवश्यक शर्त है, **लेकिन इन्हें विभिन्न पैमानों (क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, लैटिन अमेरिकी और अंतर्राष्ट्रीय) पर विस्तारित और मजबूत करने की आवश्यकता है।** इसे प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि हम आम दुश्मनों की पहचान और अवज्ञा के साथ आगे बढ़ते रहें, साथ ही परिवर्तनकारी संघर्षों के लिए अभिसारी विमर्शात्मक और राजनीतिक रूपरेखाओं की पहचान भी करें। राजनीतिक अलगाव से बचने और मजबूत वैश्विक प्रतिक्रियाएँ प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीयता और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बीच अनुभवों का आदान–प्रदान बुनियादी है। इस प्रक्रिया में, परिवर्तनकारी संघर्षों में विभिन्न प्रकार के सहयोगियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है, जिसमें विभिन्न सरकारी स्तरों पर कर्त्ता शामिल हैं, लेकिन हमेशा पारिस्थितिक–क्षेत्रीय संघर्षों की अग्रणी भूमिका का सम्मान किया जाना चाहिए।

14. अंत में, हम इस बात से आश्वस्त हैं कि दक्षिण के पारिस्थितिक–सामाजिक और अंतर–सांस्कृतिक समझौते का एक मूलभूत हिस्सा **प्रकृति के अधिकारों** की कानूनी मान्यता है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य को प्रकृति को अधिकारों के विषय के रूप में पहचानना चाहिए (न कि केवल एक वस्तु के रूप में) जिसके साथ इसकी लय और क्षमताओं का सम्मान करते हुए सामंजस्यपूर्ण ढंग से सह–अस्तित्व में रहना चाहिए। इसका तात्पर्य **देखभाल की नैतिकता** की ओर बढ़ना भी है, जिसे संबंधपरक ऑन्टोलॉजी और नई जलवायु चुनौतियों के ढांचे के भीतर, एक **अंतरजातीय नैतिकता** के रूप में

>>

भी परिभाषित किया जाना चाहिए, जो बहुलता, अन्य मानव और गैर–मानव संवेदनशील प्राणियों में और उनके साथ हमारे अस्तित्व पर विचार करती है।

संक्षेप में, हमारा उद्देश्य वास्तव में न्यायपूर्ण बदलावों की ओर उन्मुख एक क्षेत्रीय और वैश्विक एजेंडा के निर्माण में योगदान देना है, जिसके लिए भागीदारी और लोकप्रिय कल्पना की आवश्यकता है, साथ ही विभिन्न पीढ़ियों और प्रकारों, सामाजिक और अंतरसांस्कृतिक समूहों, नारीवादियों और पर्यावरणविदों के संघर्षों के बीच अंतर्संबंध की आवश्यकता है। इसमें निस्संदेह न केवल इन सभी मुद्दों पर गहन बहस शामिल होगी, बल्कि एकजुटता, पारस्परिकता, समानता, अन्योन्याश्रितता और पर्यावरण–निर्भरता के संदर्भ में बहुपक्षवाद की पुनर्परिभाषा के आधार पर स्थायी राजनीतिक उत्तर–दक्षिण और दक्षिण–दक्षिण संवादों का निर्माण भी शामिल होगा।

हमारे क्षेत्र में चल रही परिवर्तन प्रक्रियाओं के प्रति खुली संवेदनशीलता के साथ – आशा की किरणें और नए लोकप्रिय आवेगों के साथ – **लेकिन प्रतिगामी और कुलीनतंत्रीय ताकतों के वजन के बारे में भी जागरूक होकर, दक्षिण के इकोसोशल और इंटरकल्चरल पैक्ट में हम विरोध और प्रस्ताव, आलोचना और विकल्प, प्रतिरोध और प्लूरिवर्स में पुनर्अस्तित्व को बढ़ावा देना जारी रखेंगे।** ऐसा करने के लिए, हमने हाल के दशकों में विभिन्न संघर्षों के माध्यम से गढ़े गए संबंधपरक आख्यानों और क्षितिज अवधारणाओं को फिर से शुरू किया है और हमेशा उनके साथ खड़े हैंरू प्रकृति के अधिकार, अच्छा जीवन, पुनर्वितरण न्याय, देखभाल, न्यायपूर्ण बदलाव, स्वायत्तता, उत्तर–निष्कर्षणवाद, पारिस्थितिक–क्षेत्रीय नारीवाद, खाद्य संप्रभुता और स्वायत्तता।

हम किसी भी समझौते का बचाव नहीं करते हैं । हमारा समझौता प्रमुख कर्त्ताओं के बीच समझौतों और सौदों का आधिपत्यपूर्ण ग्रीन पैक्ट नहीं है, बल्कि वैश्विक दक्षिण की ओर से और उसके लिए पृथ्वी के साथ एक समझौता है। यह एक ऐसा समझौता है जिसे दुनिया में होने और अस्तित्व के अन्य तरीकों के प्रति प्रतिबद्धता के रूप में समझा जाता है। ■

'बोगोटा घोषणापत्र का मसौदा मार्च 2023 में कोलंबिया के बोगोटा में आयोजित दक्षिण के इकोसोशल पैक्ट की वार्षिक सभा के बाद तैयार किया गया था। दक्षिण के इकोसोशल पैक्ट के बारे में अधिक जानकारी इसकी वेबसाइट या इसके X, फेसबुक और इंस्टाग्राम नेटवर्क पर पाई जा सकती है।

> नाइजीरिया में सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्पों के लिए घोषणापत्र

नाइजीरिया सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्पों के अभिसरण द्वारा

श्रेय : ब्रेनो ब्रिंगेल, अबुजा, नाइजीरिया, 2024।

नाइजीरिया प्रमुख सामाजिक और पारिस्थितिक खतरों की अग्रिम पंक्ति में है। पिछले कुछ दशकों में, देश के सामने आने वाली चुनौतियाँ बहुत बढ़ गई हैं, जो नाइजीरियाई लोगों की भलाई और यहाँ तक कि उनके अस्तित्व को खतरे में डालने वाले प्रभावों की कई परतों के माध्यम से उजागर होती हैं। हालाँकि देश ने दुनिया में सबसे अच्छी जलवायु और सबसे विविध पारिस्थितिकी प्रणालियों का आनंद लिया है, लेकिन यह विशाल प्राकृतिक संपदा अब जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हानि, प्रदूषण और अन्य पारिस्थितिक क्षति के कारण एक नाजुक मोड़ पर है। दशकों से लापरवाह और खराब तरीके से विनियमित खनिज निष्कर्षण, 'शहरीकरण' और 'औद्योगीकरण' के नाम पर व्यवस्थित पर्यावरणीय दुर्दशा, खराब नीति विकास और कार्यान्वयन, और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव ने मिलकर देश को गंभीर अस्तित्वपरक पारिस्थितिक खतरों के साथ प्रस्तुत किया है। सभी मोर्चों पर पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ रहे हैं, समुदाय संकट में हैं और भविष्य अनिश्चित है।

इन खतरों की स्पष्ट प्रकृति के बावजूद, संघीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर नाइजीरियाई अधिकारी बेफिक्र हैं और ऐसे कार्यों को अनुमति दे रहे हैं जो स्थानीय लोगों के लिए नुकसानदेह प्राकृतिक पर्यावरण के बेतहाशा दोहन और व्यवस्थित विनाश को बढ़ावा दे रहे हैं। नाइजीरियाई राज्य और उसके लोगों के सामने यह कठोर वास्तविकता है कि सामाजिक–पारिस्थितिक संकट के मौजूदा और उभरते प्रभावों को रोकने के लिए कुछ सुचिंतित, मौलिक और क्रांतिकारी किया जाना चाहिए।

हम यहाँ जो चार्टर प्रस्तुत कर रहे हैं, वह नाइजीरिया के सामाजिक–पारिस्थितिक परिदृश्य के गहन सुधार के लिए एक साहसिक आह्वान है। यह एक स्थायी, न्यायसंगत और समतापूर्ण सामाजिक–पारिस्थितिक व्यवस्था के लिए एक दृष्टि और खाका प्रस्तुत करता है जो लोगों की भलाई और प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा को सर्वोच्च मूल्य देता है।

हम जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, वे अभूतपूर्व हैं। पूरे देश से जंगल काफी हद तक गायब हो गए हैं। हवा लगातार जहरीली होती जा रही है। जल स्रोत अत्यधिक दूषित हो गए हैं। नाइजर डेल्टा, जो कभी एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र था, लंबे समय से पारिस्थितिकीय अनुपात के हाइड्रोकार्बन प्रदूषण से जुड़ा हुआ है। बड़े पैमाने पर मरुस्थलीकरण हो रहा है, और सूखा आम बात हो गई है। जल निकाय सिकुड़ रहे हैं और गायब हो रहे हैं। बाढ़ अधिक गंभीर और नियमित हो रही है। तटीय समुद्र का स्तर तेजी से बढ़ रहा है और समुदायों को निगल रहा है। कृषि उपज घट रही है। इसलिए यह जरूरी है कि हम इस समय दृढ़ संकल्प और तत्परता के साथ काम करें, और यह चार्टर इन चुनौतियों में से सबसे जरूरी का सामना करने की योजना की रूपरेखा तैयार करता है।

हमारा दृष्टिकोण एक ऐसे नाइजीरिया का है जहाँ पारिस्थितिक अखंडता, सामाजिक न्याय और आर्थिक कल्याण सह–अस्तित्व में हों। हमें एक नए नाइजीरिया को जन्म देना चाहिए जहाँ प्रकृति के अधिकारों का सम्मान हो, जहाँ समुदायों का अपने संसाधनों पर नियंत्रण हो और संसाधन लोकतंत्र का आनंद मिलता हो, और जहाँ सभी के पास स्वच्छ हवा, पानी और स्वस्थ पर्यावरण तक पहुँच हो। यह घोषणापत्र इस दृष्टिकोण की ओर एक मार्ग की रूपरेखा तैयार करता है, जो पर्यावरण न्याय, सहभागी लोकतंत्र और सतत विकास के सिद्धांतों पर आधारित है। हम एक ऐसे नाइजीरिया की कल्पना करते हैं जहाँ नाइजीरियाई अपने पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों को आगे बढ़ाते हैं।

> >

> नाइजीरिया सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्प चार्टर के मुख्य सिद्धांत

यह चार्टर निम्नलिखित मुख्य सिद्धांतों और वैचारिक उपदेशों पर आधारित है :

- **पारिस्थितिक न्याय।** यह सिद्धांत गरीब और हाशिए पर पड़े समुदायों के लोगों पर पर्यावरणीय गिरावट और जलवायु परिवर्तन के असंगत प्रभाव को पहचानता है और राष्ट्रीय और वैश्विक पर्यावरणीय और जलवायु परिवर्तन प्रतिक्रियाओं में इस असमानता को पहचानने पर जोर देता है।

- **लोगों की भागीदारी।** यह सिद्धांत सक्रिय और लचीले समुदायों के उद्भव पर जोर देता है जो अपने जीवन और पारिस्थितिक कल्याण को प्रभावित करने वाली सभी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए सशक्त हैं।

- **संधारणीयता।** यह सिद्धांत स्वदेशी लोगों के लचीलेपन और ज्ञान को स्वीकारता है और पर्यावरण की रक्षा करने और आगे की संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देने वाले स्थायी दीर्घकालिक पारिस्थितिक समाधान और प्रथाओं को विकसित करने में उनकी क्षमताओं, संस्कृति और कौशल को बढ़ावा देता है।

- **जवाबदेही।** यह सिद्धांत निगमों और सरकारी संस्थाओं को उनके पारिस्थितिक पदचिह्नों के लिए जवाबदेह ठहराने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। यह इस दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि निगमों और सरकारों को किसी भी तरह का नुकसान न पहुँचाने के स्थापित नियमों और सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, इनका उल्लंघन करने पर दंड का सामना करना चाहिए और अपनी गतिविधियों से होने वाले किसी भी नुकसान की भरपाई करनी चाहिए।

- **एकजुटता और भागीदारी।** यह सिद्धांत दुनिया भर में विभिन्न समुदायों और आंदोलनों के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देने के मूल्य को पहचानता है, जिसका समग्र उद्देश्य पारिस्थितिक परिवर्तन और पृथ्वी की सुरक्षा के लिए मजबूत, जीवंत और एकजुट ताकतों का निर्माण करना है।

> मांगों का चार्टर

1. सूखा और मरुस्थलीकरण

हाल के दशकों में, उत्तरी नाइजीरिया के राज्यों में सूखे की स्थिति में वृद्धि देखी गई है। औसत से कम वर्षा की ये लंबी अवधि जो फसलों और पशुओं के लिए पानी की आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रहती है, लोगों की समग्र सामाजिक–आर्थिक भलाई के लिए एक भयावह दृष्टिकोण बन गई है। मुख्य रूप से किसान होने के कारण, प्रभावित क्षेत्रों में स्वदेशी लोगों को विफल फसलों और पशुओं की मृत्यु के कारण आय में महत्वपूर्ण कमी का सामना करना पड़ता है।

सूखा गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों के माध्यम से भी प्रकट होता है जो स्वदेशी आबादी को खतरनाक रूप से प्रभावित कर सकता है। जल तनाव और पर्याप्त पोषण की कमी से कुपोषण जैसी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ होती हैं, खास तौर पर बच्चों और बुजुर्गों सहित कमजोर समूहों में। सूखे से उत्पन्न फसल विफलता और पानी की कमी से पैदा हुई समग्र निर्धनता और अनिश्चितता ग्रामीण आबादी को पलायन करने के लिए मजबूर करती है, जिससे संघर्ष शुरू होते हैं और सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँ पैदा होती हैं।

जलवायु परिवर्तन, अतिचारण, वनों की कटाई और अधारणीय भूमि उपयोग के व्यवहार के प्रभाव के साथ–साथ लंबे समय तक सूखे के संपर्क में रहने से उत्तरी नाइजीरिया के कई राज्यों में मरुस्थलीकरण हुआ है। इस का परिणाम कृषि योग्य भूमि का नुकसान है, जिससे खाद्य सुरक्षा और आजीविका प्रभावित होती है। रिकॉर्ड बताते हैं कि मरुस्थलीकरण ने पहले ही फ्रंट–लाइन राज्यों में लगभग 75% भूमि को प्रभावित किया है, जो नाइजीरिया के कुल भूमि क्षेत्र का लगभग 43% है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि रेगिस्तान नाइजीरिया के उत्तर–पूर्व से उत्तर–पश्चिम तक सालाना 600 मीटर तक फैलता है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि उत्तरी नाइजीरिया में लगभग 50% जल निकाय सूखे और मरुस्थलीकरण के कारण काफी सिकुड़ गए हैं। चाड झील के सिकुड़ने के लिए आंशिक रूप से इन्हीं मूल कारणों को जिम्मेदार ठहराया गया है।

यह महत्वपूर्ण है कि सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए तत्काल और उचित कार्रवाई करे कि कमजोर लोगों पर सूखे और मरुस्थलीकरण के प्रभाव को कम किया जा सके, और इस प्रवृत्ति को उलटने के लिए अन्य नीतिगत उपाय किए जाएँ।

इसके अनुरूप, लोग वनरोपण और पुनर्वनरोपण पहलों, सामुदायिक अनुकूलन रणनीतियों के लिए समर्थन, पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ भूमि प्रबंधन और जल संरक्षण परियोजनाओं की मांग करते हैं।

2. बाढ़

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के अनुसार, नाइजीरिया में सबसे आम और बार–बार आने वाली आपदा बाढ़ है। कम से कम 2012 से, नाइजीरिया ने बार–बार और लगातार गंभीर खाद्य पदार्थों का अनुभव किया है, जो देश भर के समुदायों को विनाशकारी परिणामों के साथ प्रभावित करते हैं। 2012 की बाढ़ हाल के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण बाढ़ों में से एक थी, जिसने नाइजीरिया के 36 राज्यों में से 30 से अधिक को प्रभावित किया, लाखों लोगों को विस्थापित किया और घरों, बुनियादी ढांचे और कृषि भूमि को व्यापक नुकसान पहुंचाया। इस घटना ने देश के सामने आने वाली पारिस्थितिक चुनौतियों को और तीव्र किया ।

बाद के वर्षों में, गंभीर बाढ़ का पैटर्न जारी रहा है, जिसमें लगभग हर साल बड़ी घटनाएं होती हैं। बाढ़ को अक्सर भारी और लंबे समय तक होने वाली वर्षा, खराब शहरी जल निकासी व्यवस्था, वनों की कटाई और बांधों से पानी छोड़े जाने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। 2018 और 2020 में आई बाढ़ विशेष रूप से विनाशकारी थी, जिसने बड़े क्षेत्रों को प्रभावित किया और काफी आर्थिक नुकसान पहुंचाया।

नाइजीरियाई समुदायों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। बाढ़ के कारण लगातार लोगों की जान जा रही है, परिवार विस्थापित हो रहे हैं और सड़कों, पुलों और स्कूलों सहित महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे का विनाश हो रहा है। कृषि क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ है, खेत डूब गए हैं, फसलें नष्ट हो गई हैं और पशुधन खो गए हैं, जिससे किसानों को आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है और राष्ट्रीय खाद्यान्न की कमी हो रही है। इसके अतिरिक्त, जलजनित बीमारियों और स्वच्छ जल आपूर्ति में व्यवधान के कारण स्वास्थ्य जोखिम बढ़ गए हैं।

इन प्रभावों के तीव्र होने के बावजूद, सरकार प्रभावी और टिकाऊ दोनों तरह की प्रत्युत्तर तैयार करने में विफल रही है। अधिकारियों की प्रतिक्रिया मुख्य रूप से आपातकालीन राहत और प्रारंभिक चेतावनियाँ प्रदान करने तक ही सीमित रही है। बाढ़ के प्रभावों को पूरी तरह से कम करने के लिए ये उपाय अक्सर अक्षम और अपर्याप्त

> >

रहे हैं। जब बाढ़ की चेतावनी प्रसारित की जाती है, तो पुनर्वास की आवश्यकता वाले समुदायों और जिनके अस्तित्व को खतरा है, उनकी सहायता के लिए कोई समान प्रयास नहीं किया जाता है।

इसके अनुरूप, लोग बाढ़ नियंत्रण बुनियादी ढाँचा, आर्द्रभूमि की सुरक्षा, अत्यधिक प्रभावित समुदायों का पुनर्वास, आर्थिक सहायता, सरल प्रारंभिक चेतावनियों से आगे बढ़ना और जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिक्रियाओं की मांग करते हैं ।

3. वनों की कटाई

नाइजीरिया में वनों की कटाई की दर दुनिया में सबसे ज़्यादा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, हर साल इसके अनुमानित 3-7% वन नष्ट हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण कृषि विस्तार के लिए तेजी से भूमि को साफ करना और लकड़ी के लिए कटाई, कानूनी और अवैध दोनों, करना है, जो मुख्य रूप से भ्रष्टाचार और अप्रभावी कानून प्रवर्तन से जुड़ा हुआ है। नाइजीरिया का वन क्षेत्र 1960 के दशक में लगभग 40% से घटकर 10% से भी कम रह गया है। वनों की कटाई की बढ़ती दर के साथ, आज परिदृश्य बहुत खराब हो गया है। वनों की कटाई जैव विविधता को खतरे में डालती है, जलवायु परिवर्तन में योगदान देती है और जल चक्र को बाधित करती है। वन क्षेत्र का नुकसान न केवल वन्यजीवों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, बल्कि स्थानीय समुदायों पर भी पड़ता है जो अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर हैं।

हाल ही में वनों के खिलाफ नए खतरे सामने आए हैं। नाइजीरिया में वनों को राज्यों के खजाने को भरने के लिए राजस्व उत्पन्न करने वाले एक अन्य स्रोत के रूप में देखा जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप वनों को उनके मौद्रिक मूल्य के लिए काटने के लिए अभूतपूर्व दबाव डाला गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि हाल के दिनों में, जलवायु परिवर्तन को कम करने के वैश्विक प्रयासों के परिणामस्वरूप वनों के 'वस्तुकरण' और भ्रामक कार्बन क्रेडिट उत्पन्न करने के लिए उनके मूल्य के लिए 'हड़पने' की एक नई लहर आई है। बिना इस विश्वास के जाल में फंसे कि प्रकृति की रक्षा तब तक नहीं की जा सकती जब तक कि उसका कोई वित्तीय मूल्य न जुड़ा हो, वनों के मूल्य का मूल्यांकन मौद्रिक रूप में नहीं किया जा सकता है ।

इसके अनुरूप, लोग वनों की रक्षा के लिए सामुदायिक पहल, प्रकृति के वित्तीयकरण का अंत, वृक्षारोपण विस्तार का अंत और पुनः वनरोपण की मांग करते हैं।

4. जल अधिकार

दुनिया भर में अरबों लोगों को अभी भी स्वच्छ जल तक पहुँच नहीं है, महिलाओं, बच्चों और समाज के निम्न वर्ग जैसे कमजोर समूहों को इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनुपातहीन रूप से कष्ट सहना पड़ता है और अत्यधिक राशि खर्च करनी पड़ती है। कई मामलों में, यह कमी और अभाव सार्वजनिक स्वास्थ्य, सुरक्षा और लोगों के समग्र कल्याण में गिरावट का कारण बनता है। नाइजीरिया सहित विकासशील देशों में संकट और भी बदतर है, जहाँ आर्थिक बाधाएँ, अवसंरचना की कमियाँ, नव–औपनिवेशिक षड्यंत्र, पर्यावरणीय चुनौतियाँ और शासन की प्रणालीगत विफलताएँ मिलकर जल अधिकारों को एक दबावपूर्ण राष्ट्रीय और पर्यावरणीय आपातकाल और समाज में व्याप्त विषमताओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति बनाती हैं। नाइजीरिया में, जल संसाधनों के सार्वजनिक स्वामित्व और निजी नियंत्रण के बीच संघर्ष में, इस बात पर बहस चल रही है कि जल को सार्वजनिक वस्तु माना जाना चाहिए या आर्थिक वस्तु।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पूंजीवादी संरचनाओं के औपनिवेशिक अधिरोपण ने प्रारंभिक स्थितियाँ स्थापित कीं, जिसके परिणामस्वरूप अंततः नाइजीरिया में जल चुनौतियाँ अनुभव की जा रही हैं। उन नीतियों ने प्राकृतिक संसाधनों और श्रम के दोहन को बढ़ावा दिया। इसने उत्तर–औपनिवेशिक नीतियां, जो पानी को एक व्यावसायिक संसाधन के रूप में प्रबंधित करना जारी रखती हैं, के लिए एक मिसाल कायम की है। जल आपूर्ति पर पड़ने वाला दबाव जलवायु परिवर्तन और व्यापक प्रदूषण के प्रभावों से बढ़ रहा है, खासकर हाइड्रोकार्बन निष्कर्षण और खनन के परिणामस्वरूप।

लोग साहसपूर्वक घोषणा करते हैं कि जल अधिकार नैतिक, सामाजिक और न्याय संबंधी मुद्दे हैं। हम देखते हैं कि नाइजीरिया जल और स्वच्छता के सार्वभौमिक अधिकार (2010 का संकल्प 64/292) की संयुक्त राष्ट्र मान्यता का एक हस्ताक्षरकर्ता है। इसके अलावा, नाइजीरिया में जल निकायों का प्रदूषण प्रकृति के अधिकारों का उल्लंघन है जो नदियों, जंगलों और पारिस्थितिकी तंत्रों को अधिकार वाली संस्थाओं के रूप में मान्यता देता है।

इसके अनुसार, लोग जल प्रबंधन का विकेंद्रीकरण, पानी के व्यावसायीकरण के खिलाफ प्रतिरोध, स्वच्छ पानी तक पहुँच को मानव अधिकार के रूप में मान्यता, पानी को प्रदूषित करने के लिए सख्त प्रतिबंध और प्रकृति के अधिकारों की मान्यता की मांग करते हैं।

5. जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र बहाली

नाइजीरिया में विविध पारिस्थितिकी तंत्र हैं, जिनमें वर्षावन और सवाना से लेकर तटीय मैंग्रोव और आर्द्रभूमि तक शामिल हैं। ये पारिस्थितिकी तंत्र सूक्ष्मजीवों, पौधों और जानवरों की एक विस्तृत श्रृंखला को पोषित करते हैं, जिनमें पृथ्वी पर कहीं और नहीं पाई जाने वाली कई प्रजातियाँ शामिल हैं। नाइजीरिया में पक्षियों की 864 से अधिक प्रजातियाँ, 117 उभयचर, 203 सरीसृप, 775 मछलियाँ, 285 स्तनधारी, 4,715 संवहनी पौधे और कई अनिर्दिष्ट प्रजातियाँ हैं।

नाइजीरिया की जैव विविधता औद्योगिक कृषि (कृषि रसायनों के अत्यधिक उपयोग, अत्यधिक जुताई, मोनोकल्चर आदि की विशेषता), वनों की कटाई, मिट्टी के क्षरण, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन और जलवायु परिवर्तन से गंभीर खतरों का सामना करती है। अन्य जोखिमों में अधिक जनसंख्या, तीव्र शहरीकरण, औद्योगीकरण, खराब आर्थिक विकास और जैव विविधता संरक्षण पर अक्षम कानून और नीतियाँ शामिल हैं।

कृषि उपज में गिरावट के जवाब में, सरकार ने आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (जीएमओ) और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों को अपनाने की अनुमति दी है जो जैव विविधता और पर्यावरण को और नष्ट करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में, नाइजीरियाई कृषि क्षेत्र में कृषि रसायनों पर निर्भरता बढ़ रही है, नाइजीरिया में 80% से अधिक किसान वर्तमान में अकार्बनिक कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग कर रहे हैं। किसान इन कीटनाशकों की संरचना से अनभिज्ञ हैं और अक्सर वे उन्हें विनिर्देशों के अनुसार लागू नहीं करते हैं।

लोग देश के सामने मौजूद जैव विविधता चुनौतियों के समाधान के रूप में कृषि पारिस्थितिकी को अपनाने और बढ़ावा देने की मांग करते हैं। कृषि पारिस्थितिकी एक समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण है जो कृषि और खाद्य प्रणालियों के डिजाइन और प्रबंधन में पारिस्थितिक और सामाजिक अवधारणाओं और सिद्धांतों को एक साथ लागू करता है। यह पौधों, जानवरों, मनुष्यों और पर्यावरण के बीच अंतःक्रिया को अनुकूलित करता है, साथ ही सामाजिक रूप से न्यायसंगत खाद्य प्रणालियों की आवश्यकता को भी संबोधित करता

>>

है जिसके भीतर लोग यह चुन सकते हैं कि वे क्या खाते हैं और साथ ही इसे कैसे और कहाँ उत्पादित किया जाता है।

इसके अनुरूप, लोग कृषि पारिस्थितिकी में परिवर्तन, छोटे किसानों के लिए समर्थन में वृद्धि, जैव विविधता पर कन्वेंशन को स्वदेशी बनाना, एहतियाती सिद्धांत को अपनाना, आरक्षित क्षेत्रों की सुरक्षा, तथा सभी पौधों के बीजों और खाद्य पदार्थों से पेटेंट अधिकारों को हटाने की मांग करते हैं।

6. खनन और ठोस खनिज

नाइजीरिया में टिन, कोलम्बाइट, टैंटालाइट, वोलफ्रेमाइट, सीसा, जस्ता, सोना, कोयला आदि जैसे खनिजों का खनन व्यापक है, लेकिन नाइजीरियाई अर्थव्यवस्था में इसका योगदान नगण्य है। नाइजीरिया में खनिजों का खनन उसके सकल घरेलू उत्पाद का केवल 0-3% है। हालाँकि, हाल के वर्षों में, नाइजीरियाई सरकार ने खनन क्षेत्र को पुनर्जीवित करके तेल और गैस पर निर्भरता से परे अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता लाने की सक्रिय रूप से कोशिश की है। इस क्षेत्र में प्रमुख विकासों में कई पहल शामिल हैं, जैसे कि विनियामक सुधार, जो खनन के लिए एक कानूनी ढांचा बनाते हैं, जैसे कि नाइजीरियाई खनिज और खनन अधिनियम 2007 और नाइजीरियाई खनन विनियमन 2011।

हाल के दिनों में, इस क्षेत्र में छोटे पैमाने पर खनन अधिक प्रमुख हो गया है। इसमें अनिवार्य रूप से कच्चे तकनीकों का उपयोग करके द्वितीयक और प्राथमिक अयस्कों से धातुओं और खनिजों को इकट्ठा करना और परिष्कृत करना शामिल है। यह अनौपचारिक, गरीबी से प्रेरित गतिविधि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है और श्रमिकों और समुदायों के लिए गंभीर स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिम पैदा करती है। चाहे छोटे खनन हो या बड़े पैमाने पर सरकार द्वारा स्वीकृत खनन गतिविधियाँ, नकारात्मक प्रभाव एक जैसे ही होते हैं। खनन गतिविधियाँ पर्यावरण पर विभिन्न प्रभाव उत्पन्न करती हैं, जिसमें भूमि क्षरण, कटाव, पारिस्थितिकी गड़बड़ी, प्राकृतिक वनस्पतियों का विनाश, वायु, भूमि और जल का प्रदूषण, स्वास्थ्य जोखिम और विकिरण संबंधी खतरे शामिल हैं।

ठोस खनिजों के दोहन और खनन की प्रमुख वैश्विक समस्याओं में से एक जलवायु परिवर्तन प्रभाव है। अपने रेडियोधर्मी क्षय प्रक्रियाओं में कुछ खनिज स्वतः विघटित हो जाते हैं, विकिरण करते हैं और अतिरिक्त ऊर्जा देते हैं जो वैश्विक पर्यावरणीय तापमान को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने में सक्षम हैं। ठोस खनिजों के दोहन और खनन से मीथेन जैसी हानिकारक गैसें भी निकलती हैं, जिससे आग लग सकती है और पर्यावरण को नुकसान हो सकता है।

ठोस खनिजों के दोहन और खनन में क्रस्टल वनस्पतियों और पौधों की बड़े पैमाने पर सफाई शामिल है। यह नंगी भूमि को उजागर करता है, जिससे यह रेगिस्तान के अतिक्रमण के लिए अधिक संवेदनशील हो जाती है और लोगों, जानवरों, पौधों, कृषि उत्पादकता, भूमि उपयोगध्योजना और विशेष रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। भूमि क्षरण के प्रभाव में अपक्षय, कटाव, नाले का निर्माण और बड़े पैमाने पर भूमि का नीचे की ओर स्तनांतरण शामिल हैं, जो ठोस खनिज दोहन और खनन से जुड़ी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। ये मुद्दे खदानों के अवशेष, अपशिष्ट डंप, अनियंत्रित उत्खनन, परित्यक्त खनन गड्ढों और खनन भूमि को बहाल करने में विफलता से उत्पन्न हो सकते हैं।

खनन गतिविधियों का लोगों के स्वास्थ्य, जीवन और सांस्कृतिक व्यवहार पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि पर्यावरण में विषाक्त, कैंसरकारी और अन्यथा हानिकारक धातुएँ, साथ ही खदानों के अवशेष और अपशिष्ट शामिल होते हैं। ये प्रदूषक हवा, पानी और मिट्टी को दूषित करते हैं, जिससे वे मनुष्यों, जानवरों और पौधों के लिए असुरक्षित हो जाते हैं। जमफारा, जहाँ सोने का खनन होता है, में पारे के संपर्क में आने से केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को नुकसान पहुँच सकता है और आँख, त्वचा और पेट में जलन, श्वसन संबंधी समस्याएँ, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, अनिर्णय, सिरदर्द, कमजोरी और वजन कम होने जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।

इन समस्याओं को दूर करने के लिए, लोग खनन नियमों को लागू करने, प्रभावित स्वदेशी लोगों की स्वतंत्र, पूर्व और सूचित सहमति की आवश्यकताय नाइजीरिया में खनिज भंडारों पर उचित शोधय डीकमीशनिंग और खनन–मुक्त क्षेत्रों सहित अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के पालन की माँग करते हैं ।

7. ऊर्जा संक्रमण

चूँकि वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का सबसे बड़ा स्रोत है, जो कुल उत्सर्जन के लगभग 73% के लिए जिम्मेदार है, इसलिए ऊर्जा संक्रमण को उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार ऊर्जा स्रोतों से पवन, सौर और हाइड्रो जैसे नवीकरणीय स्रोतों पर स्थानांतरित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को महत्वपूर्ण रूप से कम करने के लिए, इसका उद्देश्य स्रोत पर CO_2 उत्सर्जन में कटौती करना होना चाहिए। नाइजीरिया ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य निर्धारित करने में अन्य देशों में शामिल हो गया है। इन लक्ष्यों को विभिन्न राष्ट्रीय रूपरेखाओं में रेखांकित किया गया है, जिसमें 2060 तक नेट–जीरो उत्सर्जन को प्राप्त करने का लक्ष्य शामिल है, जिसे 2021 के राष्ट्रीय निर्धारित योगदान (NDC) में शामिल किया गया है।

एक स्थायी भविष्य को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा संक्रमण महत्वपूर्ण है। हालाँकि, ऐसी कई चिंताएँ हैं जिन्हें ऊर्जा संक्रमण पर राष्ट्रीय बातचीत संबोधित नहीं करती है। पहली यह है कि संक्रमण की आवश्यकता न्याय का मुद्दा है। जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को झेलने वाले नाइजीरिया और अन्य देशों ने जलवायु संकट का कारण बनने वाले ऐतिहासिक उत्सर्जन को कम करने में सबसे कम योगदान दिया है। इस संबंध में, सबसे अधिक ऐतिहासिक उत्सर्जन वाले देशों को संक्रमण के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी उठानी चाहिए, जिसमें इसे वित्तपोषित करना भी शामिल है। इसलिए संक्रमण के प्रति हमारा दृष्टिकोण न्याय के लेंस के माध्यम से होना चाहिएरू इसे ऐतिहासिक नुकसान को संबोधित करना चाहिए और निवारण के लिए जगह बनानी चाहिए, साथ ही समुदायों की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए।

नाइजीरिया के सामने एक महत्वपूर्ण कठिनाई खाना पकाने के लिए ऊर्जा हासिल करना है। ईंधन की लकड़ी कई नाइजीरियाई लोगों के लिए ऊर्जा का एक प्रमुख स्रोत है, 70% से अधिक घर, खाना पकाने और गर्म करने के लिए इस पर निर्भर हैं। यह निर्भरता विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है जहाँ वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत कम सुलभ हैं। ईंधन की लकड़ी का उपयोग वनों की कटाई में योगदान देता है, क्योंकि जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ों को काटा जाता है। बदले में वनों की कटाई CO_2 को अवशोषित करने के लिए उपलब्ध पेड़ों की संख्या को कम करती है, जिससे वायुमंडलीय कार्बन का स्तर बढ़ता है। एक धारणीय भविष्य को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा संक्रमण महत्वपूर्ण है। हालाँकि, ऐसी कई चिंताएँ हैं जिन्हें ऊर्जा संक्रमण पर राष्ट्रीय बातचीत संबोधित नहीं करती है। पहली यह है कि संक्रमण की आवश्यकता न्याय का मुद्दा है। जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को झेलने वाले नाइजीरिया और अन्य

>>

देशों ने जलवायु संकट का कारण बनने वाले ऐतिहासिक उत्सर्जन को कम करने में सबसे कम योगदान दिया है। इस संबंध में, सबसे अधिक ऐतिहासिक उत्सर्जन वाले देशों को संक्रमण के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी उठानी चाहिए, जिसमें इसे वित्तपोषित करना भी शामिल है। इसलिए संक्रमण के प्रति हमारा दृष्टिकोण न्याय के लेंस के माध्यम से होना चाहिएरू इसे ऐतिहासिक नुकसान को संबोधित करना चाहिए और निवारण के लिए जगह बनानी चाहिए, साथ ही समुदायों की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए।

नाइजीरिया के सामने एक महत्वपूर्ण कठिनाई खाना पकाने के लिए ऊर्जा हासिल करना है। कई नाइजीरियाई लोगों के लिए ईंधन की लकड़ी ऊर्जा का एक प्रमुख स्रोत है। 70% से अधिक घर, खाना पकाने और गर्म करने के लिए इस पर निर्भर हैं। यह निर्भरता विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है जहाँ वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत कम सुलभ हैं। ईंधन की लकड़ी का उपयोग वनों की कटाई में योगदान देता है, क्योंकि जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ों को काटा जाता है। बदले में वनों की कटाई CO_2 को अवशोषित करने के लिए उपलब्ध पेड़ों की संख्या को कम करती है, जिससे वायुमंडलीय कार्बन का स्तर बढ़ता है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को चलाने के लिए तथाकथित संक्रमण खनिजों की खोज को उसी असमानताओं और दुरुपयोगों को मजबूत नहीं करना चाहिए जो जीवाश्म ईंधन के निष्कर्षण ने पैदा किए थे। नाइजीरिया को सचेत रूप से किसी अन्य ऊर्जा मार्ग में फंसने से बचना चाहिए जो उत्पादन के समान शोषणकारी संबंधों को फिर से बनाता है और पूरे देश में बलिदान क्षेत्रों का विस्तार करता है।

इसके अनुरूप, लोग समावेशी नीति विकास और हितधारक जुड़ाव, नौकरी परिवर्तन, मुआवजा, पर्यावरण सुधार और स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच की मांग करते हैं।

8. तेल और गैस निष्कर्षण

1956 से, नाइजर डेल्टा से लगातार व्यावसायिक मात्रा में कच्चा तेल निकाला जा रहा है। कुछ शुरुआती तटवर्ती तेल कुओं से, निष्कर्षण का व्यवसाय नाइजर डेल्टा और लागोस राज्य में सक्रिय तेल निष्कर्षण स्थलों के साथ काफी विस्तारित हुआ है। विशाल तेल और गैस अन्वेषण और दोहन गतिविधियों के कारण, नाइजर डेल्टा एक विशाल तेल और गैस क्षेत्र है। यह क्षेत्र 192 ट्रिलियन क्यूबिक फीट के सिद्ध भंडार के साथ वैश्विक गैस उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा भी है। इस क्षेत्र से तेल और गैस के निष्कर्षण ने नाइजीरिया के लिए राष्ट्रीय और उप–राष्ट्रीय स्तर पर भारी राजस्व अर्जित करने के अपार अवसर पैदा किए हैं।

भारी हाइड्रोकार्बन आय के बावजूद, नाइजर डेल्टा के भीतर जहाँ निष्कर्षण होता है, समुदायों में स्थितियाँ अविश्वसनीय रूप से भयावह हैं। इस तेल और गैस उत्पादक क्षेत्र में रहने वाले 40 मिलियन से अधिक लोगों को अपनी भूमि, नदियों और खाड़ियों के नीचे से निकाले गए संसाधनों की भारी मात्रा से कोई लाभ नहीं हुआ है। कल्याण, बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सुरक्षा में सुधार करने के बजाय, तेल और गैस से होने वाले राजस्व ने गरीबी, संघर्ष, दमन और अविकसितता के असामान्य प्रतिमान को बढ़ावा दिया है।

इस क्षेत्र की प्रमुख समस्याएँ लापरवाह हाइड्रोकार्बन निष्कर्षण गतिविधियों के कारण पैदा हुई हैं। उदाहरण के लिए, नाइजीरिया में सालाना अनुमानित 3.5 बिलियन क्यूबिक फीट एसोसिएटेड गैस का उत्पादन होता है, जिसमें से 2.5 बिलियन क्यूबिक फीट (70%) गैस फ्लेयर्स में जल जाती है। एसोसिएटेड गैस का जलना जारी है, इसलिए नहीं कि गैस को ऐसे तरीके से प्रबंधित करने के लिए कोई विकल्प नहीं है जिससे पर्यावरण पर कम प्रभाव पड़े, बल्कि इसलिए कि तेल कंपनियों और नाइजीरियाई सरकार ने इसे रोकने से लगातार इनकार किया है। तेल कंपनियाँ विशेष रूप से गैस को जलाना जारी रखना, इसे प्रबंधित करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा स्थापित करने की तुलना में सस्ता और अधिक सुविधाजनक मानती हैं। गैस जलाने को रोकने की समय–सीमा 1979 से 2030 और शायद 2060 तक खिसकती रही है। गैस जलाने को अवैध घोषित करने वाले न्यायालय के फैसले के बाद भी, सरकार गैस जलाने को रोकने के लिए कोई वास्तविक कार्रवाई करने के बजाय तेल कंपनियों द्वारा चुकाए जाने वाले मामूली जुर्माने को प्राथमिकता देती है।

हाइड्रोकार्बन उत्पादों को निष्कर्षण के विभिन्न बिंदुओं से टर्मिनलों तक ले जाने के कारण, जहाँ से उन्हें यूरोप, यूएसए और अन्य जगहों पर ले जाया जाता है, नाइजर डेल्टा की भूमि, दलदलों और नदियों के नीचे 7,000 किलोमीटर तक पाइप दब गए हैं, कभी–कभी तो लोगों के खेतों और घरों के पिछवाड़े में भी। इनमें से कुछ पाइप 40 से अधिक वर्षों से दबे हुए हैं। खतरनाक नियमितता के साथ और मुख्य रूप से उम्र और जंग के कारण, पाइप फटने से कच्चा तेल निकलता है जो फसलों को नष्ट कर देता है, नदियों को जहरीला बना देता है, जलधाराओं को प्रदूषित करता है और पूरे समुदायों को विस्थापित करता है। यह और भी बदतर हो जाता हैः कभी–कभी फटे हुए पाइप बड़ी आग में फट जाते हैं जो कई दिनों तक जलती रहती है, जिससे पूरे समुदाय और उनकी आजीविका जलकर राख हो जाती है।

पर्यावरण, आजीविका और मानवाधिकारों पर आने वाले विनाशकारी प्रभावों के साथ तेल निष्कर्षण के लगभग 70 वर्षों के बाद, नाइजर डेल्टा में संचालित सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय तेल कंपनियों – शेल, एक्सॉनमोबिल, टोटल एनर्जीज, शेवरॉन और एनी – ने अपनी संपत्तियां बेचने, गंभीर परेशानी में फंसने या बस इस क्षेत्र को छोड़ने की योजना बनाई है। जब वे यहां से जाते हैं और नाइजीरियाई कंपनियां इन तेल प्रमुखों द्वारा छोड़े गए तेल क्षेत्रों को खरीद लेती हैं, तो ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि ऐतिहासिक प्रदूषण और संबंधित सामाजिक–पारिस्थितिक मुद्दों के लिए कौन उत्तरदायी होगा। जैसे ही कंपनियां विनिवेश करती हैं और स्थानीय कर्तृता कार्यभार संभालते हैं, वे सभी तुरंत ऐतिहासिक क्षति के लिए जिम्मेदारी से इनकार कर देते हैं। तेल उत्पादक और प्रभावित समुदायों के लिए, विनिवेश का मतलब प्रदूषण के लिए निगमों को जवाबदेह ठहराने की संभावनाएँ और अधिक दूर हो जाती हैं।

इसके बाद, लोग नाइजर डेल्टा का पारिस्थितिक ऑडिटय आपदाओं के लिए आपातकालीन प्रतिक्रियाय और तेल कंपनियों के विनिवेश की मांग करते हैं। ■

'यह घोषणापत्र 20 जून, 2024 को अबुजा में आयोजित नाइजीरिया सामाजिक–पारिस्थितिक विकल्प अभिसरण बैठक में लॉन्च किया गया था। चार्टर एक जीवंत दस्तावेज है और नीति निर्माताओं द्वारा प्रतिक्रिया के स्तर का पता लगाने और अन्य क्षेत्रों, जहां लोगों और पर्यावरण को डिस्पोजेबल माना जाता है, को शामिल करने के लिए नाइजीरिया के लोगों द्वारा समय–समय पर इसकी समीक्षा की जाएगी।

> यूरोप में एक नए लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीयवाद के लिए घोषणापत्र

रीकॉमन्स यूरोप द्वारा

श्रेय : रीकॉमन्स यूरोप, 2020.

यूरोपीय संस्थाएँ (पूरे यूरोपीय संघ और उसके भीतर यूरो क्षेत्र की) संरचनात्मक रूप से नवउदारवादी, अलोकतांत्रिक और असमान हैं। प्रत्येक देश में वे लोकप्रिय वर्गों की जरूरतों, माँगों और अधिकारों की पूर्ति के साथ–साथ सदस्य देशों की आबादी के बीच एकजुटता और समानता में बाधा उत्पन्न करती हैं। प्रतिस्पर्धा के तर्क का मुकाबला करते समय, साथ ही साथ एक पारिस्थितिक संक्रमण के परिप्रेक्ष्य से, संघर्षों और विकल्पों के निर्माण का यूरोपीय स्तर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

हम यूरोप को अपना साझा घर बनाना चाहते हैं, लेकिन मौजूदा यूरोपीय संस्थाओं के ढांचे के भीतर यह असंभव है। इसलिए, हम एक ऐसा परिदृश्य प्रस्तावित करते हैं जो स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा सामाजिक संघर्षों पर निर्भर है ताकि अलोकतांत्रिक और पूंजीवादी यूरोपीय संस्थाओं की अवज्ञा, उनका सामना और उनसे नाता तोड़ा जा सके और उन्हें पूरे यूरोप में लोकप्रिय सहयोग और लोकतांत्रिक संस्थाओं के नए रूपों से बदला जा सके।

> एक साझा यूरोप के लिए 'विद्रोह' परिदृश्य की मुख्य विशेषताएं

1. हमें समन्वित और सहयोग–उन्मुख स्थायी मंचों और अवज्ञा आंदोलनों के माध्यम से स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और यूरोपीय स्तरों पर सभी मामलों या विशिष्ट मुद्दों (उदाहरण के लिए ऋण, प्रवासन नीतियां, पारिस्थितिक संक्रमण, 'पूर्वी यूरोप' सहित वैश्विक दक्षिण के साथ नव–औपनिवेशिक समझौते, आदि) के संबंध में अपने वैकल्पिक सामाजिक, पर्यावरणीय और राजनीतिक लक्ष्यों को तुरंत लागू करने की आवश्यकता है। विभिन्न राजनीतिक कर्तृताओं को यूरोपीय संघ की संधियों, आदेशों और निर्णयों की अवज्ञा करनी चाहिए। उन्हें यह बताना चाहिए कि वे वैकल्पिक नीतियों को लागू करने और नए स्थापित और दीर्घकालिक सहयोग (सभी या विशिष्ट मामलों के संबंध में) को स्थापित करने के लिए एक साथ ऐसा कर रहे हैं।

यह अवज्ञा मौजूदा संघर्षों और विशिष्ट अभियानों (श्रम अधिकार, मौद्रिक नीतियों, नस्लवाद विरोधी, आदि जैसे सभी क्षेत्रों में) पर आधारित हो सकती है। इसे, जितना अधिक संभव हो, मौजूदा संधियों और नवउदारवादी नीतियों के विपरीत, यूरोपीय स्तर पर लोकतांत्रिक, पर्यावरणीय और सामाजिक उद्देश्यों के कार्यान्वयन की संभावित दक्षता का प्रदर्शन करना चाहिए। यदि कोई राजनीतिक कर्त्ता अलग–थलग है, तो वह अभी भी मौजूदा नीतियों और संस्थानों को अवैध ठहरा सकता है, वैकल्पिक समाधानों को लागू करके उनकी अवज्ञा कर सकता है और सभी संभावित स्तरों पर खुले तौर पर लोकप्रिय सहयोग और स्व–संगठन के नए रूपों का प्रस्ताव कर सकता है।

2. राष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा संघर्षों को राष्ट्रीय शासक वर्गों की नीतियों और प्रमुख यूरोपीय विचारधारा, राजनीतिक अर्थव्यवस्था और संस्थानों के बीच अंतःक्रिया को उजागर करना चाहिए। पूंजी के आधिपत्य को तोड़ने के लिए, लोकप्रिय परामर्श और लामबंदी को ठोस उद्देश्यों और कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिसे यूरोपीय संघ के शासक वर्गों और संस्थानों का मुकाबला करने के लिए आगे रखा जाना चाहिए। टकराव में यूरोपीय संघ द्वारा जवाबी खतरों और हमलों के खिलाफ रक्षात्मक उपकरणों को लागू करने के साथ साथ नवउदारवादी ब्लॉक को अस्थिर करने और यूरोपीय संस्थानों के कामकाज को बाधित करने वाले वैधता के संकट को लाने के लिए राजनीतिक आक्रामक पहल शामिल होगी। ऐसे उपकरणों का क्रियान्वयन राजनीतिक कर्ता द्वारा एकपक्षीय उपायों, जैसेः लेखा परीक्षा के दौरान ऋण चुकौती को स्थगित करनाय विशिष्ट कराधान के आधार पर रोजगार सृजन करने वाला सार्वजनिक नीति कार्यक्रमय पूंजी प्रवाह पर नियंत्रणय या विशिष्ट संघर्षों और मांगों से जुड़ा हुआ, के माध्यम से यथाशीघ्र किया जाना चाहिए।

>>

यदि कोई राजनीतिक कर्त्ता अलग–थलग पड़ जाता है, तो भी उसे ऐसे उपकरणों को स्वयं ही लागू करना चाहिए और पूरे यूरोप में (केवल अपने भौगोलिक क्षेत्र के अंदर ही नहीं) लोकप्रिय लामबंदी के आह्वान के माध्यम से, उसे अन्य कर्त्ताओं को अवैधीकरण प्रक्रिया में योगदान देने के लिए आमंत्रित करना चाहिए और इस प्रकार यूरोपीय संस्थाओं के राजनीतिक संकट को जन्म देना चाहिए।

3. ऐसे रक्षात्मक उपकरण और आक्रामक राजनीतिक पहलों में अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय सरकारों को यूरोपीय संधियों और संस्थानों से अलग होना शामिल है। एक लोकप्रिय सरकार द्वारा उठाए गए सभी उपायों के लिए मौजूदा प्रमुख यूरोपीय राजनीति और नियमों से, कम से कम राष्ट्रीय स्तर पर, अलग होना आवश्यक है। हमें स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना चाहिए कि हम जिसका समर्थन करते हैं वह 'राष्ट्रीय हित' पर आधारित नहीं है, बल्कि हमारे रुख का कारण राजनीतिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और लोकतांत्रिक हैं; और वे वर्तमान संघ के अंदर और बाहर सभी लोगों से संबंधित हैं।

हम लोकतांत्रिक रूप से नियंत्रित मौद्रिक प्रणाली और मुद्रा की पूर्ण आवश्यकता का समर्थन करते हैं, और इसलिए बैंकों के समाजीकरण और पूंजी प्रवाह के नियंत्रण की आवश्यकता को समझते हैं। ये उपाय संधियों और यूरोपीय संघ के आर्थिक और मौद्रिक संघ (ईएमयू) के साथ संघर्ष में हैं। एक लोकप्रिय सरकार ईएमयू और/या ईयू से बाहर निकलने का निर्णय ले सकती है (उदाहरण के लिए अनुच्छेद 50 को लागू करके) या ईएमयू या ईयू से निष्कासित होने की चुनौती स्वीकार कर सकती है।

> एक निर्वाचक प्रक्रिया आरंभ करें

यूरोप में नए राजनीतिक सहयोग को विकसित करने के उद्देश्य से वैकल्पिक व्यवस्था बनाने के लिए सभी संभावित स्तरों पर निर्वाचक प्रक्रिया आरंभ की जानी चाहिए। यह यूरोपीय और स्थानीय शासक वर्गों और संस्थाओं के साथ–साथ जेनोफोबिक धाराओं के विरुद्ध एक साझे मंच पर आधारित होना चाहिए। इसे श्रमिकों और सभी अधीनस्थ वर्गों के सामाजिक अधिकारों के साथ–साथ पर्यावरण की रक्षा का भी समर्थन करना चाहिए।

इस परिदृश्य का विस्तार से अनुमान नहीं लगाया जा सकता है, लेकिन उदाहरण के लिए संघों, विद्रोही शहरों, क्षेत्रों या राज्यों का गठबंधन एक 'विद्रोही निर्वाचक प्रक्रिया' (वैश्विक या विशिष्ट कार्यात्मक विशेषाधिकारों के संबंध में) आरंभ कर सकता है, जो अवज्ञा प्रक्रिया में शुरू से शामिल न होने वाले राजनीतिक स्थानों के लिए भी खुला हो। इन निर्वाचक प्रक्रियाओं को, संबंधित स्थितियों और स्तरों (नगरपालिका मंचों और नेटवर्क से लेकर राष्ट्रीय या यूरोपीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों से जुड़ी संविधान सभाओं तक) के अनुसार अलग–अलग रूपों के साथ शुरू किया जाना चाहिए ताकि नया सहयोग बनाया जा सके। यह सहयोग पड़ोसी राजनीतिक कर्त्ताओं, जिन्होंने अभी तक इस प्रक्रिया को शुरू नहीं किया है, के टूटने की प्रक्रिया का, किलेनुमा यूरोप को खत्म करने का और अंततः यूरोपीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर वैकल्पिक संस्थाएँ बनाने का पक्ष लेता है। यदि कोई राजनीतिक कर्त्ता अलग–थलग है, तो उसे संबंधित क्षेत्र या कार्य के लिए इस 'विद्रोही निर्वाचक प्रक्रिया' को शुरू करना चाहिए और प्रस्ताव करना चाहिए कि अन्य कर्त्ता इस प्रक्रिया में शामिल हों।

> प्रस्ताव : तत्काल पहल

पिछली प्रत्येक विशेषता के लिए कुछ तत्काल पहलों की आवश्यकता है। मुख्य आवश्यकताएँ सामूहिक डिजाइनिंग और निर्वाचक प्रक्रियाओं की अवज्ञा करने, उनका सामना करने और उन्हें शुरू करने के लिए आवश्यक विशिष्ट उपकरणों के लोकप्रिय विनियोजन के साथ–साथ उन सामाजिक और राजनीतिक ताकतों को इकट्ठा करने से संबंधित हैं जो उन्हें संचालित कर सकती हैं।

हम सभी प्रगतिशील ताकतों (ट्रेड यूनियनों, राजनीतिक संगठनों, संघों, कार्यकर्ता सामूहिक, आदि) को समान लक्ष्य अपनाने का प्रस्ताव देते हैं: पूंजीवादी और अलोकतांत्रिक यूरोपीय संस्थानों की आलोचना को संयुक्त रूप से मजबूत करना और इन संस्थानों के आधिपत्य को तोड़ने और लोकप्रिय सहयोग के नए रूपों का पुनर्निर्माण करने के लिए अपने प्रस्तावों को एक साथ निर्दिष्ट करनाय अल्टरसमिट के घोषणापत्र और रीकॉमन्सयूरोप के घोषणापत्र जैसे अभिसारी ग्रंथों को अद्यतन, साझा और लोकप्रिय बनानाय 'विद्रोही निर्वाचक प्रक्रियाओं' के पक्ष में स्थानीय, राष्ट्रीय और यूरोपीय स्तरों पर सभी महत्वपूर्ण पहलों के विकास को प्रोत्साहित करनाय और इस परिदृश्य और इसके निहितार्थों के बारे में अभियान चलाने और लोकप्रिय बहस शुरू करने के लिए यूरोपीय चुनावों का लाभ उठाना, तथा मौजूदा पहलों और वैकल्पिक स्थानों के बारे में जानकारी देना जो इस परिदृश्य में भाग ले सकते हैं, और उनके आसपास सामाजिक और राजनीतिक ताकतों को इकट्ठा करना। ■

यह पाठ यूरोप में एक नए लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीयवाद के लिए घोषणापत्र के अध्याय 9 (यूरोप में सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक टकराव और घटक प्रक्रियाएँ) को (थोड़े से पुनर्लेखन के साथ) पुनरू प्रस्तुत करता है, जिसे मूल रूप से मार्च 2019 में प्रस्तुत किया गया था। उस घोषणापत्र को यूरोप के एक दर्जन या उससे अधिक देशों के कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं के एक समूह द्वारा तैयार किया गया था, जो लोकप्रिय वामपंथी ताकतों द्वारा कार्य किए जाने के लिए एक खाका प्रस्तावित करना चाहते थे। यह दो अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क (CADTM vkSj EReNSEP) और बास्क ट्रेड यूनियन ELA द्वारा शुरू की गई ReCommonsEurope परियोजना का हिस्सा था, जिसका उद्देश्य यूरोपीय लोकप्रिय वामपंथ के भीतर होने वाली रणनीतिक बहसों में योगदान देना था।

> भिन्नता से परे :
बहुविविध दुनिया में समानता

लिडिया बेकर और **क्रिस्टीन हेट्जकी**, लीबनिज़ यूनिवर्सिटी हनोवर, जर्मनी द्वारा

श्रेय : एंडरसन गुएरा, 2018, पेक्सेल्स पर।

वर्तमान समय पर्यावरण संबंधी आपदाओं, युद्ध, विघटन और अप्रत्याशित परिणामों वाली तीव्र तकनीकी प्रगति द्वारा अंकित है। नवउदारवादी पूंजीवाद के तहत शोषण की प्रथाएँ तेज़ हो गई हैं और इन्होने कई स्थलीय – मानव और गैर–मानवीय– आबादी के विस्थापन और विलुप्त होने की प्रक्रिया को तेज किया है। इन वर्तमान ग्रहीय चुनौतियों के मद्देनजर, हम अनिल भट्टी के काम के अनुरूप, उन्हें 'भिन्नता से परे' विश्लेषण करने और मानविकी और सामाजिक विज्ञान के लिए एक मध्यस्थ अवधारणा के रूप में समानता की क्षमता को खोलने का तर्क देते हैं।

> बहुविविधतारू रिश्तेदारी, समानता और अंतर्संबंध

विवेचनात्मक उत्तर–उपनिवेशवाद और लिंग अध्ययनों में विकसित भिन्नता की श्रेणियाँ असमानताओं और पदानुक्रमों को विघटित करने के लिए उपयोगी हैं, लेकिन वे सहानुभूति और सामंजस्य–निर्माण सामाजिक अभ्यास के लिए एक शर्त के रूप में समानताओं – संबंधों, सादृश्यों, संगत, समकालीनता और अंतर–स्थानों की पहचान की उपेक्षा करती हैं। सुमाक कावसेय या ब्यून विविर के एंडियन स्वदेशी दर्शन, औपनिवेशिक और पितृसत्तात्मक प्रथाओं पर काबू पाने के लिए बहुविविधता के स्वरूप में संबंधों के माध्यम से चिंतन करते हैं। एक 'बहुविविध दुनिया' में, मानव और गैर–मानव (कानूनी) विषयों के सामाजिक आदेश समान आधार पर सह–अस्तित्व में रहते हैं और पृथ्वी को एक संसाधन नहीं, बल्कि एक जीवन देने वाला प्राणी माना जाता है, जहाँ सब कुछ एक दूसरे से जुड़ा हुआ है।

बहुविविध की अवधारणा क्रिया–अस्तित्ववादी है, इस अर्थ में कि इसमें मानव और प्रकृति का एक सामान्य अस्तित्व शामिल है। एंग्लो–अमेरिकन और यूरोपीय क्षेत्रों में विकसित आलोचनात्मक उत्तर–मानववाद द्वारा परिप्रेक्ष्य में इसी तरह का बदलाव प्रस्तावित किया गया है जो मानव और गैर–मानव संस्थाओं के बीच अंतर करने के बजाय उनके बीच रिश्तेदारी संबंधों पर जोर देता है। यह दृष्टिकोण लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के उपनिवेशवाद–विरोधी और गैर–मानव–केंद्रित विचारों को संदर्भित करता है, लेकिन इसकी तुलना में, यह पृथ्वी के भविष्य के लिए तकनीकी विकास को अधिक महत्व देता है। इससे जुड़ी चर्चा ग्रह की रहने की क्षमता के बारे में है जहां 'पृथ्वीवासियों' के पास जीवित रहने का मौका है और जहां मानवरूपी तकनीक, अपने अवसरों और खतरों के साथ, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समानता की अवधारणा इस संदर्भ में महत्व प्राप्त करती है क्योंकि तकनीकी–वैज्ञानिक विकास मशीनों को अधिक से अधिक मनुष्यों के समान बनाता है और मानव जाति की रचनात्मक शक्ति की उभयचरता को तीव्र करता है।

> >

> भिन्नता के बारे में बहुत शोर, समानता के बारे में बहुत कम

शोध साहित्य के ऐसे कई सूत्र हैं जो बहुलता और उत्तरमानव दृष्टिकोणों की गैर–मानव–केंद्रित अवधारणाओं के बीच संबंध के समानता–आधारित विश्लेषण के लिए प्रासंगिक हैं। इस तरह का पहला सूत्र लैटिन अमेरिका में विभिन्न स्वदेशी ब्रह्मांड विज्ञान (ए. एस्कोबार, एम. डे ला कैडेना, एम. ब्लासर और ए. क्रेनाक द्वारा संचालित) के साथ–साथ मिलनसारिता (सर्जियो कोस्टा द्वारा विकसित) और लैटिन अमेरिकी अध्ययनों में संबोधित सह–अस्तित्व की अवधारणाओं पर आधारित दृष्टिकोणों से बना है। प्राचीन काल से, समानता की पहचान को एक मौलिक मानव संज्ञानात्मक कार्य के रूप में और एक अभ्यास के रूप में बार–बार उजागर किया गया है जो दार्शनिक और वैज्ञानिक–ऐतिहासिक चर्चाओं में– नकल, अनुकरण या अनुकरण के रूप में– अभिविन्यास प्रदान करता है। यद्यपि, सांस्कृतिक सिद्धांत और साहित्यिक अध्ययनों से संबंधित बहसों में समानता हाल ही में उभरी है, और अब तक इसकी ज्ञानमीमांसा क्षमता समाप्त नहीं हुई है।

इन अभी भी अस्पष्ट रूप से तैयार किए गए दृष्टिकोणों से परे, इसके अग्रणी विचारकों (बी. स्पिनोज़ा, जी. लीबनिज़, जी. टार्डे, डब्ल्यू. बेंजामिन, मार्क्यूज़ और अन्य) पर भरोसा करते हुए, जो शोध साहित्य की दूसरी धारा का आधार बनते हैं, हम समानता की अवधारणा को मानविकी और सामाजिक विज्ञान में प्रतिमान बदलाव के लिए उपयोगी बनाना चाहते हैं । आज तक, मानविकी और सामाजिक विज्ञान ने मुख्य रूप से भिन्नता की उन श्रेणियों के साथ काम किया है, जिनके सैद्धांतिक आधार एक तीसरी धारा बनाते हैं, जैसे संरचनावादी, लेकिन विशेष रूप से उत्तर–संरचनावादी, अवधारणाएँ (एम. फौकॉल्ट, जे. डेरिडा, जी. डेल्यूज़। ये भिन्नता–आधारित दृष्टिकोण उत्तर/विउपनिवेशी और आधुनिक–आलोचनात्मक अवधारणाओं (डी. चक्रवर्ती, एफ. कोरोनिल, एस. हॉल, आर. ग्रोसफोगेल) में परिलक्षित हुए और लिंग और समलैंगिक अध्ययनों में चर्चा की गई, जो एक साथ मिलकर शोध की चौथी धारा बनाते हैं। अंतःविषयी रेखाओं के साथ संगठित एक क्षेत्र में, इस चौथे सूत्र ने वैश्विक स्तर पर असमानता की जटिल घटनाओं के विघटन के लिए भिन्नता का विश्लेषण सफलतापूर्वक विकसित किया (जी. स्पिवक, एम. लुगोन्स) और अंतरसंबंध की अवधारणा के तहत असमानता के विभिन्न आयामों की उलझनों को पकड़ा। अश्वेत/रंग नारीवाद के क्षेत्र से काम (बी. हुक्स, के. क्रेनशॉ) ने इस जागरूकता का मार्ग प्रशस्त किया कि जातीयता और वर्ग की समझ के लिए लिंग की श्रेणी महत्वपूर्ण है।

वैश्वीकरण की बहस के दौरान 1990 के दशक से ही भिन्नता पर आधारित पहचान निर्माण की आलोचना होने लगी, आंशिक रूप से संस्कृति की उनकी अनिवार्य समझ के कारण, जो बीच में किसी भी तरह की जगह की अनुमति नहीं देती (एस. हॉल, एच. के. भाभा)। इस तरह की पहचान संबंधी रचनाएं 'पश्चिमी सभ्यता' की सांस्कृतिक श्रेष्ठता के विचार के मूल में हैं, जो 'स्व' और 'अन्य' की सरलीकृत और मनमानी पहचान संबंधी रचनाओं पर आधारित हैं, जिन्हें कट्टरपंथी और पहचानवादी आंदोलनों द्वारा अपनाया जाता है। यही कारण है कि भिन्नता पर आरित पहचान की अवधारणा संदिग्ध है। तदनुसार, यहां तक कि मानव–केंद्रित फोकस वाली भिन्नता–आधारित अवधारणाओं को भी हाल ही में गैर–आवश्यक, संबंधपरक दृष्टिकोणों के माध्यम से आगे बढ़ाया गया है।

> बहुलतावाद और ज्ञानमीमांसा संबंधों के विस्तार से जुड़ने वाला अंतिम सूत्र

जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश से ग्रहीय जीवन के लिए उत्पन्न खतरा जो अब इतना स्पष्ट है, विशेष रूप से मानव समाज और प्रकृति (बी. लैटौर, पी. डेस्कोला) के बीच के अंतर पर सवाल उठाता है, जैसा कि ज्ञानोदय (तर्कसंगतता) के दौरान स्थापित किया गया था और आधुनिक समाजशास्त्र में समेकित किया गया था। समानता की अवधारणा भी प्रकृति और मानवता/संस्कृति के बीच उपनिवेशवाद के द्वंद्वों पर काबू पाने और मनुष्य को केवल एक जटिल नेटवर्क के हिस्से के रूप में समझने में मदद करती है।

यह शोध के पांचवें पहलू का आधार है, जिसमें नए भौतिकवाद (के. बाराड), उत्तरमानववाद (डी. हरावे, आर. ब्रैडोटी), सकारात्मक जैव राजनीति (वी. बोरसो) और टेक्नोफेमिनिज्म (जे. वेजमैन, एफ. कोस्टा) शामिल हैं। ये उपनिवेशवाद–विरोधी दृष्टिकोण और गैर–पश्चिमी ब्रह्मांड विज्ञान के लिए खुले हैं, जो बहुविविध सोच के लिए निर्णायक कड़ी है। इस बीच, अफ्रीकी दर्शन भी तकनीकी–उपनिवेशवाद और प्रौद्योगिकी, प्रकृति और मनुष्यों के जटिल अंतर्संबंध को संबोधित करते हैं; और वे बहुविविध दुनिया में उपनिवेशवाद–विरोधी प्रौद्योगिकियों की संभावनाओं पर बहस करते हैं (ए. एमबेम्बे)।

इन सभी दृष्टिकोणों में जो बात आम है वह यह है कि वे ज़ोई, जियो, टेक्नो और एंथ्रोपो आयामों के बीच सहानुभूतिपूर्ण संबंधों को फिर से जोड़ते हैं। अन्य दृष्टिकोण एशियाई दर्शन की तुलना क्वांटम भौतिकी के निष्कर्षों और सामाजिक विज्ञान और मानविकी (के. फ़िएर्के) में उनकी प्रयोज्यता से करते हैं, इस प्रकार वैश्विक ज्ञान उत्पादन में कई कनेक्शन खोलते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी अध्ययनों के विपरीत, तकनीकी–उपनिवेशवाद कोण (आर. केमरेना एट अल.) अपने ऐतिहासिक फ़ोकस और क्षेत्रीय विशेषज्ञता के आधार पर औपनिवेशिक और गैर–औपनिवेशिक प्रक्रियाओं के अंतर्निहित ज्ञान के साथ–साथ 'प्रौद्योगिकी' की विस्तारित समझ से भी पहचाना जाता है, जो, उदाहरण के लिए, साक्षरता को एक औपनिवेशिक तकनीक (डब्ल्यू. मिग्नोलो) के रूप में पहचानता है।

हमारे प्रस्ताव की विशिष्टता, संबंधपरक चिंतन के आधार पर वैश्विक ज्ञानमीमांसा के इन विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना, उन्हें व्यवस्थित करना और विकसित करना है, ताकि उनकी पूरकता के दृष्टिकोण से प्रकृति–मानव–प्रौद्योगिकी संस्थाओं के बीच परिवर्तनशील संबंधों की एक नई गैर–मानव–केंद्रित अवधारणा को विस्तृत किया जा सके।

> नई (पुरानी) तात्विकी, प्रौद्योगिकी समालोचना, और उपनिवेशवाद–विरोधी समानता

हमारा मुख्य बिंदु यह है कि समानता की धारणा और उत्पादन किस हद तक एक बहुल दुनिया को आकार देने में योगदान दे सकता है ताकि वर्तमान युग के आवश्यक ग्रहीय जोखिमों, जिन्हें एंथ्रोपोसीन या कैपिटलोसिन के रूप में जाना जाता है, को समझा जा सके और उनसे निपटा जा सके। इसका तात्पर्य मानविकी और सामाजिक विज्ञान के आधार के रूप में यूरो–केंद्रित, सार्वभौमिक तात्विकी के मौलिक संशोधन से है। हमारी राय में, संबंधित प्रश्नों पर निम्नलिखित तीन विषयगत अक्षों के साथ चर्चा की जानी चाहिए:

1. प्रकृति : संस्कृति और प्रकृति, विषय और वस्तु के बीच आधुनिक सीमांकन, जो पश्चिमी ज्ञानमीमांसा के लिए मौलिक है और जिसे उपनिवेशवाद के तहत विकसित किया गया है, पर मानव और गैर–मानव विषयों के बीच निरंतरता और पारस्परिकता के संदर्भ में सवाल उठाया जाएगा। हम द्वंद्ववाद के बीच तुलना करते हैं, जो एक संबंधपरक – बहुविविध – परिप्रेक्ष्य के साथ, मनुष्यों और प्राकृतिक संसाधनों के शोषण को उचित ठहराता है, जो पुरानी संस्कृतियों के सूक्ष्म और स्थूल जगत के समावेशी विचारों, लैटिन अमेरिका के

>>

दर्शन और हाल के दिनों में चर्चित श्फ्लैट ऑन्टोलॉजीश में निहित है।

2. प्रौद्योगिकी : बाह्य प्राकृतिक परिदृश्यों और लोगों के समूहों के शोषण के लिए प्रौद्योगिकियों का अनुकूलन उपनिवेशवाद का एक और आधार था और पितृसत्तात्मक तर्कसंगतता का प्रतीक था। नई प्रौद्योगिकियों द्वारा रोजमर्रा की जिंदगी में प्रवेश और मानव जाति और प्रौद्योगिकी का संलयन तकनीकी–उपनिवेशवाद के प्रति उचित संदेह को जन्म देता है – उदाहरण के लिए, संचार प्रौद्योगिकियों के नियंत्रण कार्य के माध्यम से। हालांकि, सामाजिक डिजाइन संभावनाओं की आशा से इसका मुकाबला किया जाता है। उत्तरमानव नारीवाद जैविक जीवन और गैर–जैविक पदार्थ, जिसमें प्रौद्योगिकियां भी शामिल हैं, के अंतर्संबंध को एक संयोजन के रूप में परिभाषित करता है, जो प्रौद्योगिकी की अवधारणा और निर्णय लेने वाले के रूप में विषय के गठन का सवाल उठाता है।

3. मानव : इसका ध्यान मानव श्रेणी (पुरुष, विषमलैंगिक और श्वेत के रूप में परिभाषित) के विघटन पर आधारित समाज के बहुविध मॉडल पर है। मतभेद और विदेशीपन से परे, मिलनसारिता और एकजुटता की भावना में लोगों के समूहों के बीच समानताएं बनाने को प्राथमिकता दी जाती है। चर्चा का विषय यह है कि अन्य लोगों और प्राकृतिक संसाधनों का शोषण, जो उपनिवेशवाद में शुरू हुआ और पूंजीवाद में भी जारी है, किस हद तक मतभेदों में सामाजिक थकावट और वर्तमान के पारिस्थितिक संकटों के लिए जिम्मेदार है। इस बीच, ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भों में समरूपता के जोखिम, उदाहरण के लिए सत्तावादी शासन में विविधता के बहिष्कार के माध्यम से, को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

हमारी अवधारणा की अभिनव क्षमता बहुलता की प्रक्रिया–अस्तित्ववादी अवधारणा को समानता के क्रमबद्ध अभ्यास पर आधारित उत्तर–मानव दृष्टिकोणों के साथ अंतःविषयी जोड़ने में निहित है। हम प्रकृति–मानव–प्रौद्योगिकी की संस्थाओं के बीच संबंधों की एक नई अवधारणा को एक निरंतरता के अर्थ में विकसित करने के लिए इन्हें एक साथ लाते हैं। बहुलतावादी और उत्तर–मानव सोच आधुनिकता, इसकी सार्वभौमिकता और इससे जुड़ी प्रतिज्ञाओं की पश्चिमी अवधारणाओं को संबोधित करते समय 'भिन्नता' और 'परावर्तन' पर आधारित उत्तर–संरचनावादी और उत्तर/उपनिवेशवादी शोध दृष्टिकोणों की आलोचना साझा करती है। आधुनिक दुनिया को आधुनिकता–तर्कसंगतता–उपनिवेशवाद के तर्क का पालन करते हुए पदानुक्रमित और अनिवार्य द्वैतवाद (स्वयं/अन्य, श्वेत/अश्वेत, पुरुष/महिला, सभ्य/जंगली, विषय/वस्तु, मन/शरीर, संस्कृति/प्रकृति, भिन्नता/समानता) में विभाजित किया गया था।

तदनुसार, विभेदीकरण को ज्ञान संगठन का सर्वोत्कृष्ट प्रतिमान घोषित किया गया, जबकि पश्चिमी ज्ञानमीमांसा में समानता और अनुकरण को "अवैज्ञानिक" के रूप में खारिज कर दिया गया क्योंकि उन्हें "आदिम", "जादुई", "प्रकृति के करीब" और "पूर्व–आधुनिक" माना जाता था। इसके विपरीत, हमारा दृष्टिकोण समानता की संबंधपरक अवधारणा को उपनिवेशवाद–विरोधी प्रतिमान में एकीकृत करता है, दुनिया की बहुलवादी जागरूकता को प्रौद्योगिकी की आलोचना को शामिल करने के लिए विस्तारित करता है, और अंतर–आधारित ज्ञान उत्पादन से परे जाता है। ■

सभी पत्राचार
लिडिया बेकर को <becker@romanistik.phil.uni-hannover.de> पर एवं
क्रिस्टीन हट्ज़की को <christine.hatzky@hist.uni-hannover.de> पर प्रेषित करें।

> वेनेजुएला और बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शन : तानाशाह कब हार मानेंगे?

जॉन फेफर, इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिसी स्टडीज, यूएसए द्वारा

श्रेय : शटरस्टॉक।

एक देश में, पंद्रह वर्षों से निरंकुश नेता, छात्र नेतृत्व वाले विपक्ष द्वारा सत्ता से बाहर किए जाने के बाद उठकर चले गए हैं। दूसरे देश में, ग्यारह वर्षों से निरंकुश नेता ने हाल ही में हुए चुनावों में धांधली करके खुद को मामूली अंतर से जीत दिलाने के बाद विरोध प्रदर्शनों के बावजूद सत्ता छोड़ने से इनकार कर दिया है।

पहले देश, बांग्लादेश में, नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने प्रधानमंत्री शेख हसीना की जगह ली है, जो अब भारत में (एक बार फिर) निर्वासन में हैं। इस बीच, दूसरे देश, वेनेजुएला में, निकोलस मादुरो ने संयुक्त राज्य अमेरिका, के यूरोपीय संघ और अन्य देशों से सत्ता छोड़ने (यदि देश नहीं) के आह्वान का विरोध किया है।

विपक्ष बांग्लादेश में क्यों सफल रहा और वेनेजुएला में क्यों नहीं? दोनों देशों के बीच कई अंतर हैं: सरकार की संस्थागत शक्ति, संबंधित तेल भंडार का आकार, संयुक्त राज्य अमेरिका से निकटता। लेकिन शायद अंत में जो फर्क पड़ता है, वह है समय। मादुरो को शेख हसीना जैसी ही स्थिति का सामना करने में बस कुछ ही दिन, हफ्ते या महीने लग सकते हैं। शायद उन्हें अभी तक इसका एहसास न हो।

> बांग्लादेशी आश्चर्य

शेख हसीना ने शायद यह सोचा होगा कि उन्हें कोई छू नहीं सकता हैं। बांग्लादेश की लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहने के कारण, उन्हें अपने वंश द्वारा भली प्रकार से संरक्षित किया गया था– उनके पिता ने पाकिस्तान के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया, देश के पहले राष्ट्रपति बने और उन्हें 'राष्ट्रपिता' के रूप में जाना जाता है। उनके पास यह मानने का कारण भी था कि उनका कार्यकाल सफल रहा था। बांग्लादेशी अर्थव्यवस्था पिछले 15 वर्षों (2020 के कोविड वर्ष सहित) से ऊपर की ओर बढ़ रही है। उस दौरान शिक्षा, बच्चों के स्वास्थ्य और समग्र जीवन प्रत्याशा तक पहुँच में सुधार हुआ। गरीबी दर आधी हो गई।

फिर हसीना की भू–राजनीतिक सूझबूझ थी। पड़ोसी भारत में नरेंद्र मोदी की सरकार उनकी मजबूत सहयोगी थी और वे चीन के साथ भी अपेक्षाकृत अच्छे संबंध बनाए रखने में सक्षम रह पायीं थीं।

कुछ लोग, जरूर उनके आलोचक भी थे। इन घरेलू आलोचकों में से कई को उन्होंने सलाखों के पीछे डाल दिया। पर उन्हें देश के युवाओं से एक सफल चुनौती की उम्मीद नहीं थी।

>>

सबसे पहले, बड़ी संख्या में बांग्लादेशी युवा देश छोड़कर चले गए हैं। 2023 में 50,000 से ज्यादा छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश चले गए। सामाजिक–आर्थिक स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर, 15,000 से ज़्यादा बांग्लादेशी प्रवासी, जो अनुपातहीन रूप से युवा थे, 2022 में इटली के लिए भूमध्य सागर पार कर गए। बांग्लादेशी मीडिया में "ब्रेन ड्रेन" एक निरंतर चर्चा का विषय है, क्योंकि टिप्पणीकार यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि घरेलू प्रतिभाओं को कैसे बनाए रखा जाए।

निश्चित रूप से हसीना भी ब्रेन ड्रेन के बारे में चिंतित थीं। लेकिन देश छोड़ने वाला हर युवा व्यक्ति सड़क पर सरकारी नीतियों का विरोध करने के लिए उपलब्ध एक कमतर युवा व्यक्ति भी था। 15 प्रतिशत से अधिक की बेरोजगारी दर के साथ, युवा बांग्लादेशी पिछले 15 वर्षों में देश द्वारा प्राप्त आर्थिक विकास का लाभ नहीं उठा पाने से निराश हैं। एक विकल्प विदेश में बेहतर अवसरों के लिए जाना है। सुशिक्षित लोगों के लिए दूसरा विकल्प सिविल सेवा क्षेत्र है। सरकारी नौकरियों में उचित वेतन मिलता है और साथ ही नौकरी की सुरक्षा भी अच्छी है। सिवाय इसके कि सरकार 1971 में देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े दिग्गजों के रिश्तेदारों को लगभग एक तिहाई पदों को आवंटित करके उपलब्ध पदों की संख्या को कम करने की कोशिश कर रही थी। याद रखेंरू प्रधानमंत्री के पिता एक स्वतंत्रता सेनानी थे, और यह उस महत्वपूर्ण निर्वाचन क्षेत्र को पुरस्कृत करने का एक तरीका था।

2018 में छात्रों ने इस नई संरक्षण प्रणाली को प्रभावी रूप से अवरुद्ध कर दिया, लेकिन सरकार ने इस साल फिर से कोशिश की। युवा लोग सड़कों पर लौट आए। अगस्त 2024 की शुरुआत तक, सरकार विरोधी प्रदर्शनों के कारण दर्जनों लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हो गए। हालाँकि सुप्रीम कोर्ट ने कोटा प्रस्ताव को काफी हद तक कम कर दिया, लेकिन छात्रों ने तब तक दबाव बनाए रखा जब तक कि प्रधानमंत्री ने इस्तीफा नहीं दे दिया और देश छोड़कर भाग नहीं गयीं ।

यह 2014 में यूक्रेन में हुई घटना से काफी मिलता–जुलता था, जब युवाओं ने, अन्य लोगों के साथ, कीव के केंद्र में एक भ्रष्ट राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच के खिलाफ प्रदर्शन किया था, जिन्होंने पड़ोसी सत्तावादी नेता के साथ भी एक मजबूत रिश्ता बनाया था। बाद में यानुकोविच अपने अपराध स्थल से भाग गया और रूस चला गया, जहाँ उसने कथित तौर पर 50 मिलियन डॉलर में एक घर खरीदा था।

बेशक, यूक्रेन में आगे जो हुआ उसकी नकल कोई भी नहीं करना चाहतारू युद्ध, भूभाग का नुकसान, आर्थिक तबाही। यूक्रेन के भाग्य से बचने के लिए, बांग्लादेश को अपनी नई संक्रमणकालीन सरकार के प्रयासों पर बहुत अधिक निर्भर रहना होगा।

सौभाग्य से, बांग्लादेश ने अंतरिम प्रधान मंत्री मुहम्मद यूनुस, अर्थशास्त्री और ग्रामीण बैंक के संस्थापक सहित एक प्रतिभाशाली और समावेशी टीम बनाई है। यूनुस हसीना सरकार के निशाने पर थे, जिसने उन पर गबन और अन्य अपराधों का आरोप लगाया था। लेकिन माइक्रोक्रेडिट आंदोलन के संस्थापक को हसीना प्रशासन के साथ तालमेल न बिठाने या उनके साथ न चलने का दोषी पाया गया।

अंतरिम सरकार के अन्य सदस्यों में दो विरोधी छात्र नेता, नाहिद इस्लाम और आसिफ महमूद शामिल हैं, जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है क्योंकि इस तरह के संक्रमण काल के दौरान युवाओं को शायद ही कभी सत्ता के पद मिलते हैं। अन्य सदस्यों में 'मानवाधिकार कार्यकर्ता, कानूनी विशेषज्ञ, दो पूर्व राजनयिक, एक डॉक्टर और बांग्लादेश के केंद्रीय बैंक के पूर्व गवर्नर शामिल हैं। गैर–राजनेताओं के इस नए समूह का मुख्य काम देश में स्थिरता लाना और नए चुनावों की तैयारी करना होगा।

> वेनेजुएला में अप्रत्याशित घटना

सिर्फ छात्र ही नहीं हैं जो निकोलस मादुरो और उनके चोरतंत्री तरीकों से तंग आ चुके हैं। चुनाव–पूर्व सर्वेक्षणों और चुनाव–पश्चात विपक्ष द्वारा परिसर में एकत्र किए गए परिणामों के अनुसार, 70 प्रतिशत से अधिक आबादी ह्यूगो चावेज के उत्तराधिकारी को हटाना चाहती है। वेनेजुएला में अप्रत्याशित घटना यह है कि मादुरो ने 51 प्रतिशत वोट के साथ खुद को विजेता घोषित किया।

वेनेजुएला में विरोध प्रदर्शन हुए हैं। बांग्लादेश की तरह, सरकार ने लोगों (एक दर्जन से अधिक) को मारकर और उन्हें जेल में डालकर (कम से कम 2,000) विपक्ष को दबाने की कोशिश की है। सरकार ने अपने आलोचकों को घेरने के लिए अपने "नॉक, नॉक" अभियान के साथ जो वीडियो जारी किए हैं, उनमें हॉरर–मूवी साउंडट्रैक हैं, जिनके बोल इस प्रकार हैं: "यदि आपने गलत किया है, तो वह आएगा! [...] वह आपको ढूंढ़ेगा! बेहतर होगा कि आप छिप जाएं!" विपक्ष ने 17 अगस्त को विरोध के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस का आह्वान किया, जिससे उसे उम्मीद है कि देश के बाहर रहने वाले लगभग आठ मिलियन वेनेजुएला के कई लोग इसमें शामिल होंगे।

लेकिन बांग्लादेश के साथ दो मुख्य अंतर हैं। वेनेजुएला में, विपक्ष पार्टी–आधारित है। यह चुनाव लड़ने के लिए बना है, न कि एक अवैध सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए। यह जानता है कि लोगों को वोट देने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए, न कि सड़कों पर गर्मी बढ़ाई जाए। यूक्रेन या सर्बिया या फिलीपींस जैसे अन्य सफल विपक्षी आंदोलनों के विपरीत, इसने गैर–अनुपालन का अभियान तैयार नहीं किया है जिसमें हड़ताल, सड़क अवरोध और इसी तरह की चीजें शामिल हैं।

दूसरा, वेनेजुएला में विपक्ष का नेतृत्व बूढ़े लोग कर रहे हैं। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार एडमंडो गोंजालेज 74 साल के हैं। हालांकि, असली ताकत मारिया कोरिना मचाडो के पास है, जो एक 56 वर्षीय फुर्तीली महिला हैं, जो पहले भी कई बार राजनीतिक ब्लॉक में रह चुकी हैं। वह विरोध के तरीकों से वाकिफ हैं और वेनेजुएला में विपक्ष की सीमाओं को जानती हैं।

इसके विपरीत, बांग्लादेश के युवा लोग नौसिखिए हैं। यह उनकी ताकत थी। उनके पास अज्ञानता की शक्ति थी। उन्हें नहीं पता था कि उनका विरोध प्रदर्शन अद्भुत है। उन्होंने विरोध किया, और विरोध किया और सुप्रीम कोर्ट द्वारा घृणित कोटा प्रणाली को व्यावहारिक रूप से खारिज करने के बाद भी विरोध करना जारी रखा। वे अपनी एक मांग – हसीना को बाहर करो – के इर्द–गिर्द एकजुट हुए, भले ही उन्हें भी नहीं लगा कि ऐसा वास्तव में होगा।

बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शन असीम आदर्शवाद से प्रेरित थे। वेनेजुएला में विरोध प्रदर्शन अनुभवजन्य यथार्थवाद से प्रेरित हैं। कभी–कभी दिल दिमाग से ज्यादा सफल होता है।

> समय समाप्त हो गया है?

शेख हसीना के बांग्लादेश से भागने से एक रात पहले, उनके सेना प्रमुख ने कर्फ्यू लगाने के लिए नागरिकों पर गोली चलाने के

>>

आदेश को लागू नहीं करने का फैसला किया। बार्टलेबी की तरह बातचीत से इंकार करना हम, सेना, ऐसा नहीं करना चाहेंगे – संभवतः सरकार को गिराने में निर्णायक कारक था। इस बीच, सेना अंतरिम सरकार के पीछे की ताकत बनी हुई है।

लेकिन याद रखेंरू यह छात्रों का दृढ़ संकल्प था जिसने बांग्लादेशी सेना को प्रभावी रूप से पक्ष बदलने के लिए मजबूर किया। अब तक, इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि वेनेजुएला की सेना कुछ ऐसा करने की योजना बना रही है। विपक्ष ने सेना को एक खुला पत्र जारी किया, जिसमें मादुरो को छोड़ने का आग्रह किया गया। लेकिन यह वेनेजुएला के नेता के सैन्य अधिकारियों के साथ सार्वजनिक रूप से प्रकट होने के एक दिन बाद ही हुआ। उन्होंने एक स्वर में नारा लगाया : "हमेशा वफादार," "कभी देशद्रोही नहीं।"

वेनेजुएला के विपक्ष को सड़क पर गर्मी बनाए रखने के साथ–साथ यह अंदरूनी खेल भी खेलना चाहिए। जैक निकस ने न्यूयॉर्क टाइम्स में लिखा :

"1950 से 2012 के बीच सत्ता खोने वाले 473 सत्तावादी नेताओं में से लगभग दो–तिहाई को सरकार के अंदरूनी लोगों ने हटा दिया था। यह बात मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान की प्रोफेसर एरिका फ्रैंट्ज, जो सत्तावाद का अध्ययन करती हैं, ने कही। उस खतरे से निपटने के लिए, तानाशाह अक्सर वही करने की कोशिश करते हैं जिसे राजनीतिक वैज्ञानिक "तख्तापलट–प्रूफ" कहते हैंः वे सुरक्षा बलों को विभिन्न खंडित इकाइयों में विभाजित करते हैं। इससे किसी एक शाखा को बहुत अधिक शक्ति प्राप्त करने से रोका जा सकता है – और यह बलों को एक दूसरे पर जासूसी करने का कारण भी बनता है। विश्लेषकों का कहना है कि यह वेनेजुएला का वर्णन करता है।"

मादुरो को पता होना चाहिए कि वह केवल इतना ही "तख्तापलट–प्रूफ" हो सकता है। लगभग सभी तानाशाहों के राजनीतिक जीवन में एक समय ऐसा आता है जब वे, दिसंबर 1989 में निकोले चाउसेस्कु की तरह, अपने समर्थकों की भीड़ को देखते हैं और अपेक्षित तालियाँ प्राप्त करने के बजाय, केवल उपहास सुनते हैं। जब ऐसा होता है, तो बेहतर होगा कि वे एक वफादार पायलट के साथ एक हेलीकॉप्टर तैयार रखें। ■

सभी पत्राचार जॉन फेफर को <johnfeffer@gmail.com> पर प्रेषित करें।

यह लेख ग्लोबल डायलॉग और फॉरेन पॉलिसी इन फोकस के बीच एक साझेदारी है, जो इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिसी स्टडीज (यूएसए) की एक परियोजना है।

> वैश्विक जलवायु न्याय और फिलिस्तीनी मुक्ति

हमजा हमोचेन, ट्रांसनेशनल इंस्टीट्यूट, नीदरलैंड्स द्वारा

श्रेय : मार्कस स्पिस्के, 2019, पेक्सेल्स पर।

दिसंबर 2023 में दुबई में आयोजित COP 28 जलवायु शिखर सम्मेलन में, कोलंबियाई राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने घोषणा की : 'फिलिस्तीनी लोगों के खिलाफ नरसंहार और बर्बर कृत्य उन लोगों का इंतजार कर रहे हैं जो जलवायु संकट के कारण दक्षिण से भाग रहे हैं... गाजा में हम जो देख रहे हैं वह भविष्य के लिए एक पूर्वाभ्यास है।'

वे सही हैं। गाजा में होने वाला नरसंहार, आने वाली बदतर चीजों का अग्रदूत हो सकता है अगर हम संगठित नहीं होंगे और जोरदार तरीके से वापस नहीं लड़ेंगे। साम्राज्य और उसके वैश्विक शासक वर्ग, लाखों अश्वेत और भूरे लोगों के साथ–साथ श्वेत श्रमिक वर्ग के लोगों की बलि देने को तैयार रहेंगे ताकि वे पूंजी जमा करना, धन इकट्ठा करना और अपना वर्चस्व बनाए रखना जारी रख सकें।

> लागत को प्रकृति पर डालना

पूंजीवाद हमेशा से ही न चुकाई जाने वाली लागतों की व्यवस्था रही है। लागतों को व्यवस्थित रूप से बाह्यीकृत किया जाता है और कहीं और स्थानांतरित किया जाता है: सामाजिक पुनरुत्पादन के मामले में महिलाओं और देखभाल करने वालों पर, जिसका भुगतान काफी हद तक नहीं किया जाता; शहरी से ग्रामीण क्षेत्रों में; उत्तर से दक्षिण की ओर, जहाँ बलिदान क्षेत्र बनाए जाते हैं, एक गतिशीलता जो अमानवीयकरण, अन्यीकरण और नस्लवाद के माध्यम से सुगम होती है; और प्रकृति पर लागतों को बाह्यीकृत करना और सदियों से इसे हावी होने और यदि इसका वस्तुकरण नहीं करना हो तो भी लूटने के लिए एक इकाई के रूप में मानना, और इसे कचरे के लिए सिंक के रूप में भी देखा जाना । इससे पारिस्थितिकी और जलवायु संकट पैदा हुआ है।

हम जिस वैश्विक जलवायु संकट से गुज़र रहे हैं, उसके प्रभाव वर्ग, लिंग और नस्लीय रेखाओं के साथ–साथ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों और वैश्विक उत्तर/साम्राज्यवादी कोर बनाम वैश्विक दक्षिण/परिधीय क्षेत्रों के बीच विभेदित हैं। वे उपनिवेशवादी–उपनिवेशित रेखाओं के साथ भी विभेदित हैं।

फिलिस्तीनी और इजरायली एक ही भूभाग पर रहते हैं, लेकिन प्रभाव और भेद्यता में भारी असमानता है, क्योंकि इजरायली उपनिवेशवाद ने भूमि और जल से लेकर ऊर्जा तक अधिकांश संसाधनों को हड़प लिया है, लूट लिया है और नियंत्रित कर लिया है तथा फिलिस्तीनियों की पीठ पर और साम्राज्यवादी शक्तियों के सक्रिय समर्थन से, ऐसी तकनीक विकसित कर ली है, जो जलवायु संकट के कुछ प्रभावों को कम करने में मदद करेगी।

> वैश्विक जलवायु न्याय और फिलिस्तीनी मुक्ति

गाजा में नरसंहार के संदर्भ में जलवायु और पारिस्थितिकी मुद्दों के बारे में बात करना शायद गलत या अनुचित लगे, लेकिन मैं तर्क दूंगा कि जलवायु संकट और मुक्ति के लिए फिलिस्तीनी संघर्ष के

>>

बीच महत्वपूर्ण अंतरसंबंध हैं। वास्तव में, फिलिस्तीन की मुक्ति के बिना कोई वैश्विक जलवायु न्याय नहीं होगाः फिलिस्तीनी मुक्ति भी पृथ्वी और मानवता को बचाने का संघर्ष है। यह केवल नारेबाज़ी नहीं है, जैसा कि मैं नीचे दिए गए पैराग्राफ में समझाता हूँ।

सबसे पहले, फिलिस्तीन आज वर्तमान व्यवस्था की कुरूपता को पूरी तरह से प्रदर्शित करता है और इसके घातक विरोधाभासों को एक साथ लाता है। यह बड़े पैमाने पर क्रूर हिंसा के उपयोग की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति को भी दर्शाता है। ग्राम्शी ने एक बार कहा था : 'संकट वास्तव में इस तथ्य में निहित है कि पुराना मर रहा है और नया पैदा नहीं हो सकता है; इस अंतराल में, कई तरह के रुग्ण लक्षण दिखाई देते हैं।'

दूसरा, गाजा में आज जो हो रहा है वह केवल नरसंहार नहीं है। मैं पक्की तौर पर नहीं कह सकता कि फिलिस्तीनियों पर आज किए गए सभी विनाश और मृत्यु का वर्णन करने के लिए हमारे पास सही शब्दावली है। इस अवलोकन के बावजूद, जो हो रहा है वह पारिस्थितिकी–संहार है या जिसे कुछ लोगों ने 'होलोसाइड' के रूप में वर्णित किया है, जो कि पूरे सामाजिक और पारिस्थितिक ताने–बाने का विनाश है।

तीसरा, गाजा में अन्य युद्धों के साथ, नरसंहार युद्ध, पारिस्थितिकी और जलवायु संकट को बढ़ाने में युद्ध और सैन्य–औद्योगिक परिसर की भूमिका को भी उजागर करता है। अमेरिकी सेना दुनिया में अकेली सबसे बड़ी संस्थागत उत्सर्जक है, जो डेनमार्क या पुर्तगाल जैसे पूरे पश्चिमी देशों से भी बड़ी है। गाजा में युद्ध के पहले दो महीनों में, इजरायल का उत्सर्जन कम से कम बीस देशों के वार्षिक उत्सर्जन से अधिक था। इनमें से लगभग आधे अमेरिका द्वारा इजरायल में हथियारों के परिवहन के कारण थे। अमेरिका न केवल नरसंहार में एक सक्रिय खिलाड़ी है, बल्कि फिलिस्तीन में हो रहे पारिस्थितिकी–संहार में भी एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है।

चौथा, और यह मेरा मुख्य तर्क है (एडम हनीह और एंड्रियास माल्म के काम पर आधारित), हम जीवाश्म पूंजीवाद और अमेरिकी नेतृत्व वाले साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष को फिलिस्तीन को आजाद कराने के संघर्ष से अलग नहीं कर सकते। मध्य पूर्व में यूरो–अमेरिकी उपनिवेश के रूप में इजरायल एक साम्राज्यवादी अग्रिम चौकी है। रिचर्ड निक्सन के अधीन अमेरिकी विदेश मंत्री अलेक्जेंडर हैग ने एक बार बेहद स्पष्ट रूप से कहा था : 'इजरायल दुनिया का सबसे बड़ा अमेरिकी विमानवाहक पोत है जिसे डुबोया नहीं जा सकता, इसमें एक भी अमेरिकी सैनिक नहीं है, और यह अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र में स्थित है।[६]

> मध्य पूर्व और वैश्विक जीवाश्म शासन

वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में मध्य पूर्व के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। आज, यह क्षेत्र न केवल व्यापार, रसद, बुनियादी ढांचे और वित्त के नए वैश्विक नेटवर्क की मध्यस्थता में एक प्रमुख भूमिका निभाता है, बल्कि यह वैश्विक जीवाश्म ईंधन शासन में एक महत्वपूर्ण नोडल बिंदु भी है और अपने तेल और गैस आपूर्ति के माध्यम से जीवाश्म पूंजीवाद को बरकरार रखने में एक अभिन्न भूमिका निभाता है। वास्तव में, यह क्षेत्र विश्व हाइड्रोकार्बन बाजारों की केंद्रीय धुरी बना हुआ है, जिसमें 2022 में वैश्विक तेल उत्पादन का कुल हिस्सा लगभग 35% है। इज़राइल पूर्वी भूमध्य सागर में एक ऊर्जा केंद्र के रूप में भूमिका निभाने की भी कोशिश कर रहा है (तामार और लेविथान जैसे नए खोजे गए गैस क्षेत्रों के माध्यम से): यूक्रेन में युद्ध के संदर्भ में रूस से दूर अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने के यूरोपीय संघ के प्रयासों से यह आकांक्षा और मजबूत हुई है। युद्ध के पहले हफ्तों में अधिक गैस की खोज के लिए विभिन्न जीवाश्म ईंधन कंपनियों को लाइसेंस देने में इज़राइल द्वारा किया जा रहा नरसंहार कोई बाधा नहीं थी।

दो मुख्य स्तंभ उस इमारत का निर्माण करते हैं जो आज इस क्षेत्र में अमेरिकी आधिपत्य हैः इज़राइल और तेल समृद्ध खाड़ी राजशाही। क्षेत्रीय सहयोगी के रूप में अव्वल, इज़राइल, इस क्षेत्र में (और उससे आगे) अमेरिकी नेतृत्व वाले साम्राज्य के वर्चस्व को बनाए रखने के साथ–साथ विशाल जीवाश्म ईंधन संसाधनों, मुख्य रूप से खाड़ी और इराक पर साम्राज्य के नियंत्रण में एक बुनियादी भूमिका निभाता है। यह इस ढांचे के भीतर है कि हमें अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा राजनीतिक और आर्थिक रूप से इज़राइल को एक प्रमुख स्थिति से क्षेत्र में एकीकृत करने के प्रयासों को समझने की आवश्यकता हैः अग्रणी तकनीक, हथियार और निगरानी सामग्री, लेकिन साथ ही जल विलवणीकरण, कृषि व्यवसाय के माध्यम से खाद्य उत्पादन, ऊर्जा, आदि।

इज़राइल और अन्य अरब देशों के बीच सामान्यीकरण सौदे 1978 में इज़राइल और मिस्र के बीच कैंप डेविड समझौते और 1994 में जॉर्डन और इज़राइल के बीच शांति संधि तक जाते हैं। सामान्यीकरण की दूसरी लहर, ट्रम्प द्वारा मध्यस्थता वाले अब्राहम समझौते, 2020 में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), बहरीन, सूडान और मोरक्को के साथ हुए।

7 अक्टूबर के हमलों से पहले, यह उम्मीद की जा रही थी कि अमेरिका के संरक्षण में, सऊदी अरब और इजरायल, इस क्षेत्र के लिए अमेरिकी साम्राज्यवादी डिजाइनों को मजबूत करने वाले एक समान समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे। इससे, फिलिस्तीनी मुद्दे को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाता। इस प्रकार फिलिस्तीन मुक्ति संघर्ष केवल एक नैतिक और मानवाधिकार मुद्दा नहीं है, बल्कि मूल रूप से और अनिवार्य रूप से अमेरिका के नेतृत्व वाले साम्राज्यवाद और वैश्विक जीवाश्म पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष है। इजरायल की गहरी नस्लवादी ज़ायोनी उपनिवेश कॉलोनी को खत्म किए बिना और प्रतिक्रियावादी अरब शासनों, मुख्य रूप से खाड़ी राजशाही को उखाड़ फेंके बिना जलवायु न्याय नहीं होगा।

फिलिस्तीन उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, जीवाश्म पूंजीवाद और श्वेत वर्चस्व के खिलाफ एक वैश्विक मोर्चा है। जलवायु न्याय कार्यकर्ताओं से लेकर नस्लवाद विरोधी संगठनों और साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलनकारियों तक हम सभी पर यह दायित्व है कि हम फिलिस्तीनियों को उनके मुक्ति संघर्ष में सक्रिय रूप से समर्थन दें और किसी भी तरह से प्रतिरोध करने के उनके निर्विवाद अधिकार को बनाए रखें! हमारे सामने जो कार्य है वह बहुत चुनौतीपूर्ण है, लेकिन जैसा कि फैनन ने एक बार हमें करने के लिए कहा था, हमें सापेक्ष अस्पष्टता से बाहर आकर अपने मिशन की खोज करनी चाहिए, उसे पूरा करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उसके साथ विश्वासघात न करें। ■

सभी पत्राचार हमजा हमोचेन को <hamza.hamouchene@gmail.com> पर प्रेषित करें।

यह हमजा हमोचेन द्वारा 13 जुलाई, 2024 को लंदन में आयोजित ब्लैक लाइव्स मैटर लिबरेशन फेस्टिवल में दिए गए भाषण का सरल सम्पादित संस्करण है।

> स्पेन में सामाजिक आंदोलन : परिवर्तनों के दो दशक

मार्टा रोमेरो–डेलगाडो और **एंडी एरिक कैस्टिलो पैटन**, यूनिवर्सिडाड कॉम्प्लूटेंस डी मैड्रिड, स्पेन, और **गोमर बेटानकोर नुएज**, यूनिवर्सिडाड नैशनल डी एडुकेशन ए डिस्टेंसिया, स्पेन द्वारा

श्रेय : ब्रेनो ब्रिंगेल, राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र संकाय में स्यूरल, यूनिवर्सिडैड कॉम्प्लुटेंस डी मैड्रिड, स्पेन, 2024।

पिछले दशक में, स्पेन में सामाजिक आंदोलन के अध्ययन फले–फूले हैं और नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करने लगे हैं, जो विभिन्न आवाजों और अलग–अलग एजेंडों के जटिल नेटवर्क के उतार–चढ़ाव को उजागर करते हैं। अध्ययनों की बढ़ती संख्या ने मुख्य रूप से 'इंडिग्नाडोस' (या 15M) आंदोलन और 2011–2012 के बाद इसके परिणामों की श्रंखला पर ध्यान केंद्रित किया है। हालाँकि, विपरीत रूप से अन्य सामाजिक आंदोलनों द्वारा अनुभव किए गए मुख्य परिवर्तनों से निपटने वाले उन शोध की कमी है जो इंडिग्नाडोस लामबंदी के लिए केंद्रीय या परिधीय थे।

इस कारण से, और एक अंतर्विषयिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए, हमने खुद से पूछा कि पिछले दो दशकों में स्पेन में सामाजिक आंदोलनों ने किन संवादों और परिवर्तनों का सामना किया है। उनकी उत्पत्ति और पुनर्संरचना को देखते हुए, हमने एक सहयोगी पुस्तक का संपादन किया। इसमें, स्पेनिश नारीवादी और LGBTQ+ सक्रियतावाद, श्रम और नस्लवाद विरोधी आंदोलनों के साथ संवाद हैं, साथ ही युद्ध–विरोधी और शांतिवादी विरासतों की गंभीर चुनौतियों या दूर–दराज के आंदोलनों के परेशान करने वाले पुनर्संयोजन और संसदीय गतिशीलता को बदलने के साथ उनके संबंध को नहीं भूले हैं जो स्पेनिश राजनीति के 'यूरोपीयकरण' का संकेत देते हैं।

> अंत:विषयक, संवादात्मक और वैश्विक दृष्टिकोण

सामाजिक आंदोलन अध्ययन एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मानवशास्त्र विज्ञान और इतिहास, सामाजिक मनोविज्ञान या प्रायोगिक दर्शन जैसे अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ, विभिन्न समस्या परिदृश्यों और विश्लेषणों को एक साथ लाया जाता हैं। हालाँकि, हमारी पुस्तक मानती है कि सामाजिक आंदोलन अध्ययनों को कार्यकर्ताओं और आंदोलनों की आवाजों और गवाही पर एक कालक्रमिक दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। इस प्रकार, हमारे द्वारा सम्पादित खंड में, अंत:विषयक प्रस्ताव ऐतिहासिक और राजनीतिक परिक्षण में तल्लीन करने वाले स्थित लेखकों के साथ संवाद प्रदान करते हैं। हालाँकि पिछली पुस्तकें यूरोप के भीतर इस दृष्टिकोण को एकीकृत करती हैं, लेकिन इस परियोजना के माध्यम से हम जो संवादात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, वह यादों, विरासतों और – अधिक विशेष रूप से – प्रतिवर्ती परिवर्तनों और प्रत्याशाओं के बारे में अध्ययनों को एक साथ लाने की संभावना प्रदान करता है। इसके अलावा, कुछ अध्याय कार्यकर्ता अनुसंधान के दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रदान करते हैं।

यद्यपि अधिकांश लेखकों की पृष्ठभूमि अकादमिक है, लेकिन उनका शोध जीवन के अनुभवों से जुड़ा हुआ है, जिसमें यह अवलोकन शामिल है कि कैसे सिद्धांत और व्यवहार स्पेन में लिंग,

>>

लिंग, जाति, श्रम अधिकार, सामाजिक संघर्ष और शांति प्रवचनों के बारे में उभरती वास्तविकताओं और आगामी चिंताओं में विलीन हो जाते हैं। इसके अलावा, हमारी पुस्तक सामाजिक आंदोलनों के एजेंडे और विशेषताओं तथा स्पेन में उनके अध्ययन के हाल के यूरोपीयकरण पर केंद्रित है; यह विषय के वैश्वीकरण का भी संकेत देता है। चयनित व्यैक्तिक अध्ययनों के समवर्ती संवाद क्षेत्रीय और वैश्विक रुझानों के साथ स्पेनिश विवादास्पद राजनीति के संबंध को उजागर करते हैं, जिसका हमारी पुस्तक अंतःविषय दृष्टिकोण के माध्यम से विश्लेषण करती है।

> स्पेन में सामाजिक आंदोलन

वैश्विक ताने–बाने को समझने के लिए, स्थानीय सूत्रों के निर्माण पर विचार करना चाहिए। स्पेन में, फ्रेंको की तानाशाही (1936–1975) की लंबी छाया ने अभिजात वर्ग द्वारा निर्देशित लोकतंत्र में रूपांतरण और स्पेनिश राजनीति और नीतियों की बाद की गतिशीलता को प्रभावित किया। राजनीतिक व्यवस्था की सत्तावादी विरासत और ऊपर से लागू किए गए राजनीतिक रूपांतरण ने उस संदर्भ और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित किया जिसमें कई दशकों तक स्पेन में सामाजिक आंदोलन विकसित हुए। इस प्रकार, अधिकांश स्पेनिश सामाजिक आंदोलनों की जड़ें तानाशाही की औपचारिक और अनौपचारिक विरासतों में गहराई से समाहित हैं। इस सदी के अंत तक या हाल ही में अधिक संस्थागत कर्त्ताओं की ओर कोई बदलाव नहीं हुआ। तब से हमने अनिवार्य सैन्य सेवा का अंत और इस सदी के पहले वर्षों में महिलाओं के गर्भपात के अधिकार की पुष्टि देखी है, साथ ही स्ळ्ज्ठप्फ़ अधिकारों की मान्यता या 2010 के दशक की शुरुआत में तानाशाही के पीड़ितों की स्वीकृति जैसी अन्य लामबंदी भी देखी है। हालाँकि, हाल के धुर दक्षिणपंथी आंदोलन और राजनीतिक दल, एक अति–राष्ट्रवादी और अति–रूढ़िवादी एजेंडे के साथ पोस्ट–फ्रैंकोइस्ट समर्थकों के नए स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं जो वर्तमान में यूरोप और अमेरिका में वैश्विक नेटवर्क से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, हमारी पुस्तक स्पेन में अतीत की राजनीतिक संस्कृतियों और राजनीति के प्रभाव को एक आधार के रूप में मानती है, ताकि अलग–अलग लेकिन प्रासंगिक सामाजिक आंदोलनों द्वारा उनके यूरोपीयकरण और वैश्वीकरण से पहले और उसके दौरान उठाए गए विभिन्न कदमों को समझा जा सके। स्पेन में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रियाएँ एक नवउदारवादी अंतर्राष्ट्रीय एजेंडे और राज्य और राजनीतिक–आर्थिक अभिजात वर्ग के भीतर पोस्ट–फ्रैंकोइस्ट बढ़ाव से निपटती हैं जिन्हें कुछ बाहरी विश्लेषणों द्वारा अनदेखा किया जाता है।

> वर्तमान और भावी शोध में विसंगतियाँ और मार्ग

स्पेन में सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन का जो "स्वर्ण युग" चल रहा है, वह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों को आकर्षित कर रहा है और इस क्षेत्र का निर्माण कर रहा है। 15M आंदोलन ने सामाजिक आंदोलनों के बीच प्रक्रियाओं और गठबंधनों के निर्माण को समझने की संभावना को खोला, जिसने नागरिकों को संस्थागत प्रक्रिया से परे लोकतांत्रिक सुधारों में भाग लेने और अनुरोध करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अलावा, इसने शिक्षा जगत में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया। इस घटना ने दो कारणों के चलते स्पेन को सामाजिक आंदोलनों के विश्व विश्लेषण के केंद्र में रखा, पहला आंदोलन के नतीजों के कारण और दूसरा विदेशों से सामाजिक आंदोलन के विद्वानों के लिए इसके आकर्षण के कारण, जिन्होंने स्पेनिश मामले को जांच के दायरे में रखा।

विभिन्न शोध परियोजनाएं अध्ययन के एक ऐसे क्षेत्र का निर्माण कर रही हैं जिसमें स्पेनिश शोधकर्ताओं ने अपने प्रोफाइल का अंतर्राष्ट्रीयकरण किया है और वे यूरोपीय नेटवर्कों के करीब आए हैं। स्पेन में सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन का यह अभिसरण यूरोपीयकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण विरोधाभासी रूप से वैश्विक दक्षिण, विशेष रूप से लैटिन अमेरिका में अनुसंधान के अन्य क्षेत्रों के साथ क्षेत्रीय और वैश्विक संवादों को मजबूत करने में योगदान देता है। इस अर्थ में, इस क्षेत्र में हमारा योगदान वैश्विक यथार्थ और सामाजिक आंदोलनों की चुनौतियों से संबंधित स्थानीय और क्षेत्रीय दृष्टिकोणों के लिए एक मिलन बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार, उन सामाजिक आंदोलनों का अध्ययन करने वाले शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं के दृष्टिकोण के साथ मिलकर, जिसमें वे शामिल हैं, इस विविध ज्ञान ने एक ऐसी पुस्तक को जन्म दिया है जिसमें सिद्धांत चिंतनशील व्यवहार से मिलता है।

हालांकि हमारा प्रस्ताव सामाजिक आंदोलनों का अध्ययन करने के तरीके पर वर्तमान बहस के कुछ नए दृष्टिकोणों जितना अभिनव नहीं है, फिर भी हमने इस विषय के अध्ययन में एक ईमानदार और परिशुद्ध योगदान देने का इरादा किया है, जिसमें हम कहाँ से और किसके लिए लिखते हैं, पर ध्यान दिया गया है। पुस्तक में हम जो प्राथमिक परिणाम प्रस्तुत करते हैं, वे स्पेन में सामाजिक आंदोलनों के एक कालक्रमिक और संवादात्मक अध्ययन के साथ पहले संपर्क की संभावना और एक या दूसरे आंदोलन, गठबंधनों के समूह या वैश्विक रुझानों की स्थानीय अभिव्यक्तियों में पिछले ज्ञान का विस्तार करने के लिए एक पुस्तिका है। इसके अलावा, हम सह–संपादकों ने पुस्तक को ओपन एक्सेस के माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए कड़ी मेहनत की।

स्पेनिश में लिखना हमारे परिणामों को प्रसारित करने के लिए एक स्पष्ट चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है और यह न केवल एक कामकाजी भाषा के रूप में, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं, संघर्षों और अभिनेताओं को सोचने और तैयार करने के तरीके के रूप में चिह्नित संदर्भ में अंग्रेजी में उत्पादित सभी प्रकाशनों के लिए है। यह चुनौती विशेष रूप से वैश्विक और क्षेत्रीय परिधि पर स्थित देशों के शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं को प्रभावित करती है। हमें उम्मीद है कि निकट भविष्य में इसका अनुवाद किया जाएगा ताकि गैर–स्पेनिश–भाषी दर्शकों के लिए इसकी सामग्री तक पहुँच आसान हो सके और इस बीच वैश्विक संवाद की अन्य वास्तविकताओं और भाषाओं के साथ प्रतिध्वनि इन संवादों को संभव बनाने में मदद कर सके ऐसी (हम उम्मीद करते हैं)। ■

सभी पत्राचार
मार्टा रोमेरो–डेलगाडो को <martaromerodelgado@ucm.es> पर
एंडी एरिक कैस्टिलो पैटन को <aecastillopatton@ucm.es> पर और
गोमर बेटानकोर नुएज को <gbetancor@poli.uned.es> पर प्रेषित करें।

> निर्भरता सिद्धांतों का पुनर्निर्माण

आंद्रे मैग्नेली, एटेली डेह्यूमैनिडेड्स, **फेलिप मैया**, फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ जुइजडीफोरा, और **पाउलो हेनरिक मार्टिस**, फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ पेर्नबुको, ब्राजील द्वारा

चित्रण : अर्बू, 2024।

वर्तमान संदर्भ में निर्भरता सिद्धांतों की प्रासंगिकता और महत्व को पहचानने का तात्पर्य बुद्धिजीवियों के समाजशास्त्र, विचारों के इतिहास और संचलन, और परिधीय और अर्ध–परिधीय क्षेत्रों में आधुनिकीकरण सिद्धांतों के संशोधन से संबंधित निरंतर शोध से है। इसके अलावा, इसे आधुनिकता और वैश्विक सामाजिक प्रक्रियाओं की व्यापक समझ का हिस्सा बनना चाहिए। लेकिन यूरोपीय और उत्तरी अमेरिकी केंद्र के बाहर उत्पादित ऐसे सिद्धांतों के उद्भव की स्थितियों को सामान्यीकृत नहीं करना महत्वपूर्ण है जैसे कि वे वैश्विक दक्षिण में सभी समाजों के लिए सामान्य बौद्धिक उत्पादन थे। ऐसा सामान्यीकरण अर्ध–परिधीय प्रणालियों के उन बुद्धिजीवियों की योग्यता को केवल कम करेगा, जिन्होंने उन राष्ट्रीय समाजों के भीतर से आधुनिकीकरण के बारे में सिद्धांत बनाने की कोशिश की है, जिन्होंने औद्योगीकरण की महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं और राजनीतिक रूप से पार्टियों और यूनियनों में संगठित मध्यम और श्रमिक वर्गों के गठन का अनुभव किया है। यह लैटिन अमेरिकी इतिहास में एक स्थानीय अनुभव के रूप में था कि निर्भरता सिद्धांत पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की आलोचना के विस्तार के लिए एक संदर्भ बनने में सक्षम थे।

> लैटिन अमेरिकी जड़ों वाला एक परिप्रेक्ष्य

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, लैटिन अमेरिका उन नवीन सिद्धांतों के लिए एक विशिष्ट प्रजनन भूमि था, जो आधुनिकीकरण के सिद्धांतों पर सवाल उठाने और ऐसे विकल्प बनाने की कोशिश करते थे जो स्वतंत्र औद्योगिकीकरण मॉडल का उत्पादन कर सकते थे। यह प्रक्रिया CEPAL अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित संरचनावादी–उद्योगवादी सिद्धांतों के साथ शुरू हुई और 1960 और 1970 के दशक में लैटिन अमेरिकी समाजशास्त्रियों द्वारा आगे विकसित की गई, जिन्होंने CEPAL बहस को राजनीति के क्षेत्र में विस्तारित किया। उस समय बौद्धिक आलोचना, साम्राज्यवाद और निर्भरता के प्रति प्रतिक्रियायों से प्रेरित होकर, चिंतन की भिन्न रेखाओं के साथ विस्तारित हो रही थी। इसमें उपनिवेशवाद की आलोचना और मुक्ति के पक्ष में स्वदेशी लोगों, अफ्रीकी–वंशजों और महिलाओं के जुटाव के साथ संवाद शामिल थे।

1950 और 1970 के दशक के बीच विस्तृत निर्भरता सिद्धांत, बीसवीं सदी में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझने के

>>

लिए लैटिन अमेरिका के सबसे मूल बौद्धिक योगदानों में से एक का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी मुख्य चिंता पूंजीवाद के विस्तार और आधुनिकता के सामाजिक और राजनीतिक रूपों की "असमान और संयुक्त" प्रकृति थी, जिसमें लैटिन अमेरिकी इतिहास एक अनुभवजन्य संदर्भ के रूप में था। आधुनिकीकरण सिद्धांतों (तब सामाजिक विज्ञान और अर्थशास्त्र में प्रमुख) के दृष्टिकोणों को प्रतिस्थापित करके और सोवियत मार्क्सवाद द्वारा प्रचारित सिद्धांतों का विरोध कर के, उन्होंने राष्ट्रीय–विकासवादी रणनीति और रूढ़िवादी–सत्तावादी आधुनिकीकरण कार्यक्रमों दोनों द्वारा प्रस्तुत किए गए आधिपत्यपूर्ण विकल्पों के परिणामों और सीमाओं को समझने की अनुमति दी । इसके अलावा, उन्होंने स्थानीय राजनीतिक कर्त्ताओं और पूंजी के संचलन की वैश्विक प्रणालियों के बीच कई संबंधों पर प्रकाश डाला।

ऐतिहासिक और प्रायः तुलनात्मक दृष्टिकोणों को अपनाने से यूरो–अमेरिकी मॉडलों के संदर्भ में लैटिन अमेरिकी अभिजात वर्ग की "सभ्यता"या "पिछड़ेपन पर काबू पाने"की परियोजनाओं और उन्नीसवीं सदी में राष्ट्र और राज्य निर्माण की प्रक्रियाओं की शुरुआत के बाद से उनकी विषम स्थिति के पुनरुत्पादन के बीच संबंधों की जांच का समर्थन किया गया अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में असमानता और निर्भरता संबंधों का अध्ययन करने के अलावा, इन सामाजिक संरचनाओं की संरचनात्मक विशेषता के रूप में उपनिवेशवाद से जुड़े विषयों में नई अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई, जिसमें ''आंतरिक उपनिवेशवाद'' के कारक भी शामिल हैं। लैटिन अमेरिकी समाजों को उनके अपने संदर्भों में और अन्य परिधीय संरचनाओं के साथ तुलनात्मक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, न कि आधुनिकीकरण के अधूरे रूपों के रूप में।

> बौद्धिक पुनर्निर्माण

हमारी हाल ही में संपादित पुस्तक *'डिपेंडेंसी थेओरीज इन लैटिन अमेरिका: एनइंटेलेक्चुअल रिकंस्ट्रक्शन'*, में, हम लैटिन अमेरिका में निर्भरता सिद्धांतों का अवलोकन प्रस्तुत करते हैं। यह खंड उनके बौद्धिक उद्भव के तत्वों, विभिन्न संदर्भों में ग्रहण की स्थितियों, समाजशास्त्रीय सिद्धांत में योगदान और राजनीतिक आलोचना, पर्यावरण और जलवायु संकट या उत्तर–उपनिवेशवाद की समस्याओं जैसे समकालीन विषयों के माध्यम से अद्यतन होने की संभावनाओं को शामिल करता है। इस प्रकार हम समकालीन सामाजिक सिद्धांत के इतिहास और खजाने की सूची में इस महत्वपूर्ण योगदान को शामिल करना चाहते हैं, जो दुनिया भर में सामाजिक सिद्धांत के विकास में प्रक्षेपवक्र की बहुलता और लैटिन अमेरिकी परिप्रेक्ष्य की मौलिकता को समझने में सहायता करता है। उस अवधि में जो कुछ भी उत्पादित किया गया था, उसमें अनिवार्य रूप से उस समय के निशान हैं दृ वे बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक समस्याएं जो संयोग की स्थितियों से संबंधित हैं। हालाँकि, निर्भरता और असमानता के संबंधों का एक इतिहास और स्थायित्व है और उन्हें विश्वव्यवस्था या वैश्विक पूंजीवाद के स्तर पर स्थापित और पुनरस्थापित किया गया है, इसलिए यह बौद्धिक पुनर्निर्माण वर्तमान की समस्याओं से भी निपटता है।

> राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्रक्रियाओं से लेकर CEPAL तक

वैश्विक आधुनिकीकरण पर वैकल्पिक सोच के संगठन में लैटिन अमेरिका की केंद्रीयता केवल संयोगवश नहीं थी। इस क्षेत्र के अधिकांश देशों ने उन्नीसवीं सदी में अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्रक्रियाओं का अनुभव किया, जबकि एशियाई और अफ्रीकी देशों ने बीसवीं सदी तक ऐसा नहीं किया। लैटिन अमेरिकी देशों की प्रारंभिक राजनीतिक मुक्ति का प्रभाव एक महत्वपूर्ण सौंदर्य और बौद्धिक आंदोलन के उद्भव पर पड़ा, जिसकी शुरुआत कानून और इंजीनियरिंग संकायों की स्थापना के साथ हुई, और साथ ही साहित्यिक और कलात्मक आंदोलन भी हुए, जिसने आधुनिकतावादी और राष्ट्रवादी आंदोलनों के साथ बीसवीं सदी में अधिक जोर पकड़ा।

सदी के पहले दशकों से महाद्वीप पर राष्ट्रीय समाजों के गठन पर चिंतन का इतिहास पहले से ही था, जब द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, लैटिन अमेरिकी अर्थशास्त्रियों का एक महत्वपूर्ण संघटन यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य चलना शुरू हुआ। वे इस उदारवादी थीसिस में विश्वास नहीं करते थे कि अंतरराष्ट्रीय मुक्त व्यापार केंद्र में विनिर्माण देशों और परिधि पर कच्चे माल का उत्पादन करने वाले देशों के मध्य समान व्यापार उत्पन्न करने में मदद करेगा। युद्ध के परिणाम के बाद यूरोप के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से मार्शल योजना की भव्यता से भी प्रभावित होकर, उन्होंने लैटिन अमेरिका के आधुनिकीकरण का लाभ उठाने के लिए राज्य नियोजन के बारे में सोचने के महत्व को समझा।

इस इतिहास में एक मील का पत्थर 1948 में सैंटियागो डे चिली में स्थित CEPAL (लैटिन अमेरिका और कैरिबियन के लिए आर्थिक आयोग) का गठन है। यह संस्था, जो विविध पृष्ठभूमि वाले सामाजिक वैज्ञानिकों, हालाँकि विशेष रूप से अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के क्षेत्रों में, के एक समूह का घर थी, इस बौद्धिक सर्किट में सबसे प्रमुख संदर्भ बिंदु थी, जो अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियों के प्रतिरोध के बावजूद विस्तारित हो रही थी। 1950 से 1980 के दशक तक CEPAL ने आधुनिकीकरण के मुख्य एजेंट के रूप में राज्य की भूमिका पर केंद्रित विकासवादी मॉडल को आकार देने में एक रणनीतिक भूमिका निभाई। इसके मुख्य सूत्रधारों में चिली के अर्थशास्त्री राउल प्रीबिश और ब्राजील के अर्थशास्त्री सेल्सो फर्टाडो थे।

> विचारों का परिसंचरण

हमारी पुस्तक का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में एक अभिनव सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य की मुक्ति में बुद्धिजीवियों और विचारों के परिसंचरण की क्षमता को दिखाना है, जो विशेष रूप से लैटिन अमेरिका में स्पष्ट था। वर्तमान में, सामाजिक विज्ञान तेजी से वैश्विक होते जा रहे हैं और इस बात की जागरूकता बढ़ रही है कि आधुनिक समाजों के लिए कोई एकल ऐतिहासिक प्रक्षेपवक्र नहीं है। इसलिए, वैश्विक ज्ञान के उत्पादन में परिधीय या अर्ध–परिधीय क्षेत्र में निर्भरता सिद्धांतों के इर्द–गिर्द उत्पन्न होने वाली समृद्ध और विविध बहस और सिद्धांत के क्षेत्र के गठन और प्रकटीकरण की जांच करना समकालीन इतिहास के उन पहलुओं को समझने में मदद करता है जो आमतौर पर दिखाई नहीं देते हैं। दक्षिण अमेरिका में विचारों, संस्थानों और मान्यता प्राप्त रचनात्मकता और स्वायत्तता वाले बुद्धिजीवियों के एक सर्किट का गठन सामाजिक विज्ञानों में ज्ञान उत्पादन की सामान्य छवियों को चुनौती देता है। वे श्रम के एक सरल विभाजन को दर्शाते हैं जिसमें वैश्विक दक्षिण सामाजिक परिवर्तन की महान प्रक्रियाओं पर डेटा एकत्र करता है और उत्तर उन्हें सिद्धांतित करता है, तथा अवधारणाओं और सिद्धांतों का भंडार तैयार करता है जो समाजों के स्वयं के ज्ञान का माप बन जाते हैं।

यह वास्तव में वर्चस्ववादी सिद्धांत के साथ टकराव में था कि लैटिन अमेरिकी बुद्धिजीवियों ने बीसवीं सदी के मध्य में स्वायत्त चिंतन के लिए परिस्थितियाँ पैदा कीं। एक ओर, यह इसे लैटिन अमेरिकी बौद्धिक इतिहास का हिस्सा बनाता है जिसकी अपनी समृद्धि और चिंतनशीलता का घनत्व है। इस क्षेत्र में विश्विद्यालय स्थापित करने के और वि–औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया की विशिष्ट विशेषताओं पर चिंतन करने और राष्ट्रीय समाजों, जिनके प्रतिपादकों में जोस मार्टी, जोस कार्लोस मारिया टेगुई, जुआन बाउटिस्टा

> >

अल्बर्डी, डोमिंगोस सरमिएंटो और जोए किमनाबुको जैसे कई अन्य लोग शामिल थे, को संगठित करने के स्थानीय अभिजात वर्ग के प्रयास उस इतिहास का एक लंबा हिस्सा हैं। दूसरी ओर, बीसवीं सदी के मध्य में इस क्षेत्र में उभरे विचारों के विशिष्ट सर्किट की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं।

विभिन्न राष्ट्रीय मूल, अनुशासनात्मक विशेषज्ञता और राजनीतिक प्रोफाइल वाले लैटिन अमेरिकी बुद्धिजीवियों का एक ही क्षेत्र में बहस में संगम महत्वपूर्ण था। इसने सम्बद्ध उत्पादन के एक बहुत ही मौलिक नेटवर्क बनाने में मदद की जो इस क्षेत्र के देशों में फैल गए। शायद यह पहली बार था कि लैटिन अमेरिका ने खुद को एक प्रासंगिक और मूल वैश्विक बौद्धिक केंद्र के रूप में स्थापित किया, जो अन्य बौद्धिक संदर्भों में अपने प्रभाव को पेश करने में सक्षम था। ये ऐसे मुद्दे हैं जो हमारी पुस्तक के कई अध्यायों में प्रमुखता से शामिल हैं, जो इस बात पर विस्तार से बताने का प्रयास करते हैं कि लैटिन अमेरिका में विचारों के इतिहास में बुद्धिजीवियों का परिसंचरण कैसे होता है।

इन रास्तों का पुनर्निर्माण हमें निर्भरता सिद्धांतों के उत्पादन के वास्तविक सामाजिक और सामूहिक आयामों और वैश्विक दक्षिण में विचारों के परिसंचरण के परिष्कार और जटिलता को समझने में मदद करता है। साथ ही, इसमें शामिल बुद्धिजीवियों ने ज्ञान उत्पादन के आधिपत्य केंद्रों के साथ संचार के निरंतर चौनल बनाए रखे, जो केवल क्षेत्रीय सर्किट से कहीं अधिक व्यापक सर्किट को कॉन्फिगर करते हैं। इसमें कई कारकों का योगदान रहा, जिसमें पाँच संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोगों में से एक के रूप में ब्च्।स् की स्थापना की गई, जिससे यह न केवल अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की प्रणाली का हिस्सा बन गया, बल्कि इस क्षेत्र में यूरोपीय और उत्तरी अमेरिकी बुद्धिजीवियों की उपस्थिति, लैटिन अमेरिकी समाजवैज्ञानिकों की विदेशी विश्वविद्यालयों में अध्ययन और शोध यात्राएँ, और अन्य संदर्भों में उनके काम का प्रकाशन और स्वागत भी शामिल है। ये अतिरिक्त विषय हैं जिन्हें हमारी पुस्तक के कई अध्यायों में पुनर्निर्मित किया गया है। ■

सभी पत्राचार
आंद्रे मैग्नेली को <prof.andremagnelli@gmail.com> पर
फेलिप मैया को <felipe.maia@ufjf.b> पर और
पाउलो हेनरिक मार्टिंस को <paulohenriquemar@gmail.com> पर प्रेषित करें।

ISA PUBLICATIONS

GLOBAL DIALOGUE

ISA International Sociological Association

https://globaldialogue.isa-sociology.org/

@isagdmag

www.isa-sociology.org